

પ્રસ્તાવના

જૈન શાસનના ગૂઢ તત્વોનું રહસ્ય સમજવાને ઘણા વિદ્વાનોને પળ કઠળ થઈ પડે છે. તેમજ જૈન શૈલીની ભાષા અને નેમાં આવતા પારિભાષિક શબ્દ સમુચ્ચ સમજવા વીજાઓને તો હું પણ જૈવીઓને પણ વહુ મુઠ્ઠકેલ પડે છે. માટે તેવા વિષયોનું સક્ષેપમાં જ્ઞાન મળી શકે ને તેનો ઉપયોગ જૈન શાસ્ત્રોનું આલોહન કરતી વેળા થાય એ અતી જરૂરનો વિષય છે. એમ જાણી આ ચોવીસ દંઢકનો વિષય સર્વાંગ પૂર્ણ પ્રાચીન ગ્રંથીના આધારથી પ્રગટ કરેલો છે, તેમજ ગુણસ્થાનકોનું સ્વરૂપ વતાવનારો વિષય પણ એમાં દાખલ કરેલો છે મુમુક્ષુ સાધુજનો તેમજ શ્રાવકોને આ ગ્રંથ અતિ ઉપયોગી થઈ પડશે એમ અમોને પૂર્વ ઓર્ગો છે.

પરમપૂજ્ય મુનિવર્ય શ્રી રાજવિજયજીનું ચાતુર્માસ શ્રી કલકત્તા યાત્રે થયેલું તે વેળા તેમના પવિત્ર ઉપદેશથી આમોએ સાધુઓને તેમજ ધાર્મિક શ્રાવકોને ખેટ આવવા સારું આ ગ્રંથ પ્રગટ કરેલો છે.

વાવુ અમોલકચંદ્રજી

चोवीस दंडक.

संसारी जीवो चार गतीने विषे २४
दंडकमां भमेछे ते चोवीस
दंडकोना नामो.

- | | |
|--------------------------|------------------------|
| १ सात नारकी मळीने १ दंडक | १८ तेंद्रीनुं दंडक |
| ११ दस भवनपतीना १० दंडक | १९ चोरेद्रिनुं दंडक |
| १२ पृथ्वीकायनुं दंडक | २० तिर्यच पंचेंद्रीनुं |
| १३ अप्पकायनुं दंडक | दंडक |
| १४ तेजकायनुं दंडक | २१ मनुष्यनुं दंडक |
| १५ वाजकायनुं दंडक | २२ बाणवंतरनुं दंडक |
| १६ वनस्पतीकायनुं दंडक | २३ ज्योतिपीनुं दंडक |
| १७ वेंद्रिनुं दंडक | २४ वैमानिकनुं दंडक |

आ चोवीस दंडकना दरेकना अनेक भेद
छे ते लखिये छीए.

सात नारकीनुं एक दंडक तेना भेदो.

नाम	गोत्र	नाम	गोत्र
१ धमा	रुद्रप्रभा	५ रिठा	धूमप्रभा
२ वंसा	वर्करानभा	६ मधा	तमःप्रभा
३ सेला	वालुकाप्रभा	७ माधवती	तमस्तमःप्रभा
४ अंजणा	पंकनभा	इति	

दस भवनपतीना १० दंडक

१ असुर कुमार निकाय	६ दिव्यकुमार निकाय
२ नाग कुमार निकाय	७ उदधि कुमार निकाय
३ सुवर्ण कुमार निकाय	८ दिशि कुमार निकाय
४ विद्युत्कुमार निकाय	९ पवनकुमार निकाय
५ अभिङ्गकुमार निकाय	१० स्तनिजकुमार निकाय

पृथ्वीकायना दंडकना ६ भेद

१ लुना २ सुधा ३ वालुया ४ मणसल ५ शकरा
 ६ शरपुढवी
 ए रीति पृथ्वीना नाम दद्या हवे तेहना भेद कहे छे.
 तेनी विगत

१ स्तुतिकरव	५ हिंगलो	९ सोनुं
२ मागिरत्न	६ हरताल	१० लुं
३ रत्ननी जाती	७ मणासिल	११ त्रांहुं
४ प्रवाल	८ पारो	१२ लोहुं

- १३ जस्वंत १९ पलेवोपाषाण २५ सुरमानी
 १४ शीसुं २० अम्रकनी जात जात
 १५ कथिल २१ तुरीमाटीनी जात २६ आंजण-
 १६ खडी माटी २२ पारानी जात नी जात
 १७ हिरगचीनीधानी २३ माटानी जात २७ लुणनी
 १८ अरणेटो वाषाण २४ पाषाणनी जात जात
 इत्यादी पृथ्वीकायना भेद असंख्याता जाणवा

तेरसुं अप्पकायनुं दंडक तेना भेद
कहे छे.

- १ जमीनतुं पाणी २ आकाशतुं पाणी ३ ठरतुं पाणी
 ४ हेमालातुं पाणी ५ रोणडातुं पाणी ६ नीलीवन-
 ७ माकतुं पाणी ८ घनोदधि स्पतीतुं पाणी
 ए रीते ए आदे दर्इने अप्पकायना भेद असंख्याता
 जाणवा.

चौदसुं तेउकायनुं दंडक तेन भेद
कहे छे.

- १ अंगारानो अग्नि ४ ऊल्कापातनो अग्नि
 २ ज्वालाने अग्नि ५ कणियानो अग्नि
 ३ मुरमुरनो अग्नि ६ दीजलिनो अग्नि
 ए रीते तेउकायना भेद असंख्याता जाणवा.

हवे पन्नरमुं वाउकायनुं दंडक तेना भेद
कहे छे.

- १ उपभ्रामक वायु ४ मंडलीक वायु ७ घनवात
२ मंदवायु ५ मुरदशुद्धवायु ८ तनवात
३ उत्कलितवायु ६ गुंजवायु

ए रीते वायुकायना दंडकवा भेद असंख्याता जाणवा
सोलमुं वनस्पतीकायनुं दंडक तेना भेद
कहे छे.

१ गुच्छा २ गुप्ता ३ बलया ४ वल्ली ५ पतिरग
ए रीते वनस्पतीकायना पांच नाम कक्षा. हवे एना
भेद कहे छे. ते वे भेद छे

१ एक साधारण वनस्पतीकाय तेना एक शरीरमां
अनंता जीव होय
२ बीजी प्रत्येक वनस्पतीकाय तेना एक शरीरमां ए-
क जीव होय

ए रीते वनस्पतीकायनुं दंडक तेना भेद असं-
ख्याता जाणवा.

सतरमुं बेद्रिनुं दंडक तेना भेद कहे छे.

- १ शंखना जीव ४ जलना जीव ७ मेरीना जीव
२ कौंठांना जीव ५ अलसीयाना जीव ८ कुमीना जीव
३ गंडालाना जीव ६ लारीया जीव ९ पुराना जीव

ए रीते ए आदे दईनें बेंद्रीना भेद अनेक जाणवा
अढारसुं तेंद्रीनुं दंडक तेना भेद

- | | | |
|------------|------------------|----------------|
| १ कानखजूरा | ७ ईल | १३ गोवरना कीडा |
| २ माकण | ८ घीमेल | १४ धनेडीया |
| ३ जूजं | ९ सावय | १५ कंथुआ |
| ४ कीडीओ | १० गोगीडा | १६ गोपालीक |
| ५ उडई | ११ गदहीया | १७ इंद्रगोप |
| ६ मंकोडा | १२ विष्टाना कीडा | |

ए रीते तेंद्री जीवना भेद अनेक जाणवा

ओगणीसमुं चोरंद्रीनुं दंडक तेना भेद

- | | | | |
|--------|------------|----------|------------|
| १ बीछी | ४ भमरी | ७ डांस | १० कंसारी |
| २ ढंकण | ५ तीड | ८ मछर | ११ कोईवाडा |
| ३ भमरा | ६ मास्त्री | ९ पतंगीआ | |

ए रीते चोरेंद्रीना अनेक भेद जाणवा.

वीसमुं तीर्यचनुं पंचेंद्री दंडक तेना भेद

- | | | | |
|--------------|--------|--------|-------------|
| १ जलचर | २ थलचर | ३ खेचर | ४ उरपरीसर्प |
| ५ भुजपरीसर्प | | | |

ए रीते तीर्यच पंचेंद्रीना नाम जाणवा . पण तेना वे
प्रकार छे ते कहे छे

१ एक समुर्द्धिम तिर्यच पंचेद्री ते मातापिताना संयोगविना उपजे छे

२ बीजा गर्भज तिर्यच पंचेद्री ते मातापिताना संयोगविना उपजे छे

ए रीते तिर्यच पंचेद्री जीवना वे भेद कक्षा

एकवीसमुं मनुष्यनुं दंडक तेना भेद

१५ पनरकर्मभूमी क्षेत्रना ५६ छपन अंतरद्वीप क्षेत्रना

३० त्रीस अकर्मभूमी क्षेत्रना ए रीते सरवे मलीने एकसोएक

क्षेत्रनेविषे मनुष्य उपजे छे तेना भेद छे तेनी विगत

१ एक समुर्द्धिम मनुष्य ते चौद स्थानके उपजे तेनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमो भाग होय अने अंतर्मु

हुत आलक्ष्य होय सात आठ प्राणना घणी होय वली चर्मचक्षुथी दीठामां आवे नहीं

२ बीजा गर्भज मनुष्य ते मातापिताना संयोगथी उपजे छे तेना दक्ष प्राण होय

ए रीते मनुष्यना दंडकना २ भेद कक्षा

बाविसमुं वांगवंतरनुं दंडक वे प्रकारनुं तेना भेद

१ पेहेली व्यंतरनी निकायना नाम कहे छे

- | | | |
|---------|------------|----------|
| ૧ પિશાચ | ૪ રાક્ષસ | ૭ મદારોગ |
| ૨ ભૂત | ૫ કિંનર | ૮ ગંધર્વ |
| ૩ યક્ષ | ૬ કિંપુરુષ | |

૫ રીતે પેહેલી નિકાયના નામ જાણવા

૨ વીજી વાળવીતરની નિકાયના નામ કહે છે.

૧ અળપનિ નિકાય ૪ ભૂતવાદી નિકાય ૭ કોહંડ નિકાય

૨ પળપનિ નિકાય ૫ કંદી નિકાય ૮ પતંગ નિકાય

૩ ઈસીવાદી નિકાય ૬ મદાકંદી નિકાય

॥ ૫ રીતે વાળવિંદરની નિકાયના ભેદ કહ્યા ॥

ત્રેવિસમું જોતપીનું દંડક તેના ભેદ

૧ ચંદ્ર ૨ સૂર્ય ૩ ગ્રહ ૪ નક્ષત્ર ૫ તારા

૫ રીતે પાંચ પ્રકારે જોતિષીનું દંડક તેના ભેદ કહ્યા

ચોવિસમું વૈમાનિકનું દંડક તેના ભેદ

વૈમાનીક પેવતાના વે ભેદ છે ૧ એક કલ્પ

૨ અને વીજા કલ્પાતીત

૧ કલ્પ પટ્ટે વારદેવ લોકવાલા તે આચારવાલા હોય

૨ કલ્પપ્રાતીત પટ્ટે નવગ્રંથેયક અને પાંચ અતુનર

વિમાનવાલા તે પોને સ્વાર્થી છે

૫ રીતે વૈમાનિકના વે ભેદ કહ્યા હવે તેના નામ વિ-

વરીને કહે છે

१ प्रथम कल्प एटले वारदेव लोक

१ सुधर्मा देवलोक

७ महाशुक्र देवलोक

२ ईशान्य देवलोक

८ सहसार देवलोक

३ सनत्कुमार देवलोक

९ आनत देवलोक

४ माहेन्द्र देवलोक

१० प्राणात देवलोक

५ ब्रह्म देवलोक

११ आरण देवलोक

६ लांतक देवलोक

१२ अच्युत देवलोक

ए रीते वार देवलोकना नाम कहा हवे बीजा कल्पा-
तीतना नाम कहे छे तेना बे भेद छे १ एक न-
वग्रैवेयकना देवता २ बीजा पांच अनुत्तर विमान-
ना देवता

१ हवे प्रथम नवग्रैवेयकना नव नाम

१ सुदर्शन

४ सर्वमद्र

७ सुमणुस

२ सुप्रतिवर्ध

५ विशाल

८ भियंकर

३ मनोरम

६ सुमनस

९ आदित्य

ए रीते नवग्रैवेयकना नव नाम जाणवा

२ बीजा पांच अनुत्तर वैमानिक देवताना पांच भेद

१ विजय

३ जयंत

सर्वार्थ सिद्ध

२ विजयंत

४ अपराजित

ए रीते कल्पातीतना २ भेद कहा

ए रीते वैमानिक देवतानुं दंडक तेना भेद जाणवा.

इति श्री चोवीस दंडकना भेद संपूर्ण

पात्रीस द्वारना नाम

१ सरीरद्वार	१८ पर्याप्ति द्वार
२ अवगाहना द्वार	१९ ढिगाहार द्वार
३ योगद्वार	२० सज्जिद्वार
४ संज्ञाद्वार	२१ गतिद्वार
५ संस्थाद्वार	२२ अगतिद्वार
६ कपायद्वार	२३ वेदद्वार
७ लेण्याद्वार	२४ अल्पावकुत्त्व द्वार
८ इन्द्रियद्वार	२५ भवनद्वार
९ समुद्धान्तद्वार	२६ विहकालद्वार
१० वृष्टिद्वार	२७ गुणत जा द्वार
११ दर्शनद्वार	२८ प्राणद्वार
१२ ज्ञानद्वार	२९ सयतिद्वार
१३ योगद्वार	३० आहारद्वार
१४ उपयोगद्वार	३१ आहार जातीनुं द्वार
१५ उपपातद्वार	३२ आहार इच्छानु द्वार
१६ चवनद्वार	३३ कायास्थितिनु द्वार
१७ स्थितिद्वार	३४ योनिद्वार
	३५ कुलकोडोनुं द्वार

ए गति पात्रीस द्वारना नाम कथा

एकेक द्दारनो चौबीस दंडकसायें खुलासो

प्रथम शरीरद्वारना पांच भेद छे

१ उदारीक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आहारक शरीर
४ तेजःशरीर ५ कर्मण शरीर

एकेक दंडकना केटला शरीर छे ते

१ वैक्रिय शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर
दस भवनपतीना दस दंडकने त्रण शरीर होय

१ वैक्रिय शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर
पृथ्विकायना दंडकने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर
अप्यकायना दंडकने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर
तेजकायना दंडकने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर
वायुकायना दंडकने चार शरीर होय

१ उदारीक २ वैक्रिय ३ तेजस् ४ कर्मण शरीर
वनस्पतीकायना दंडकने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर
वैद्री दंडकने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर
तेंद्री दंडकने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर
चौरेंद्री दंडकने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर
तिर्यच पंचेद्री दंडकना शरीरना वे भेद छे

१ प्रथम एक समुच्छिमतिर्यच पंचेद्रीतेने त्रण शरीर छे

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर

२ बीजा गर्भज तिर्यच पंचेद्रीने चार शरीर होय

१ उदारीक शरीर ३ तेजःशरीर

२ वैक्रीय शरीर ४ कर्मण शरीर

ए रीते तिर्यच पंचेद्री दंडकनो शरीर वे प्रकारनो वे
भेद छे.

मनुष्य दंडकना शरीर वे प्रकारना छे

१ प्रथम समुच्छिम मनुष्यने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर

२ बीजा गर्भज मनुष्य तेने पांच शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ वैक्रीय शरीर ३ आहारक शरीर

४ तेजःशरीर ५ कर्मण शरीर

ए रीते मनुष्य दंडकना शरीरना भेद छे.

व्यंतर देवताना दंडकने तीन शरीर होय

१ वैक्रीय शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर

जोतिषी देवताना दंडकने त्रण शरीर होय

१ वैक्रीय शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर

वैमानिक देवताना दंडकने त्रण शरीर होय

१ वैक्रीय शरीर २ तेजःशरीर ३ कर्मण शरीर

इति हेतुं शरीरव्दार संपूर्ण.

અથ વીજું અવગાહનાદ્વાર લિખ્યતે

પ્રથમ સાત નારકી મલીને એક ટંકને અવગાહના પ્રથમ ઉપજતાં અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ અને ભવધારણીકજઘન્ય ધનુષ્ય ૭૥૥ અંગુલ ૬ અને ઝટકુદ્ધો ૬૦૦ ધનુષ્યનો જાણવો અને નવો વૈક્રીય શરીર તેથી વમણો જાણવો હવે તેની વિસ્તારે કરી વિગત નરકના નામ ભવધારણીદેહમાન નવોવૈક્રીયદેહમાન

	ધનુષ્ય	અંગુલા	ધનુષ્ય	અંગુલા
૧ હેલી ૭૥૥	૬	૧૬૥	૧૨	
૨ વીજી ૧૫૥	૧૨	૩૧	..	
૩ ત્રીજી ૩૧	.	૬૨૥	..	
૪ ચોથી ૬૨૥		૧૨૫	...	
૫ પાંચમી ૧૨૫	.	૨૫૦		
૬ છઠી ૨૫૦	..	૫૦૦		
૭ સાતમી ૫૦૦	.	૧૦૦૦		

સાત નરકના ભવધારણીદેહમાન ઝટકુદ્ધ વૈક્રીયદેહમાન એ રીતે સાત નરકનું દેહમાન કહ્યા
સાત નરકનેવિષે ઓગળયલાસ પાચડા છે તેમાં એકેક નરકનેવિષે જૂઠાજૂઠા પાચડા છે તેમાંથી એકેક પાચડાનેવિષે નરકના જીવોના ગરીરના ઇંચપણાના ચંત્ર વિવરીને લખીએ છીએ.

१ प्रथम खण्डभा नरकनेविषे १३ पायडा छे तेना दे-
हमाननु यंत्र लिख्यते

पायडा	धनुष्य	हाथ	अगुल
१	०	३	०
२	१	१	८॥
३	१	३	१७
४	२	२	१॥
५	३	०	१०
६	३	२	१८॥
७	४	१	३
८	४	३	११॥
९	५	१	२०
१०	६	०	४॥
११	६	२	१३
१२	७	०	२१॥
१३	७	३	६

२ बीजी शक्रप्रभा नरकना ११ पाथडा छे तेना देह-
माननुं थंन लिख्यते.

पाथडा धनुष्य हाथ अंगुल

१	७	३	६
२	८	२	९
३	९	१	१२
४	१०	०	१५
५	१०	३	१८
६	११	२	२१
७	१२	१	०
८	१३	१	३
९	१४	०	६
१०	१४	३	९
११	१५	२	१२

३ वालुकाप्रभा नरकना ९ पायडा छे तेना देहमान
नुं यंत्र लिख्यते

पायडा धनुष्य हाथ अंगुल

१	१६	२	१२
२	१७	२	७॥
३	१९	२	३
४	२१	१	२२॥
५	२३	१	१८
६	२५	१	१३॥
७	२७	१	९
८	२९	१	४॥
९	३१	१	०

૪ ચોંથી પંકપ્રભા નરકના ૭ પાથડા છે તેના વેદમાન

હું: યત્ર લિખ્યતે

પાથડા	વસ્તુવ્ય	હાથ	અંગુલ
૧	૩૧	૧	૦
૨	૩૬	૧	૨૦
૩	૪૧	૨	૧૬
૪	૪૪	૩	૧૨
૫	૫૨	૦	૮
૬	૫૭	૧	૪
૭	૬૨	૨	૦

૬ પાંચમી ધૂમપ્રભા નરકના ૬ પાથડા છે તેના દેહ-
માનનું યંત્ર

પાથડા ધનુષ્ય હાથ અંગુલ

૧ પેલા	૬૨	૨	૦
૨ બીજા	૭૮	૦	૧૨
૩ ત્રીજા	૯૩	૩	૦
૪ ચોથા	૧૦૯	૧	૧૨
૬ પાંચમા	૧૨૫	૦	૦

૬ ઠી તમપ્રભા નરકના ૩ પાથડા છે તેનું યંત્ર
પાથડા ધનુષ્ય

૧	૧૨૬
૨	૧૮૭
૩	૨૬૦

૭ તમ સ્તમપ્રયાનો ૧ પાથડો તેનું યંત્ર
પાથડા ધનુષ્ય

૧	૬૦૦
---	-----

૯ રીતે સાત નરકનેવિષે ઓગળાવવાસ પાથડા છે તેનું
દેહમાન જુદું જુદું છે.

હવે દશ પ્રકારના ભવનપતીના દશ દંડકને અવગાહના. પ્રથમ ઉપજતાં વચ્ચે અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ. અને ઉત્કૃષ્ટ હાથ ૭ તું અને ઉત્તર વૈક્રિય કરે તો એકલાચ્ચ યોજન થાય. એ રીતે ભવનપતીની અવગાહના કહી.

હવે પૃથ્વીકાયતું જઘન્ય તથા ઉત્કૃષ્ટ દેહમાન અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ. હવે અપ્પકાયતું જઘન્ય તથા ઉત્કૃષ્ટ દેહમાન અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ હવે તે-
 ઉકાયતું જઘન્ય તથા ઉત્કૃષ્ટ દેહમાન અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ હવે વાહકાયતું જઘન્ય તથા ઉત્કૃષ્ટ દેહમાન અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ

હવે વનસ્પતિકાયના દેહમાનના બે ભેદ છે તે કહે છે
 ૧ જઘન્ય અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ. ૨ ઉત્કૃષ્ટ એકહજાર યોજન અધિક

હવે વેદ્રીનો દેહમાન તેના ભેદ છે તે કહે છે.

૧ જઘન્ય અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ. ૨ અને ઉત્કૃષ્ટ છ વાર યોજન

હવે તેંદ્રીનો જઘન્ય અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ. અને ઉત્કૃષ્ટ ત્રણ ગાઝનું.

હવે ચૌંદ્રીનું જઘન્ય અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ ગાઝ ચારનો.

હવે તિર્યંચ પંચેંદ્રી જઘન્ય અંગુલનું અસંખ્યાતમો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ એકહજાર યોજન તેની વિગત વિવરીને

લલ્લી છે.

૧ હવે એક ગર્ભજ તિર્યંચ પંચેદ્રીનો દેહમાનની વીગત છે.

૧ જલચરનું એકહજાર યોજનનું છે.

૨ સ્થલચરનું ગાઝ ૬ તું

૩ સ્થેચરનું ધનુષ્ય પૃથક

૪ ઊપરી સર્પનું ૧ હજાર યોજન

૫ ઘ્રુજપરી સર્પનું ગાઝ પૃથક

એ રીતે ગર્ભજનું દેહમાન અને ઉત્તર વૈક્રિય શરીર કરેતો નવગો યોજન

૨ હવે વીજી સમૂર્ણિમ તિર્યંચ પંચેદ્રીના દેહમાનની વિગત .

૧ જલચર એકહજાર યોજન

૨ સ્થલચર ગાઝ પૃથક

૩ સ્થેચર ધનુષ્ય પૃથક

૪ ઊપરીસર્પ યોજન પૃથક

૫ ઘ્રુજપરીસર્પનું ગાઝ પૃથક

એ રીતે તે પ્રકારે તિર્યંચ પંચેદ્રીના દેહમાન ઉત્કૃષ્ટ હવે મનુષ્યનું શરીર જઘન્ય અંગુલના અસંખ્યાતમો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ ૩ ગાઝનું તેની વિગત છે.

૧ દેવકુર અને ઉત્તરકુર ક્ષેત્રના ઝુગલીઆની અવગાહના ૩ ગાઝની

૨ હરીવર્ષ ક્ષેત્ર અને રમ્યક ક્ષેત્રના જુગલીઆની
અવગાહના ૨ ગાઝની

૩ હેમવંતક્ષેત્ર અને ઐરણ્યવતક્ષેત્રના જુગલીઆનું
દેહમાન ૧ ગાઝ

૪ છપંજ અંતરદ્વીપક્ષેત્રના જુગલીઆનું દેહમાન
૮૦૦ ધનુષ્ય

૫ પાંચ મહા વિદેહક્ષેત્રના મનુષ્યનું દેહમાન ૫૦૦
ધનુષ્ય

૬ હવે પાંચ ભરત. તથા પાંચ ઐરાવતક્ષેત્રના મનુ-
ષ્યનો દેહમાન છે આંચ પ્રમાણે જાણવી તેની વિગત

૧ પેલેઆરે ગાઝ ૩

૨ વીજેઆરે ગાઝ ૨

૩ ત્રીજેઆરે ગાઝ ૧ પળ ઉતરતું ધનુષ્ય ૫૦૦

૪ ચોથેઆરે ધનુષ્ય ૫૦૦ પળ ઉતરતું હાથ ૭

૫ પાંચમેઆરે હાથ ૭ નું પળ ઉતરતું હાથ

૧ નું

૬ છટેઆરે હાથ ૧ નું પળ ઉતરતું હાથ ૧ નું

માટેહું.

એ રીતે ક્ષેત્ર વેનો કાલસરખો વર્તે. એટલે દે-
હમાન પળ સરખું જાણવું.

એ રીતે મનુષ્ય ગર્ભજનું કહ્યું. અને ઉત્તર વૈક્રિય કરે
તો એકલાલ યોજન અધિક ચાર અંગુલાનું જાણવું
અને સમુદ્ધિમ મનુષ્યની અવગાહના જઘન્ય ઉત્કૃષ્ટી

અંગુલનો અસંખ્યાતમો માગ જાણવો.

હવે વાળવિંતગું દેહમાન જઘન્ય આવી ડપજેને અ-

ગુલનો અસંખ્યાતમો માગ અને ઉત્કૃષ્ટ ૭ હાથનું અને

ઉત્તર વૈક્રિય જઘન્ય અગુલનો સંખ્યાતમો માગ ઉત્ક-

ષ્ટ એકલાચ યોજન

હવે જોતિપી દેવતાનું દેહમાન જઘન્ય તથા ઉત્કૃષ્ટ વિ-

તરની પેરે જાણવું.

હવે વૈમાનિક દેવતાનું દેહમાન જઘન્ય ડપજતાં જઘન્ય

ડપજતાં વચ્ચે અંગુલનો અસંખ્યાતમો માગ અને ઉત્ક-

ષ્ટ દેહમાન તેની વિગત લલ્લી છે

૧ સૌધર્મ દેવલોક અને રૂઝગાન દેવલોકે દેહમાન

હાથ ૭ નું

૨ સનત્કુમાર દેવલોક અને માહેદ્ર દેવલોકે દેહ-

માન હાથ ૬ નું

૩ વ્રહ્મ દેવલોક અને લાંતક દેવલોકે દેહમાન

હાથ ૫ નું

૪ મહાશુક્ર દેવલોક અને સહસાર દેવલોકે દેહ-

માન હાથ ૪ નું

૫ નવમા દેવલોકથી બારમા દેવલોકસુધી દેહમાન

હાથ ૩ નું

૬ નવપ્રવૈયકનું દેહમાન હાથ ૨ નું

૭ ચાર અગ્રિય વિમાને દેહમાન હાથ ૧ નું

૮ પાંચનું સર્વાર્થસિદ્ધે દેહમાન એક હાથ યોટેરું

वैक्रीय काता नम्य अगुलना संख्यातमा भाग इत्तु-
ष्ट १ लाय याजनसुधी ते वैक्रीय १२ देवलाकसुधी
करे उपरांत न करे

ए रीते वैमानिक देवतानी देहनी अवगाहना कही
हवे वैमानिक देवतानुं जनुं जेतला सागरोपमनुं
आउनुं छे तउला सागरोपम उपर शरीरना प्रमाण-
नो यंत्र लखीए छीए. तेनी विगत

सागरो पमनुं आउनुं	हाथनुं प्रमाण	हाथना भाग उपरे	छेदाका एक हाथ ना भाग
१	७	•	११
२	७	•	११
३	६	४	११
४	६	३	११
५	६	२	११
६	६	१	११
७	६	०	११
८	५	६	११

સાગરો પમનુ આગ્નું	હાથનુ પ્રમાણ	હાથના ભાગ વપરં	છંદાકા એક હાથ ના ભાગ
૧	૬	૫	૧૧
૧૦	૬	૪	૧૧
૧૧	૬	૩	૧૧
૧૨	૬	૨	૧૧
૧૩	૬	૧	૧૧
૧૪	૬	૦	૧૧
૧૫	૪	૫	૧૧
૧૬	૪	૪	૧૧
૧૭	૪	૩	૧૧
૧૮	૪	૦	૧૧
૧૯	૩	૩	૧૧
૨૦	૩	૨	૧૧
૨૧	૩	૧	૧૧

सागरों पमनुं आउछुं	हाथनु प्रमाण	हाथना भाग उपरे	छेदाका एक हाथ ना भाग
२२	३	०	११
२३	३	०	११
२४	२	७	११
२५	२	६	११
२६	२	५	११
२७	२	४	११
२८	२	३	११
२९	२	२	११
३०	२	१	११
३१	२	०	११
३२	१	१	११
३३	१	०	११

ए रीते वैमानिक देवताना शरीरनां मान विवरीने क०
इति बीजो अवगाहनाद्वार संपूर्ण

३ हवे त्रिजुं संघयणद्वार लिख्यते

हवे प्रथम संघयण ६ ना नाम लखीए छीए.

१ वज्रऋषभ नाराच संघयण ४ अर्धनाराच संघयण

२ ऋषभ नाराच संघयण ५ कीलिक संघयण

३ नाराच संघयण ६ छेवटुं संघयण

ए रीते छ संघयणना नाम कब्ला हव चोबीस दंडक माहेथी एकेक दंडकने संघयण कह छे तेनी विगत प्रथम सात नारकीना दंडकने संघयण न होथ तेने असंघयणी कहीए

दश प्रकारें दश भवनपति देवताना दस दंडकने संघयण न होथ ते असंघयणी

पृथ्वीकायना दंडकने एक छेवटुं संघयण होथ

अप्पकायना दंडकने एक छेवटु संघयण होथ

तेऊकायना दंडकने एक छेवटुं संघयण होथ

वाऊकायना दंडकने एक छेवटु संघयण होथ

वनस्पतिदाय दंडकने एक छेवटु संघयण होथ

वेद्री दंडकने एक छेवटु संघयण होथ

तेंद्री दंडकने एक छेवटु संघयण होथ

चोरेंद्री दंडकने एक छेवटु संघयण होथ

तिर्यच पंचेंद्री दंडकना २ भेद छे तेनी विगत छे

१ समुछिम तिर्यचपंचेंद्रीने एक छेवटु संघयण होथ

२ बीजा गर्भजतिर्यच पंचेंद्रीने ६ संघयण होथ

मनुष्यपंचेंद्री दंडकना २ भेद छे तेनी विगत

- ૧ સમુછિમને ૧ હેવડું હોય
 ૨ ગર્ભજને ૬ સંઘયણ હાંય
 ૩ યંતર દેવતાને સંઘયણ ન હોય તેને અસંઘયણી
 ૪ દેવતાને સંઘયણ ન હોય તેને અસંઘયણી
 ૫ નિક દેવતાને સંઘયણ ન હોય તેને અસંઘયણી
 ૬ ઘોલે ઘોલિ દંડકના વિશે સંઘયણ કહ્યા
 ૭ સંઘયણવાલા જીવોની વે ગતી છે તે વિભારીને
 ૮ છીંચ. જે કે આ સંઘેણવાલો જીવે કઈ ગતી-
 ૯ જાય તેનો વિગત લૂલીએ છીંચ
 ૧૦ ૧ એક ઝર્વગતિ ૨ ત્રીજી અધોગતિ
 ૧૧ રીતે તે ગતિ કહી
 ૧૨ એ દેવ પ્રથમ ઝર્વગતિના ભેદ કહે છે.
 ૧૩ ૧ પ્રથમ ઝર્વગતિ જવાના સંઘયણ છની વિગત
 ૧૪ કહે છે
 ૧૫ ૧ વજ્રકુષ્મ નારાચ સંઘયણવાલો ઘોસલગે જાય
 ૧૬ ૨ કુલમ નારાચ સંઘયણવાલો નવગ્રૈવેયકલમે જાય
 ૧૭ ૩ નારાચ સંઘયણવાલો દગમા દેવલોકસુધી જાય
 ૧૮ ઘર્યાંત ન જાય
 ૧૯ ૪ ગર્ધનરાય સંઘયણવાલો આઠમા દેવલોકસુધી
 ૨૦ ઘર્યાંત ન જાય

५ केलिक संघयणवालो छटा देवलोकसुधी जाय उपरांत न जाय

६ छेवटा संघयणवालो चोथा देवलोकसुधी जाय उपरांत न जाय

ए रीते ऊर्ध्वगति जावाना संघयण कछा

२ हवे अधोगति जावाना संघयण छनी विगत कहे छे

१ वज्ररूपभ नाराच संघयणवालो सातमी नरकलगे जाय

२ रूपभ नाराच संघयणवालो उठी नरकलगे जाय

३ नाराच संघयणवालो पादमी नरकलगे जाय

४ अर्धनाराच संघयणवालो बोधी नरकलगे जाय

५ केलिक संघयणवालो बीजी नरकलगे जाय उपरांत न जाय

६ छेवटा संघयणवालो बीजी नरकलगे जाय उपरांत न जाय

ए रीते ६ संघयणनी अधोगति कही.

इति श्री बीजुं संघयणद्वार संपूर्ण.

४ हवे चोथुं संज्ञाद्वार तिख्यते.

हवे दशप्रकारे संज्ञाद्वार तेना भेद लखिए छीए

१ आहारसंज्ञा २ भयसंज्ञा ३ मेशुनसंज्ञा

- ૪ પરિગ્રહસંજ્ઞા ૫ ક્રોધસંજ્ઞા ૬ માનસંજ્ઞા
 ૭ માયાસંજ્ઞા ૮ લોભસંજ્ઞા ૯ લોકસંજ્ઞા
 ૧૦ ઓઘસંજ્ઞા

ए रीते दश संज्ञाना नाम कक्षा.

पांच थावरने पण दश संज्ञा होय. तथा बीजी संज्ञा
 ६ ना नाम लिख्यते.

- ૧ સુખમંજ્ઞા ૨ દુઃખસંજ્ઞા ૩ મોહમંજ્ઞા
 ૪ દુગંછામંજ્ઞા ૫ શોકસંજ્ઞા ૬ ધર્મમંજ્ઞા

ए रीते छ संज्ञा बीजी कही अने दस संज्ञा प्रथमनी
 एटले सोल संज्ञा थई. बाकी बीजा दंडकने दश प्र-
 थमनी पण होय. अथवा सोल पण होय
 इति श्री चौथुं संज्ञाद्वार संपूर्ण.

अथ पांचमुं संस्थानद्वार लिख्यते

हवे प्रथम संस्थानना छ भेद छे. तेना नाम लिख्यते

- ૧ સમચતુરસ્ર સંસ્થાન ૪ કુબ્જ સંસ્થાન
 ૨ નગાહપરિમંડલ સંસ્થાન ૫ વામન સંસ્થાન
 ૩ સાદિ સંસ્થાન ૬ હુંડ સંસ્થાન

ए रीते छ संस्थानना नाम कक्षा हवे एकेक दंडक-
 नेविषे केटला केटला संस्थान होय तेनी विगत लखि-
 ए छीए.

प्रथम सात नारकीना दंडकने हुंड संस्थान होय.

દશ પ્રકારે ભવનપતિના દશ દંડકને સમચતુરસ સં-
સ્થાન હોય

પૃથ્વીકાયને હુંડ સંસ્થાન ઇટલે મસૂરનો આકાર
અપ્પકાયને હુંડ સંસ્થાન ઇટલે પાળોના પરફોદાનો
આકાર

તેલકાયને હુંડ સંસ્થાન ઇટલે સોયનો અણિનો આકાર
વાઝકાયને હુંડ સંસ્થાન ઇટલે ધ્વજા પતાકાનો આકાર
વનસ્પતિકાયને હુંડ સંસ્થાન ઇટલે નાનાવિધ પ્રકાર-
નો આકાર

દંદ્રીને એક હુંડ સંસ્થાન જાળવો
તંદ્રીના દંડકને હુંડ સંસ્થાન જાળવો
પોરંદ્રીના દંડકને હુંડ સંસ્થાન જાળવો
તીર્યંચ પંચેંદ્રીના બે પ્રકાર છે. તેની વિગત

૧ સમુદ્ધિમ તીર્યંચ પંચેંદ્રીને હુંડ સંસ્થાન જાળવો

૨ ગર્ભજ તીર્યંચ પંચેંદ્રીને છ સંસ્થાન હોય.

મનુષ્ય દંડકના બે ભેદ છે. તેની વિગત

૧ સમુદ્ધિમ મનુષ્યને એક હુંડ સંસ્થાન હોય

૨ ગર્ભજ મનુષ્યને છ સંસ્થાન હોય

વિંતર દેવતાને એક સમચતુરસ સંસ્થાન હોય

વ્યોતિષી દેવતાને એક સમચતુરસ સંસ્થાન હોય

વૈમાનિક દેવતાને એક સમચતુરસ સંસ્થાન હોય

અર્થેતિ દોઢિસ દંડકના સંસ્થાન કહ્યા. હવે પાંચ દં-
દ્રીના સંસ્થાન કહે છે.

- १ मपरस इत्रीना नाना प्रकारना संस्थान छे
 २ रम इत्रीनो खोरप जरिसा संस्थान छ
 ३ प्रागेंद्रीना अचता वृक्षना फुलसरिखा संस्थान छे
 ४ चभु इत्रीनो मसुरचंदनो आधार छे
 ५ श्रेणेंद्रीना फल्यवृक्षना फुलसरिखो आधार छे
 ६ एते पाच इत्रीना संस्थान फह्या
 इति पाचयु संस्थानद्वार संपूर्ण.

६ अथ छठो कषायद्वार लिख्यते.

इवे कषायना चार भेद छे ते कहे छे.

- १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ
 ए रीते ४ भेद केवलीना जीव हुक्रीने वाक्की चांवीस
 दंडकना सखे जीवोने चार कषाय जाणवा. एट-
 ल कायषद्वार समाप्त थयो

इति छठु कषायद्वार संपूर्ण.

अथ सातमं लेस्याद्वार लिख्यते.

इवे ते लेस्या छ प्रकारनी छे तेना नाम लिख्यते

- १ कृष्णलेस्या ३ कापोतलेस्या ५ पत्रलेस्या
 २ नीललेस्या ४ तेजोलस्या ६ शुक्ललेस्या

૧ રીતે છ લેસ્યાના નામ કહ્યા

હવે એકેક વંદકને વિષે કેટલી કેટલી લેસ્યા હોય તે-
ની વિગત નીચે લખીએ છીએ

સાત નારકીનો એક વંદક તેને ૩ પેલી લેસ્યા હોય
તેની વિગત

૧ પંચી નરકે કાપોતલેસ્યા

૨ વીજી નરકે કાપોતલેસ્યા

૩ ત્રીજી નરકે કાપોત ઘળી ને નીલ થોડી

૪ ચાંચી નરકે નીલલેસ્યા

૫ પાંચમી નરકે નીલ ઘળી અને કુળ્ળ થોડી

૬ છઠી નરકે કુળ્ળલેસ્યા

૭ મી નરકે મહાકુળ્ળલેસ્યા

૧ રીતે સાત નારકીને વિષે લેસ્યા કહી.

દશ ભવનપતિના વગ વંદકને ૪ લેસ્યા હોય તેની
વિગત છે

૧ કુળ્ળલેસ્યા

૨ નીલલેસ્યા

૩ કાપોતલેસ્યા

૪ તંજાલેસ્યા

પૃથ્વીકાયના વંદકને ૪ લેસ્યા પેલી અપર્યાપ્તીને હોય
અને પર્યાપ્તીને ૩ ત્રણ લેસ્યા હોય

અગ્નિકાય અપર્યાપ્તીને પેલી ૪ લેસ્યા હોય અને પર્યા-
પ્તીને ૩ લેસ્યા જાણવી

તેજકાયને પેલી ત્રણ લેસ્યા

૧ કુળ્ળલેસ્યા ૨ નીલલેસ્યા ૩ કાપોતલેસ્યા

વાજ્ઞકાયને પેલી ૩ હેસ્યા

૧ કૃષ્ણહેસ્યા ૨ નીલહેસ્યા ૩ કાપોતહેસ્યા
વનસ્પતિકાયને પેલી ૪ હેસ્યા

કૃષ્ણહેસ્યા

નીલહેસ્યા

કાપોતહેસ્યા

તેજોહેસ્યા

૧ ચાર અપર્યાસીને જાળવી પણ પર્યાસીને પેલી ૩
હેસ્યા હોય

વૈદ્રીને પેલી ૩ હેસ્યા હોય

૧ કૃષ્ણહેસ્યા ૨ નીલહેસ્યા ૩ કાપોતહેસ્યા
તૈદ્રીને પેલી ૩ હેસ્યા હોય

૧ કૃષ્ણહેસ્યા ૨ નીલહેસ્યા ૩ કાપોતહેસ્યા
ચોરૈદ્રીને પેલી ત્રણ હેસ્યા હોય

૧ કૃષ્ણહેસ્યા ૨ નીલહેસ્યા ૩ કાપોતહેસ્યા
તીર્થંચ પચેદ્રીમાં ૬ હેસ્યા ગર્ભજને હોય અને સમુ-
દ્ધિમને પેલી ૩ હેસ્યા

મનુષ્ય પચેદ્રીમાં ગર્ભજને ૬ હેસ્યા હોય અને સમુ-
દ્ધિમ મનુષ્યને પેલી ૩ હેસ્યા

વાણવિતર દેવતાને પેલી ૪ હેસ્યા હોય

જ્યોતિષી દેવતાને ૧ તેજોહેસ્યા હોય

વૈમાનિક દેવતાને ત્રણ હોય

૧ પદ્મહેસ્યા ૨ તેજોહેસ્યા ૩ શુક્લહેસ્યા તેની
વિગત

૧ પેલા સુધર્મા દેવલોક અને શિશુ દેવલોકને

૧ જેજોલસ્યા હોય

૨ સનત્કુમાર માહેદ્ર ને બ્રહ્મદેવલોકે એ તળ દેવ-
લોકે ૧ પદ્મલેસ્યા હોય એ ઉપરાંત દેવલોક ૭ અને
નવગ્રંથેયક તથા પાંચ અનુત્તર વિમાન ઘટલાને એક
શુક્લલેસ્યા હોય

એ રીતે વૈમાનિક દેવતાની લેસ્યા હોય
એ રીતે ચોવીસ દંડકનેવિષે લેસ્યાદ્વાર કહ્યો.
इति श्री सातसुं लेस्याद्वार संपूर्ण

अथ आठसुं इंद्रीद्वार लिख्यते.

इंद्रो पांच प्रकारनी तेना नाम नीचे लखी देखाडे छे

૧ સ્પર્શદ્રી ૨ રસદ્રી ૩ ગ્રાણદ્રી

૪ ચક્ષુરિદ્રી ૫ શ્રોત્રદ્રી

એ રીતે પાંચ ઇંદ્રીના નામ કહ્યા.

તે એકે દંડકનેવિષે કેટલી કેટલી ઇંદ્રી હોય તેની
વિગત લખી દેખાડી છે.

સાત નારકીને પાંચ ઇંદ્રી હોય

દશ પ્રકારે શુવનપતિના દશ દંડકનેવિષે પાંચ ઇંદ્રી
હોય

પૃથ્વીકાયના દંડકનેવિષે એક સ્પર્શદ્રી હોય

અપ્પકાયના દંડકનેવિષે એક સ્પર્શદ્રી હોય

તેજકાયના દંડકનેવિષે એક સ્પર્શદ્રી હોય

वाजकायना दंडकनेविषे एक स्पशेंद्री होय
वनस्पतिकायना दंडकनेविषे एक स्पशेंद्री होय
वेइंद्रीना दंडकनेविषे वे इंद्रीय होय

१ स्पशेंद्री २ रसेंद्री

तेंद्रीना दंडकनेविषे त्रण इंद्री होय

१ स्पशेंद्री २ रसेंद्री ३ घ्राणेंद्री

चोरेंद्रीना दंडकनेविषे चार इंद्री होय

१ स्पशेंद्री २ रसेंद्री ३ घ्राणेंद्री ४ चक्षुरिंद्री

तिर्यच पंचेंद्रीना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय

मनुष्य पंचेंद्रीना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय

बाणवितरना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय

ज्योतिपी देवताना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय

वैमानिक देवताना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय

ए रीते चोवीस दंडकनेविषे इंद्रीद्वार कहा

इति आठमुं इंद्रीद्वार संपूर्ण

अथ नवमुं समुद्धातद्वार लिख्यते.

सात समुद्धात कहीए छीए.

१ वंदना समुद्धात

५ तेजस समुद्धात

२ कषाय समुद्धात

६ आहार समुद्धात

३ मरण समुद्धात

७ केवली समुद्धात

४ वैक्रिय समुद्धात

૧ રીતે સાત સમુદ્ધાતના નામ કહ્યા.

૧ એક સમુદ્ધાતનો અર્થ સંભેષ કરીને લઘી ૧ છી ૧ તેની વિગત છે.

૧ પેદલી વેદના સમુદ્ધાત તે વેદના ૧ પરિણિત જીવ ઘણા વેદની કર્મ પ્રદેશ ઘણે કાલે કરી વેદના યોગ્ય હદીરણા કરણસુ આકર્ષી હદ-યાવલીકામાહે ઘાલે નિર્જેરે તેહને વેદના સમુદ્ધાત કહી ૧.

૨ વીજો કષાય સમુદ્ધાત તે હવે અંતર સુહર્ત પ્રમાણ તિહા વર્તતો જીવ, વેદના ૧ પદ્યો આપના જીવ પ્રદેશ અનંતા કષાયે પદ્યો જીવ હદીરણા ૧ કરી કષાય પુદ્ગલ રસ સ્વપાદે વેદના સમુદ્ધાતની પરે છે ૧ કષાય સમુદ્ધાત કહી ૧.

૩ ત્રીજો મરણ સમુદ્ધાત અંતર સુહર્ત મરણ સમયે આયુ કર્મ પુદ્ગલ શાટક નિમિત્તે ૧ આપના શરીરપણે ૧ જાહું લાવું જઘન્ય અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ અને ઉત્કુષ્ઠો અસંખ્યાતા યો જનનું છે. આગે અવતરસે તિહાં લગે આત્મ પ્રદેશનું દંઢક રેતે ઉત્પત્તીસ્થાન ઋજુગતિ ૧ એક સમયે વૃક્ષગતિ વીજી ત્રીજે ચોથે પાંચમે સમયે મરણ તે મરણ સમુદ્ધાત જાણવો

૪ વૈક્રિય સમુદ્ધાત. હવે વૈક્રિય લઘી ૧ કરી

નવો વૈક્રિયરૂપ કરવાનું કાજે. વિકલંબ વા
હેલે નિજ શરીરમાન લાંબૂપણે જઘન્ય૦. અંગુ-
લ અસંખ્યાતનો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટો લાલ ચો-
ખન અધિક માન આત્મપ્રદેશનો ઢંઢકની રચ-
ના કરે તેણે કરી ઘણા વૈક્રિયના પુદ્ગલનો શા-
ટક કરે પણ નારકીને અંતર સુહૃત્તુ માન અને
મનુષ્ય તથા તિર્યંચને ચાર સુહૃત્તુ અને દેવતાને
દિન ૧૫ તું માન

૫ તેજસ્ સમુદ્ઘાત. જે લબ્ધીવંત સાધુ તથા વ-
લી અન્ય ક્રોધ પામ્યો થકો જઘન્ય થકી તો
અંગુલનો સંખ્યાતમો ભાગ. અને ઉત્કૃષ્ટો સં-
ખ્યાતા યોજન પ્રમાણ લાંબો. તેજઃ શરીર પુ-
દ્ગલે વિદ્યો આત્મ પ્રદેશનું ઢંઢ રચે તેણે કરીને
મનુષ્યાદિકને બાલે. ણી પરે ઘણા તેજસ્ના
પુદ્ગલનો શાટક કરે પણ અંતર સુહૃત્તુ પ્રમાણ

૬ આહારક સમુદ્ઘાત. હવે આહારક શરીર કર-
વા નિમિત્ત વૈક્રિયનીપરે. ચહદપૂર વધારી
હોય તે કરે ૫ મુઠાહાથ પ્રમાણે આહારક શ-
રીરનો પુત્તલો કરે સંખ્યાતા યોજનલગે જાય
અંતર સુહૃત્તુ પ્રમાણ

૭ સાતમો કેવલી સમુદ્ઘાત તે કેવલી આયુ કર્મ
વેદનાદિક થકી ઓછું જાણે

૫ કરે ચૌદરાજ પ્રમાણ. તેહમા પહેલે

समये दंडरचे २ बीजे समय कपाट करे ३ त्री-
जे समय मंथाणो करे ४ चोथो समय आंतरा
पूराए ५ पांचवे समय आंतरा संहरे ६ छठ
समये मंथाणो संहरे ७ सातमे समय कप ट
संहरे ८ आठमे समय दंड संहरे. पछे सह-
ज स्वभाविक रूप थाय. आठ समय प्रमाण
ईहार कत्तो. घणी वेदनीय नामगोत्रना दळ हा-
टन करे. हट्टांत कहे छे ते जिय भी-
तुं लुगडुं होय तेहणे मोकलुं करीने उतावलुं
सुकविए. तिम आत्म प्रदेश विस्तारवे करीने
बेहेला कर्म निर्जराय. ए रीते केवली समु-
द्धात कहीए. ए रीते सात समुद्धात जागवा
स्वरूपे कहा.

८ आठमो पाचित मासखंड समुद्धात ते अजीव स-
मुद्धात करे. आठ समयनुं मान

प्रथम सात समुद्धात कही तेमांथी एक एक दंडकने
विषे केटला समुद्धात होय ते कहे छे

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे चार समुद्धात हो-
य ते कहे छे.

१ वेदना २ कषाय ३ मरण ४ वैक्रिय

दश प्रकारे भुवनपतिना दश दंडकनेविषे पांच समुद्-
धात होय तेनी विगत

१ वेदना २ कषाय ३ मरण ४ वैक्रिय ५ तेजु

पृथ्वीकायना दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्धात होय
तेनी विगत

१ वेदना २ कषाय ३ मरण

अण्णकायना दंडकनेविषे त्रण समुद्धात होय तेनी
विगत

१ वेदना २ कषाय ३ मरण

तेज्जकायना दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्धात होय

वायुकायना दंडकनेविषे पेला चार समुद्धात होय.

वनस्पतीकायना दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्धात
होय

वेंद्रीना दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्धात होय

तेंद्रीना दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्धात होय

चोरंद्री दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्धात होय

तिर्यंच पंचेंद्रीनेविषे समुद्धातना बे भेद छे

१ पेला समुर्धिम तिर्यंच पंचेंद्रीनेविषे पेला त्रण
समुद्धात होय

२ बीजा गर्भज तिर्यंचने पेला पांच समुद्धात
होय

मनुष्य पंचेंद्रीना दंडकनेविषे समुद्धातना बे भेद छे.

१ पेला समुर्धिम मनुष्यने पेला त्रण समुद्धात
होय

२ बीजा गर्भज मनुष्यने सात समुद्धात होय

वाणवितरना दंडकनेविषे पेला पांच समुद्धात होय

જ્યોતિષી દેવતાના દંડકનેવિષે પેલા પાંચ સમુદ-
ઘાત હોય

વૈમાનિક દેવતાના દંડકનેવિષે પેલા પાંચ સમુદ-
ઘાત હોય

અ રીતે ચોવિસ દંડકનેવિષે સમુદઘાતદ્વાર કહ્યો.

શતિ નવમો સમુદઘાતદ્વાર સંપૂર્ણ.

અથ દસમું દષ્ટિ દ્વાર લિખ્યતે

દશમું દષ્ટિદ્વાર તેના ત્રણ ભેદ છે તે કહે છે

૧ સમ્યક્દષ્ટી ૨ મિથ્યાદષ્ટી ૩ સમ્યક્મિથ્યાદષ્ટી

અ રીતે દષ્ટીના ત્રણ ભેદ કહ્યા

ચોવિસ દંડકમાહેથી એકેક દંડકનેવિષે કેટલી કે-

કેટલી દષ્ટી હોય તેની વિગત વિસ્તારીને લખી છે.

પેલા સાત નારકીના દંડકનેવિષે ત્રણ દષ્ટી હોય

દશપ્રકારના ધ્રુવનપતિના દશ દંડકનેવિષે ત્રણ દ-

ષ્ટી હોય

પૃથ્વીકાયના દંડકનેવિષે એક મિથ્યાદષ્ટી હોય

અપ્પકાયના દંડકનેવિષે એક મિથ્યાદષ્ટી હોય

તેજકાયના દંડકનેવિષે એક મિથ્યાદષ્ટી હોય

વાયુકાયના દંડકનેવિષે એક મિથ્યાદષ્ટી હોય

વનસ્પતિકાયના દંડકનેવિષે એક મિથ્યાદષ્ટી હોય

વેદી દંડકનેવિષે બે દષ્ટી હોય તેની વિગત છે

१ सम्यक्दृष्टी २ मिथ्यादृष्टी

तेंद्री दंडकनेविषे पेली वे दृष्टी होय

१ सम्यक्दृष्टी २ मिथ्यादृष्टी

चांगंद्री दंडकनेविषे पेली वे दृष्टी होय

१ सम्यक्दृष्टी २ मिथ्यादृष्टी

तीर्थीच पंचेंद्री दंडकनेविषे त्रण दृष्टी होय

मनुष्य पंचेंद्री दंडकनेविषे त्रण दृष्टी होय

बाण वितरना दंडकनेविषे त्रण दृष्टी होय

लघुनेषीना दंडकनेविषे त्रण दृष्टी होय

प्रमानिक देवताना दंडकनेविषे त्रण दृष्टी होय

ए रीते २४ चौविस दंडकनेविषे दृष्टीद्वार छे

इति दशमं दृष्टीद्वार संपूर्ण.

अथ अग्यारमं दर्शनद्वार लिख्यते.

दर्शनद्वारजा चार भेद छे तेनी विगत

१ लघुदर्शन

२ अचक्षुदर्शन

३ अवधीदर्शन

४ केवलदर्शन

ए रीते चार दर्शन नाम कळा

चौविस दंडकनेविषे एकेक दंडकनेविषे केटला

केटला दर्शन होय तेनी विगत लखाए छीए

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे त्रण दर्शन होय.

१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन

दश प्रकारें भुवनपतिना दश दंडकनेविषें ३ दर्शन
होय.

१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
पृथ्वीकायना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
अप्यकायना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
तेजकायना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
वायकायना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
वनस्पतीकायना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
वेद्रीना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
तेद्रीना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
चोरंद्रीना दंडकनेविषें वे दर्शन होय तेनी विगत.

१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन
तिर्य्यचपंचंद्री दंडकनेविषें ३ दर्शन होय तेनी विगत

१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
मनुष्यना दंडकनेविषें चार दर्शन होय

वाणवितर्गना दंडकनेविषें त्रण दर्शन होय

१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
ज्योतिषीदेवताना दंडकनेविषें ३ दर्शन होय

१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
वैमानिकना दंडकनेविषें त्रण दर्शन होय

१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
ए रीते २४ दंडकनेविषें दर्शनना भेद कक्षा

इति श्री अग्यायुं दर्शनद्वार सपूर्ण.

अथ बारमुं ज्ञानद्वार लिख्यते.

ज्ञानना आठ भेद छे तेना वे प्रकार छे ते कहे छे ते-
नी विगत.

१ पांच ज्ञान २ त्रण अज्ञान

१ पेहेला पांच ज्ञानना भेद कहे छे

१ यतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधीज्ञान

४ धनःपर्यवज्ञान ५ केवलज्ञान

ए रीते ५ भेद जाणवा.

२ दुर्बीजा तण अज्ञानना भेद कहे छे.

१ यतिअज्ञान २ श्रुतअज्ञान ३ विभंगअज्ञान

ए रीते ज्ञानद्वारना ८ भेद कछा

७ चोविस दंडक माहेयी एकेक दंडकनेविषे ज्ञानना
पेहेला भेद-होय तेनी विगत.

७ दंडक सात भारकीना दंडकनेविषे ज्ञानना छ भेद छे
तेनो विगत.

१ यतिअज्ञान २ श्रुतिअज्ञान ३ विभंगअज्ञान

४ यतिज्ञान ५ श्रुतिज्ञान ६ अवधीज्ञान

इत प्रकारे बुद्धनपतिना दश दंडकनेविषे ज्ञानना छ
भेद होय

२ त्रण अज्ञान ३ त्रण पेलाज्ञान

पुर्वी ज्ञानना दंडकनेविषे वे अज्ञान जाणवा

१ धर्माअज्ञान २ श्रुत अज्ञान

अपकायना दंडकनेविषे पेला वे अज्ञान होय

१ मतीअज्ञान २ श्रुत अज्ञान

तेऊकायना दंडकनेविषे पेला वे अज्ञान होय

१ मतीअज्ञान २ श्रुतअज्ञान

वाऊकायना दंडकनेविषे पेला वे अज्ञान होय

१ मतीअज्ञान २ श्रुतअज्ञान

वनस्पतीकायना दंडकनेविषे पेला वे अज्ञान होय

१ मतीअज्ञान २ श्रुतअज्ञान

बेंद्रीना दंडकनेविषे ज्ञानना ४ भेद तेनी विगत

बेंद्रीअपर्याप्ता अवस्था एकएकने वे ज्ञान ने अज्ञान ए

चार लाभे अने पर्याप्ता बेंद्रीने वे अज्ञान होय

ए रीते विगलेंद्री आदे दर्ईने बेंद्री तेंद्री चोरेंद्री ए ल-

णने सरखुं जाणवुं

२ पेला वे अज्ञान २ पेला वे ज्ञान

तेंद्री दंडकनेविषे ज्ञानना ४ भेद जाणवा तेनी विगत

बेंद्रीनी परें जाणवी.

२ पेला वे अज्ञान

२ पेला वे ज्ञान

चोरेंद्री दंडकनेविषे ज्ञानना ४ भेद छे तेनी विगत

बेंद्रीनी परें जाणवी.

२ पेला वे अज्ञान २ पेला वे ज्ञान

तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकनेविषे ज्ञानना छ भेद छे तेनी

विगत

३ पेला त्रण ज्ञान होय ३ त्रण अज्ञान होय

મનુષ્ય દંડકનેવિષે જ્ઞાનના આઠ ભેદ તે મનુષ્ય દંડક
ના ૧ ભેદ છે તેની વિગત.

૧ ગર્ભજ મનુષ્યને ૮ જ્ઞાન લાભે

૫ જ્ઞાન ૩ અજ્ઞાન એ રીતે ૮

૨ સમુર્થિયને પેલા બે અજ્ઞાન

વાળાવિતરવા દંડકનેવિષે જ્ઞાનના છ ભેદ જાણવા
તેની વિગત

૩ ત્રણ પેલા જ્ઞાન હોય ૩ ત્રણ અજ્ઞાન હોય

જ્યોતીષી દંડકનેવિષે જ્ઞાનના છ ભેદ જાણવા તેની
વિગત

૩ ત્રણ જ્ઞાન પેલા ૩ ત્રણ અજ્ઞાન

નૈમાનિકના દંડકનેવિષે જ્ઞાનના છ ભેદ જાણવા તે-
ની વિગત

૩ ત્રણ જ્ઞાન પેલા ૩ અજ્ઞાન હોય

એ રીતે ૨૪ દંડકનેવિષે જ્ઞાનના ભેદ કહ્યા

પણ નાંબીસ દંડક મારાથી જ્ઞાન નારકીનું એક દંડ-

ક અને દેવનાના નેર દંડક ૧ જોઈ દંડકવાળા જ્ઞાન

અથી જગન્નય અને ઉત્કૃષ્ટ કેટલું દેલે તેની વિગત

પ્રથમ સાત નારકીના દંડકની વિગત

સતેનરક

જગન્નયદેલે

ઉત્કૃષ્ટદેલે

૧ રક્ષામ્ભા

૩॥ ગાઝ

૪ ગાઝ

૨ શક્તમ્ભા

૩ ગાઝ

૩॥ ગાઝ

૩ ધાલુકમ્ભા

૨॥ ગાઝ

૩ ગાઝ

૪ પંકમમા	૩ ગાદ	૨૥ ગાઝ
૬ ધૂમમા	૧૥ ગાઝ	૨ ગાઝ
૬ તમઃપ્રમા	૧ ગાઝ	૧૥ ગાઝ
૭ તમમતમઃપ્રમા	-૥ ગાઝ	૧ ગાઝ

૫ રીતે સાત નારકીને જ્ઞાન થકી દેસવાની વિગત
દ્વન્નમકારના દશ ભવનપતીના દેવકને જ્ઞાનથકી
દેસવાના બે મેદ છે તેની વિગત

૧ પર્યોપમના આડલાવાલાને દેસવાની વિગત

૧ જયન્યથકી યોજન ૨૬ ॥

૨ વત્કુટ્ટ સંખ્યાતા દ્વીપ સડુદ્ર

૨ સાગરોપમના આડલાવાલા અસંખ્યાતા દ્વીપ સ-
ડુદ્ર લગે દેસે

૫ રીતે ભવનપતીના દેવતા સગલા પાઠના આકારે
દેસે

વાળાવિંતર ઝંચપળે થજા પતાકા લગે દેસે અને તિ-
રછાની વિગત

૧ જયન્યયોજન ૨૬ ૨ વત્કુટ્ટો સંખ્યાતા દ્વીપ સડુદ્ર
લગે દેસે પણ વાળાવિંતરના દેવતા ઢોલના આકારે
દેસે.

જ્યોતિષી દેવતા ઝંચપળે થજા પતાકાલગે દેસે અને
તિરછાની વિગત

૧ જયન્ય યોજન ૨૬ ૨ વત્કુટ્ટો સંખ્યાતા દ્વીપ સડુ-
દ્ર દેસે

દયોતિષીના દેવતા ક્ષાલરને આકારે દેસે
 વૈમાનિકના દેવતા ડચપળે ઘજા પતાકા લગે દેસે
 અને તિરુછાની વિગત

તથા નીચે દેસવાની વિગત

૧ પેલા દેવલોક તથા ઘીજા દેવલોકવાલાને દેસવા-
 ની વિગત

૧ તિરુલું દેસવાના વે મેદ છે

૧ પલ્યોપમના અઝ્વાવાલા સંખ્યાતા દ્વીપ સ-
 મુદ્ર લગે દેસે

૨ સાગરોમના આઠ્ઠવાવાલા અસંખ્યાતા દ્વી-
 પ સમુદ્ર લગે દેસે

૨ નીચે પેલી નારકી લગે દેસે

૨ ત્રીજા તથા ચોથા દેવલોકના દેવતાને દેસવાની
 વિગત

૧ નીચે ઘીજી નરકલગે

૨ તિરુલું અસંખ્યાતા દ્વીપ સમુદ્ર દેસે

૩ પાંચમા અને છઠા દેવલોકના દેવતાને દેસવાની વિ-
 ગત

૧ નીચે ત્રીજી નરકલગે

૨ તિરુલું અસંખ્યાતા દ્વીપ સમુદ્ર દેસે

૪ સાતમા અને આઠમા દેવલોકના દેવતાને દેસવાની
 વિગત

૧ નીચું ચોથી નરકલગે

૨ તિરહું અસંખ્યાતા દ્વીપ સમુદ્ર દેશે

૬ નવમું તથા દશમું તથા અગ્યારમું તથા બારમું ૫
ચાર દેવલોકના દેવતાને દેખવાની વિગત

૧ નીચે પાંચમી નરકલગે

૨ તિરહું અસંખ્યાતા દ્વીપ સમુદ્રલગે દેશે

૬ પેલી પ્રૈવેયકની ત્રિક તથા બીજી ત્રિકના દેવતાને
દેખવાની વિગત

૧ નીચે છઠી નરકલગે

૨ તિરહું અસંખ્યાતા દ્વીપ સમુદ્ર લગે દેશે

૭ ત્રીજી પ્રૈવેયક ત્રિકના દેવતા અને ૪ અનુચર વિ-
માનના દેવતાને દેખવાની વિગત

૧ નીચે સાતમી નરક લગે

૨ તિરહું અસંખ્યાતા દ્વીપ સમુદ્ર દેશે

૮ પાંચમા સર્વાર્થ સિદ્ધના દેવતા ચંદ્રદરાજ લોકનું
સ્વરૂપ દેશે ૭મો દેશે

૫ રીતે વૈમાનિક દેવતાના દેખવાના ૮ ભેદ છે.

૫ રીતે જ્ઞાનયકી દેખવાનું સ્વરૂપ સંક્ષેપે છે.

इति बारमुं ज्ञानद्वार संपूर्ण

अथ तेरमुं योगद्वार लिख्यते.

યોગદ્વારના પંચર ભેદ છે તેની વિગત

પેલા મનના ૪ યોગ તેની વિગત

- १ सत्य मनोयोग ३ सत्याश्रय मनोयोग
 २ असत्य मनोयोग ४ असत्याश्रय मनोयोग
 बीजा वचनना चार योग तेनी नामनी विगत.
 १ सत्य वचनयोग २ सत्याश्रय वचनयोग
 २ असत्य वचनयोग ४ असत्याश्रय वचनयोग
 ७ त्रीजी कायना ७ योग तेना नाम लखीए छीए-

- १ उदारिक काययोग
 २ उदारिक मिश्रकाययोग
 ३ वैक्रियकाययोग
 ४ वैक्रिय मिश्रकाययोग
 ५ आहारक काययोग
 ६ आहारक मिश्र काययोग
 ७ कर्मण काययोग

ए रीते मन वचन कायाए करीने पञ्चर योग थया
 ते चौबीस दंडकमाहेथी एकेक दंडकनेविषे कटला यो-
 ग होय तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे ११ योग होय
 तेनी विगत.

- ४ मनना चार योग १ वैक्रियकाय योग
 ४ वचनना चार योग १ वैक्रिय मिश्रयोग
 १ कर्मणकाय योग

ए रीते नारकीना दंडकने विषे ११ योग छे.

दश प्रकारें दश भवनपत्नीना, दश दंडकनेविषें ११

योग होय तेनी विगत.

४ मनना चार योग १ वैक्रीकाय योग

४ वचनना चार योग १ कर्मणकाय योग

१ वैक्रीयमिश्रकाय योग

ए रीतें भवनपत्नीना दश दंडकना देवताने ११ योग छे.

पृथ्वीकायना दंडकनेविषें ३ योग होय तेनी विगत.

१ उदारिककाय योग २ उदारिकमिश्रकाय योग

३ कर्मणकाय योग

अप्यकायना दंडकनेविषे ३ योग होय तेनी विगत

१ उदारिककाय योग २ उदारिकमिश्रकाय योग

३ कर्मणकाय योग

तेजकायना दंडकनेविषे ३ योग होय तेनी विगत

१ उदारिककाय योग २ उदारिकमिश्रकाय योग

३ कर्मणकाय योग

वायकायना दंडकनेविषें ५ योग होय तेनी विगत.

१ उदारीकाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग

३ वैक्रीयकाय योग ४ वैक्रीयमिश्रकाय योग

५ कर्मणकाय योग

वनस्पतीकायना दंडकनेविषें ३ योग होय तेनी विगत

१ उदारीककाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग

३ कर्मणकाय योग

ए रीते ३ योग जाणवा

वेंद्रीना दंडकनेविषे ४ योग होय तेनी विगत.

१ उदारीककाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग

३ कर्मणकाय योग ४ असत्यअमृषवचन योग

तेंद्रीना दंडकनेविषे ४ योग होय तेनी विगत

१ उदारीककाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग

३ कर्मणकाय योग ४ असत्यअमृषवचन योग

चोरेंद्रीना दंडकनेविषे ४ योग होय तेनी विगत.

१ उदारीककाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग

३ कर्मणकाय योग ४ असत्यअमृषवचन योग

तिर्यंचपंचेंद्रीना दंडकना वे भेद छे तेनी विगत.

१ समुच्छीम तिर्यंचपंचेंद्रीने ४ योग होय

१ उदारीककाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग

३ कर्मणकाय योग ४ असत्यअमृषवचन योग

२ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीने १३ होय तेनी विगत

५ कायना पांच योग होय तेनी विगत

१ उदारिककाय योग २ उदारिकमिश्रकाय योग

३ वैक्रियकाय योग ४ वैक्रियमिश्रकाय योग

५ कर्मणकाय योग

४ मनना चार योग ४ वचनना चार योग

२ रीते तेर योग कहा.

मनुष्य पञ्चद्वीना दंडकनेविषे वे भेद छे तेनी विगत

१ पेला समुद्धीम मनुष्यने ३ योग होय

१ उदारीककाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग

३ कर्मणकाय योग

२ बीजा गर्भज मनुष्यने १५ योग उपर कक्षा
तेनी विगत

४ मनना योग ४ वचनना योग ७ कायना योग

बाण वितरना दंडकनेविषे ११ योग होय तेनी वि-
गत

४ मनना योग १ वैक्रियकाय योग

४ वचनना योग १ वैक्रियमिश्रकाययोग

१ कर्मणकाय योग

ए रीते ११ योग होय

ज्योतिषीना दंडकनेविषे ११ योग होय तेनी विगत

४ मनना योग ४ वचनना योग ३ कायना योग

वैमानिक देवतानां दंडकनेविषे ११ योग होय ते-
नी विगत

४ मनना योग ४ वचनना योग ३ कायना योग

ए रीते चोवीस दंडकनेविषे योगद्वार छे.

इति तेरमुं योगद्वार संपूर्ण

अथ चौदमुं उपयोगद्वार लिख्यते.

उपयोगद्वारना वार भेद छे तेनी विगत

५ प्रथम ज्ञानना भेद पांच छे तेनी विगत

१ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधीज्ञान

४ मनःपर्यवज्ञान ५ केवलज्ञान

ए रीते ज्ञानना ५ भेद कक्षा

३ अज्ञानना त्रण भेद होय तेनी विगत

१ मातिअज्ञान २ श्रुतअज्ञान ३ विभंगअज्ञान

४ दर्पनना चार भेद छे तेनी विगत

१ चक्षु दर्शन २ अचक्षु दर्पन ३ अवधी दर्शन

४ केवल दर्शन

ए रीतें चार दर्शनना भेद जाणवा.

ए रीतें वार उपयोगना नाम कक्षा एण चौवीस दंडक माहेथी एकएक दंडकनेविषे उपयोग कहे छे तेनी विगत.

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे ९ उपयोग होय तेनी विगत

३ पेलाज्ञान ३ अज्ञान ३ पेलादर्शन

ए रीते समुच्चय नारकीनेविषे उपयोग ९ थया तेनी विगत

१ समकित दृष्टीमे उपयोग ६ होय

३ पेलाज्ञान ३ पेलादर्शन

२ मिथ्या दृष्टीवाळाने उपयोग ६ होय

૩ અજ્ઞાન ૩ પેલા દર્શન

દશ પ્રકારે દશ મયનપતિના દંઢકનેવિષે ચપયોગ ૧
હોય તેની વિગત

૩ પેલા જ્ઞાન ૩ અજ્ઞાન ૩ પેલા દર્શન

પૃથ્વીકાયના દંઢકનેવિષે ચપયોગ ૩ હોય તેની
વિગત

૧ મતી અજ્ઞાન ૨ શ્રુતઅજ્ઞાન ૩ અચક્ષુ દર્શન

અપ્પકાયના દંઢકનેવિષે ચપયોગ ૧ હોય તેની વિ-
ગત

૧ મતિઅજ્ઞાન ૨ શ્રુતઅજ્ઞાન ૩ અચક્ષુદર્શન

તેડકાયના દંઢકનેવિષે ચપયોગ ૩ હોય તેની વિ-
ગત

૧ મતિઅજ્ઞાન ૨ શ્રુતઅજ્ઞાન ૩ અચક્ષુદર્શન

વાહકાયના દંઢકનેવિષે ચપયોગ ૩ હોય તેની વિગત

૧ મતિઅજ્ઞાન ૨ શ્રુતઅજ્ઞાન ૩ અચક્ષુદર્શન

વનસ્પતીકાયના દંઢકનેવિષે ચપયોગ ૩ હોય તેની
વિગત

૧ મતિઅજ્ઞાન ૨ શ્રુતઅજ્ઞાન ૩ અચક્ષુદર્શન

વેદીના દંઢકનેવિશેષ એકને પાંચ ચપયોગ હોય તે
અપર્યાપ્તા લગે અને પર્યાપ્તાને ૩ ચપયોગ હોય તે
ની વિગત

૨ જ્ઞાન પેલા ૨ અજ્ઞાન પેલા ૧ અચક્ષુદર્શન

તેદીના દંઢકનેવિશેષ એકને પાંચ ચપયાગ હોય તે

अपर्याप्ता लगे अने पर्याप्ताने ३ उपयोग होय तेनी विगत.

२ ज्ञान पेला २ अज्ञान पेला १ अचक्षुदर्शन
चोरद्रीना दंडकनेविशेष एकने ६ उपयोग अपर्याप्ता-
लगे होय पळे उपरांत पर्याप्ताने उपयोग ४ होय ते-
नी विगत

२ ज्ञान पेला २ अज्ञान पेला २ दर्शन पेला
तिर्यच पंचेंद्रीनेविषे उपयोगना २ भेद छे तेनी विगत
१ समुच्छिप्त तिर्यच पंचेंद्रीविशेष एकने अपर्याप्तालगे
६ उपयोग होय अने उपरांत पर्याप्ताने ४ उपयोग हो-
य तेनी विगत

२ ज्ञान पेला २ अज्ञान पेला २ दर्शन पेला
२ गर्भज तिर्यच पंचेंद्रीने उपयोग ९ होय प्रथम नार-
कीनी परे

मनुष्यपंचेंद्रीना दंडकनेविषे उपयोगना बे भेद छे
१ समुच्छिप्त मनुष्यने उपयोग ४ होय तेनी विगत

२ अज्ञानपेला २ दर्शनपेला

२ गर्भज मनुष्यने उपयोग १२ होय तेनी विगत उषर
लक्ष्या प्रमाणें

वाणवितरना दंडकनेविषे उपयोग ९ होय ते प्रथम
नारकीनी परे

उपोत्तीक्षीना दंडकनेविषे उपयोग ९ होय ते समुच्चयें
प्रथम नारकीनी, परे

વૈમાનિક દેવતાના દંડકની વિગત

૧ વાર દેવલોક અને નવગ્રૈવેયકના દેવતાને ઉપ-
યોગ ૯ સમુચ્ચયે હોય તે પ્રથમ નારકીની પરે
૨ પાંચ અનુત્તર વિમાનના દેવતાને ઉપયોગ ૬ હોય
અને એની સમ્યક્દૃષ્ટી છે મિથ્યાદૃષ્ટી નથી તે માટે
૩ જ્ઞાન પેલા ૩ દર્શન પેલા
૫ રીત ચોવીસ દંડકનેવિષે ઉપયોગદ્વાર કહ્યા.
इति श्री चौदशुं उपयोगद्वार संपूर्ण.

अथ पञ्जरमुं उपजवानुं द्वार लिख्यते.

ચોવીસ દંડકમાહેથી એકએક દંડકને ઉપજવા દ્વાર છે
૫૮૯ એક સમયમા આશ્રીને કેટલા જીવ ઉપજે ક-
યા દંડકનેવિષે તેનો છુલાસો છે
પ્રથમ સાત નારકીના દંડકનેવિષે એક સમયમાં જ-
ન્યથી એક વે અથવા ત્રણ જીવ ઉપજે અને ચત્કૃષ્ટ
સંખ્યાતા અને અસંખ્યાતા જીવ ઉપજે
૫ રીતે પ્રથમ દંડક કહ્યા.

દશ પ્રકારના ભવનપતીના દશ દંડકના દેવતા ૧
સમયમાં જન્યથી એક વે ત્રણ જીવ ઉપજે અને
ચત્કૃષ્ટા સંખ્યાતા અથવા અસંખ્યાતા ઉપજે
પૃથ્વીકાયના દંડકનેવિષે એક સમયમાં અસંખ્યાતા
જીવ ઉપજે

અપ્પકાયના દંઢકનેવિષે એક સમયમા અસંખ્યાતા
જીવ ઉપજે

તેઝકાયના દંઢકનેવિષે એક સમયમાં અસંખ્યાતા જી-
વ ઉપજે

વાઝકાયના દંઢકનેવિષે એક સમયમાં અસંખ્યાતા
જીવ ઉપજે

વનસ્પતીકાયના દંઢકનેવિષે એક સમયમા અનંત
જીવ ઉપજે

વેંદ્રીના દંઢકનેવિષે એક સમયમાં જઘન્યથી એક વે
ત્રણ જીવ ઉપજે અને ઉત્કૃષ્ટા સંખ્યાતા અને અસં-
ખ્યાતા જીવ ઉપજે

તેંદ્રીના દંઢકનેવિષે એક સમયમાં જઘન્યથી એક વે
ત્રણ જીવ ઉપજે ઉત્કૃષ્ટા સંખ્યાતા અને અસંખ્યાતા
જીવ ઉપજે

ચોરંદ્રીના દંઢકનેવિષે એક સમયમાં જઘન્યથી એક વે
ત્રણ જીવ ઉપજે ઉત્કૃષ્ટા સંખ્યાતા અને અસંખ્યાતા
જીવ ઉપજે

ગર્ભજ તિર્યંચ પંચેંદ્રીના દંઢકનેવિષે એક સમયમા એક
વે ત્રણ જીવ ઉપજે ઉત્કૃષ્ટા સંખ્યાતા અને અસંખ્યાતા
જીવ ઉપજે

મનુષ્ય દંઢકનેવિષે એક સમયમાં ઉપજવાની િગત
સમુર્છામ મનુષ્ય અસંખ્યાતા ઉપજે ૯ મિથ્યા દૃષ્ટી
જીવ જાણવા

૨ ગર્ભજ મનુષ્ય જઘન્યથી એક વે ત્રણ ઉપજે ને ઉત્કૃષ્ટા અસંખ્યાતા ઉપજે
 વાળાવિંતરના દંડકનેવિષે એક સમયમાં જઘન્યથી એક વે ત્રણ ઉપજે અને ઉત્કૃષ્ટા સંખ્યાતા અને અસંખ્યાતા ઉપજે
 જ્યોતિષીના દંડકનેવિષે એક સમયમાં જઘન્યથી એક વે ત્રણ ઉપજે પણ ઉત્કૃષ્ટા સંખ્યાતા અને અસંખ્યાતા ઉપજે
 વૈમાનિકના દંડકનેવિષે એક સમયમાં જઘન્યથી એક વે ત્રણ ઉપજે પણ ઉત્કૃષ્ટા ઉપજવાની વિગત.
 ૧ પેઠા દેવલોકથી આઠમાં દેવલોકસુધી સંખ્યાતા અને અસંખ્યાતા ઉપજે
 ૨ નવમાં દેવલોકથી સર્વાર્થસિદ્ધ લગે સંખ્યાતા જીવ ઉપજે તે મનુષ્યમાથી અ.વે અને મનુષ્યમાં જાય.
 ૬ રીતે ચોવીસ દંડકનેવિષે ઉપજવાનું એક સમયને આશ્રીને સનુચ્ચયે વિવરીને કહ્યા છે

इति उपजवानुं पन्नरसुं द्वार संपूर्णं

अथ सोळसुं चवनद्वार लिख्यते

સોલસું ચવનદ્વાર તે પ્રથમ પન્નરસું દ્વાર ઉપજવાનું કહ્યું તેજ પ્રમાણે ચોવીસ દંડકમાટે એક એક દં-

दङ्कनेविषे एक समयमां जघन्यथकी अथवा उत्कृष्टो-
चववानो समुच्चय केटला जीव चवे ते प्रथम उपजवा-
ना द्वारनी परे प्रतिपक्ष जाणवू जे दंडकनेविषे जेट-
ला उपज एक समये ते दंडकनेविषे तंटला एक सम-
यमा चवं

ए रीते चोवीस दंडकनेविषे जीवोतुं उपजवानी परे
चववातु द्वार जाणवुं
तेथी करीने एक एक दंडकनो खुलासो करीने लख्यो
नथी माटे पन्नरमा उपजवाना द्वारनी परे सोलसुं
चवनद्वार जाणवुं

इति सोलसुं चवनद्वार संपूर्ण

अथ सत्तरसुं आयुद्वार लिख्यते.

हवे चोवीस दंडकमाहेथी। एक एक दंडकनेविषे आ-
युद्वार विवरीने कहीए छीए तेनी विगत

हवे प्रथम सात नारकीना दंडकसुं आउखुं विवरीने
लखिए छीए

सात नारकीना नाम जघन्यआयु उत्कृष्टआयु

१ रत्नप्रभा १० हजार वर्ष १ सागरोपम

२ शक्रप्रभा १ सागरोपम ३ सागरोपम

३ वालुकप्रभा ३ सागरोपम ७ सागरापेम

४ पक्षप्रभा	७ सागरोपम	१० सागरोपम
५ धूमप्रभा	१० सागरोपम	१७ सागरोपम
६ तमःप्रभा	१७ सागरोपम	२२ सागरोपम
७ तमस्तमः	२२ सागरोपम	३३ सागरोपम

ए रीते सात नारकीना दंडकनु आऊखु विवरिने कह्युं.

सात नरकनेविषे ४९ पाथडा छे ते माहेथी एक एक नरकनेविषे जुदा जुदा पाथडा छे तेमांथी एक एक पाथडानेविषे नरकना जीवोनु जघन्य तथा उत्कृष्ट आऊखानुं यंत्र लखीए छीए

१ प्रथम रत्नप्रभा नरकनेविषे १३ पाथडा छे तेना आऊखानुं यंत्र लिख्यते

पाथडा जघन्यथी सागरोपम भाग दसीया

१	वर्ष	१० हजार
२	वर्ष	१ लाख
३	वर्ष	९ लाख
४	वर्ष	९० लाख
५	०	१
६	०	२

७	०	३
८	०	४
९	०	५
१०	०	६
११	०	७
१२	०	८
१३	०	९

उत्कृष्टो सागरोपम	भाग दसीया	एक सागरना भाग
वर्ष	९ लाख	०
वर्ष	९० लाख	०
वर्ष	१ कोटी	०
०	१	१०
०	२	१०
०	३	१०

०	४	१०
०	५	१०
०	६	१०
०	७	१०
०	८	१०
०	९	१०
१	०	१०

२ बीजी शक्रप्रभा नरकनेविषे ११ पाथडा छे तेना
आऊखातु यंत्र लिख्यते

पाथडा जघन्यथी सागरोपम उपरे भाग

१	१	०
२	१	२
३	१	४
४	१	६
५	१	८

१०	१	१०
११	२	१
	३	३
	४	५
	५	७
	६	९

उत्कृष्ट
सागरापम

उपरे
भाग

एक सागरना
भाग

१	२	११
१	४	११
१	५	११
१	६	११
२	१०	११
२	१	११
२	३	११

२	५	११
२	७	११
२	९	११
३	०	११

३ श्रीजी व लुकमभा नरकनेविषे ९ पाथडा छे तेना
आउखानुं यंत्र लिख्यते

पाथडा जघन्यथी सागरोपम भाग

१	३	०
२	३	४
३	३	८
४	४	३
५	४	७
६	५	२
७	५	६

८	६	१
९	६	५

उत्कृष्ट भाग एक सागरोपमना
मागरोपम भाग

३	४	९
३	८	९
४	३	९
४	७	९
६	२	९
६	३	९
६	१	९
६	६	९
७	०	९

॥ शैली ऽऽम्भ नरऽोविषे ७ पाथडा छे तेना
अऽऽत्ताय यन लिखयत

पाथडा जयन्यबायू सागरोपम भाग

१	७	०
२	७	२
३	७	३
४	८	२
५	८	५
६	९	९
७	९	४

उत्कृष्टा-
यू सागरो-
पम

भाग

एक सागरना
भाग
करवा

७	२	७
७	६	७
८	२	७
८	५	७

९	१	७
९	४	७
१०	०	७

५ पांचमी धूम्रभा नरकनंविपे ५ पाथदा छे तेहुं
आजखानुं यत्र लिख्यते

पाथदा जघन्यआऊखु भाग
सागरोपम

१	१०	०
२	११	२
३	१२	४
४	१४	१
५	१५	३

उत्कृष्टआ-
उखु साग
रापम

भाग

एक सागरोपमना

भाग
करवा

११	२	५
----	---	---

૧૨	૪	૬
૧૪	૧	૬
૧૬	૩	૬
૧૭	૦	૫

૬ છઠી તમ.પ્રમા નરકનેવિષે પાથઢા ૩ છે તેવું.
યંત્ર લિખ્યતે

પાથઢા જગન્યથી સાગરોપમ ભાગ

૧	૧૭	૦
૨	૧૮	૨
૩	૨૦	૧

વત્કુલ ભાગ એક સાગરના
સાગરોપમ ભાગ

૧૮	૨	૩
૨૦	૧	૩
૨૨	૦	૩

૭ સાતમી તમસ્તમઃપ્રભા નરકનેવિષે પાથડો ? છે
તેનું યંત્ર લિખ્યતે

પાથડા

જઘન્યઆઝુનું
સાગરોપમ

ઉત્કૃષ્ટઆઝુનું
સાગરાપમ

૧	૨૨	૩૩
---	----	----

૫ રીતે સાત નરકનેવિષે પાથડા ૪૯ તેનું આઝુનું
જઘન્ય તથા ઉત્કૃષ્ટ વિવરીને કહ્યું

હવે દશ પ્રકારે ભવનપતિના દંઢકનું આયુ કહિપ
છીએ

૧ પ્રપમ અસુર કુમાર નીકાયના વે ઇંદ્રી છે તેની વિ-
ગત

૧ દક્ષિણ દિશાનો અધિપતિ ચમરેંદ્રની નિકાયનું
આઝુ જઘન્યથકી ૧૦ હજાર વર્ષ અને ઉત્કૃષ્ટ એ-
ક સાગરોપમનું જાણવો તથા તે ચમરેંદ્રની નિકાયની
દેવીનું આઝુનું જઘન્યથકી દસ હજાર વર્ષ અને
ઉત્કૃષ્ટ ૩૥ સાઢાત્રણ પલ્યોપમનું જાણવું.

ઉત્તર દિશાનું અધિપતિવિલ ઇંદ્રની નિકાયનું
આઝુ જઘન્યથકી દસ હજાર વર્ષનું અને ઉત્કૃષ્ટ
એક સાગરોપમ જ્ઞાનેરુ જાણવો તથા તે વલ ઇંદ્રની
નિકાયની દેવીનું આઝુનું જઘન્ય ૧૦ હજાર વર્ષ-
ને અને ઉત્કૃષ્ટ ૪૥ સાઢાચાર પલ્યોપમનું જાણવું.

૧૦ વાકી નાગકુમારથી કરીને સ્તનિનકુમાર સુધી નવ નિકાયનેવિષે વે વે ઇંદ્ર છે તેના આયુની વિગત.

૧ દક્ષીણ દિશાના નવ નિકાયના ઇંદ્રનું અયુ જઘન્ય ૧૦ હજાર વર્ષ અને ઉત્કૃષ્ટ ૧૥ દોઢ પલ્લોપમનું જાણવું અને તે દક્ષિણ દિશાના નવ નિકાય ના ઇંદ્રની દેવિનું આડકુ જઘન્યયકી ૧૦ હજાર વર્ષ અને ઉત્કૃષ્ટ ૦૥ અર્ધ પલ્લોપમનું જાણવું

૨ ઉત્તર દિશાના નવ નિકાયના ઇંદ્રનું આયુ જઘન્યથી ૧૦ હજાર વર્ષ અને ઉત્કૃષ્ટ ૨ પલ્લોપમે દેશે ડગો અને તે ઉત્તર દિશાના નવ નિકાયના ઇંદ્રની દેવીનું આયુ જઘન્યયકી ૧૦ હજાર વર્ષનું અને ઉત્કૃષ્ટ ૧ પલ્લોપમ દેશે ડગો જાણવું.

૩ રીત નવ નિકાયના દેવતાનું આડકુ કહ્યું.

૪ રીત દશ પ્રકારે ભવનરતિના દશ દંડકનેવિષે આડકું કહ્યું.

૫ પૃથ્વીકાયના દંડકનું આડકું જઘન્ય અંતર્મુદ્ધતે અને ઉત્કૃષ્ટ ૨૨ હજાર વર્ષનું તે પૃથ્વી છે પ્રકારની છે તેનું આડકું જુદું જુદું લક્ષી દેખાડે છે.

૧ સુનાનું ૧ હજાર વર્ષ

૨ સુધાનું ૧૨ હજાર વર્ષ

૩ વાલ્મીકીનું ૧૪ હજાર વર્ષ

૪ મણસલનું ૧૬ હજાર વર્ષ

૫ શર્કરાનું ૧૮ હજાર વર્ષ

૬ ચરપુઢવીનું ૨૨ હજાર વર્ષ

૧ રીત છ પ્રકારે પૃથ્વીનું વત્કુષ્ઠ આઝલું કહ્યું
અપ્પકાયના દંડકનું આઝલું જઘન્ય અંતરમુંદૂર્ત
અને વત્કુષ્ઠ ૭ હજાર વર્ષનું જાણવું

તેઝકાયના દંડકનું આઝલું જઘન્ય અંતરમુંદૂર્ત
અને વત્કુષ્ઠ ૩ અહોરાત્રીનું જાણવું

વાઝકાયના દંડકનું આઝલું જઘન્ય અંતરમુંદૂર્ત
અને વત્કુષ્ઠ ૩ હજાર વર્ષ

વનસ્પતીકાયનું આઝલું જઘન્ય અંતરમુંદૂર્ત અ-
ને વત્કુષ્ઠ ૧૦ હજાર વર્ષ

વૈંત્રીનું આઝલું જઘન્ય અંતરમુંદૂર્ત અને વત્કુષ્ઠ
૧૨ વર્ષનું

તૈંત્રીનું આઝલું જઘન્ય અંતરમુંદૂર્ત અને વત્કુષ્ઠ
૪૯ દિવસનું

ચોરૈંત્રીનું આઝલું જઘન્ય અંતરમુંદૂર્ત અને વત્કુષ્ઠ
છ માસનું

તિર્યંચપંચેંદ્રીનું આઝલું જઘન્ય અંતરમુંદૂર્ત અને વ-
ત્કુષ્ઠ ૩ પલ્યોપમનું તે તિર્યંચપંચેંદ્રીના ૨ મેદ છે

૧ એક ગર્મજ અને વીજો સમુર્ધ્ધિ તેની વિગત

૨ એક ગર્મજ તિર્યંચપંચેંદ્રીના ૫ મેદ છે તેના આઝ-
લા વત્કુષ્ઠાની વિગત

૧ જલચરનું આયુ પુરવ કોઢી

૨ લેચરનું આયુ પલ્યાપમનું અસંખ્યત્તમો ભાગ

૩ થલચરનું ૩ પલ્યોપમ
 ૪ ઊપરી સર્પનું પૂરવ કોડી
 ૫ મુજપરી સર્પનું પૂરવ કોડી
 ૨ વીજા સમુદ્ધિમ તિર્યચપંચેદ્રીનું આઝુલું ઉત્કૃષ્ટ
 કહયું તેની વિગત.

૧ જલચરનું પૂરવ કોડી
 ૨ થલચરનું ૮૪ હજાર વર્ષ
 ૩ સ્વચરનું ૭૨ હજાર વર્ષ
 ૪ ઊપરીનું ૫૩ હજાર વર્ષ
 ૫ મુજપરીનું ૪૨ હજાર વર્ષ
 ૧ રીતે તિર્યચપંચેદ્રીનું આઝુલું ઉત્કૃષ્ટ વિવરીને
 કહયું

મનુષ્ય દંડકનેવિષે સમુદ્ધિમ મનુષ્યનું જઘન્ય અને
 ઉત્કૃષ્ટ અંતર મુહૂર્તનું જાણવું અને વીજા ગર્ભજ
 મનુષ્યનું આઝુલું જઘન્ય અંતર મુહૂર્ત અને ઉત્કૃષ્ટ
 ત્રણ પલ્યોપમનું આઝુલું જાણવું તે ગર્ભજ મનુષ્યના
 ૩ ભેદ છે

૧ જુગલીઆ ક્ષેત્રના મનુષ્ય
 ૨ મહાવિદેહ ક્ષેત્રના મનુષ્ય
 ૩ ધરત ક્ષેત્રના મનુષ્ય તથા પૈરવત ક્ષેત્રના
 મનુષ્ય

૧ રીતે ત્રણ ભેદ કક્ષા તેની વિગત.

૧ પેદા જુગલીઆ મનુષ્યના ૪ ભેદ છે તેની વિગત.

૧ પાંચ દેવ કુરુક્ષેત્રના મનુષ્ય અને પાંચ ઉત્તર કુરુ ક્ષેત્રના મનુષ્યનું જઘન્ય આયુ ત્રણ પલ્યોપમ દેશે ડળો અને ઉત્કૃષ્ટ ૩ પલ્યોપમનું જાણવું

૨ પાંચહરી વર્ષ ક્ષેત્રના મનુષ્ય અને પાંચ રમ્ય-ક ક્ષેત્રના મનુષ્યનું જઘન્ય આઠઠું વે પલ્યોપમ દેશે ડળો અને ઉત્કૃષ્ટ આઠઠું વે પલ્યોપમનું જાણવું

૩ પાંચ હેમવંત ક્ષેત્ર અને પાંચ ઐરણ્યવત ક્ષેત્રના મનુષ્યનું આયુ જઘન્ય એક પલ્યોપમ દેશે ડળો અને ઉત્કૃષ્ટ પલ્યોપમ એકનું આઠઠું જાણવું

૪ હપન્ન અંતરક્ષિપના મનુષ્યનું આઠઠું પલ્યોપમનાં અસંખ્યાતમો ભાગ હોય.

૫ રીતે જુગલીઆ ક્ષેત્રના ચાર પ્રકાર કહ્યા.

૧ પાંચ મહા વિદેહ ક્ષેત્રના મનુષ્યનું આઠઠું જઘન્ય અંતરમુહૂર્ત અને ઉત્કૃષ્ટ પુરવ કોઢીનું જાણવું

૨ પાંચ ભરત ક્ષેત્ર અને પાંચ ઐરાવત ક્ષેત્રનું કાલ વર્તમાન સરખો સરખે જાણવો તે ૫ વે ક્ષેત્ર મધ્યે આઠઠું સરખું છે તે ૫ વે ક્ષેત્રમાં મનુષ્ય ભરત આપણને છે તેથી ભરત ક્ષેત્રના છ આર ના મનુષ્યનો આઠઠું જઘન્ય અંતર મુહૂર્ત અને ઉત્કૃષ્ટ વિવરીને સંક્ષેપ લખીએ છીએ.

१ पेलो आरो चार कोडा कोडी सागरोपमनो
तेमां मनुष्यने तण पल्यापमनुं आउखुं उत्क-
ष्ट होय

२ बीजो आरो त्रण कोडा कोडी सागरोपमनो
तेमां मनुष्यनुं वे पल्यापमनुं आउखुं उत्क-
ष्ट होय

३ त्रीजो आरो वे कोडा कोडी सागरोपमनो
तेमां मनुष्यनुं एक पल्यापमनु आउखु उत्कष्ट
होय

४ चौथो आरो एक कोडा कोडी सागरोपमनो
तेमांथी बतालीस हजार वर्ष आउखु ते आरामां
मनुष्यनुं आउखुं पुंख कोरीनुं उत्कष्ट कहयू

५ पांचनुं आरो एकवीस हजार वर्षनु तेमां मनु-
ष्यनुं आउखुं सो वर्ष झालेन उत्कष्ट ते उत्तर-
ते वर्ष २० लुं

६ छठो आरो एकवीस हजार वर्षनु तेमां मनुष्य-
नु आउखुं २० वर्षनो उत्कष्ट ते उत्तरते वर्ष १६ लुं

ए रीते भरतक्षेत्रना मनुष्यनु आउखुं छ आरा म-
माणें जाणवुं

अने तेजममाणें ऐरवत क्षेत्रना मनुष्यनुं आउखुं सर-
खुं जाणवु

ए रीते मनुष्य दंडकलुं आयू उत्कष्टुं कहयू

वाणवितरना दंडकलुं आउखुं जयन्त १० हजार वर्ष

અને ઉત્કૃષ્ટ એક પર્યોપમનું જાણવું અને તેની વાળ વિતરની દેવીનું આઝુલું જગન્ય ૧૦ હજાર વર્ષનું અને ઉત્કૃષ્ટ અર્ધ પર્યોપમનું જાણવું

ઽયોતીષીનું આઝુલું જગન્ય એક પર્યોપમનો અઠમો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ એક પર્યોપમ અને એક લાલ્લ વર્ષનું કહ્યું પણ જોતીષીના પાંચ ભેદ છે. તેના આઝુ-
લાની વિગત

૧ પ્રથમ ચંદ્રમાનું આઝુલું જગન્ય એક પર્યોપમનો ચોથા ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ એક પર્યોપમ અને એક લાલ્લ વર્ષનું જાણવું અને ચંદ્રમાની દે-
વીનું આઝુલું જગન્ય પર્યોપમનો ચોથો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ પર્યોપમનો અર્ધો ભાગ અને ઉપરે ૫૦ હજાર વર્ષનું

૨ સૂરજનું આઝુલું જગન્ય એક પર્યોપમનો ચો-
થો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ એક પર્યોપમ અને એક હજાર વર્ષ ઉપરે જાણવું અને સૂરજની દેવિનું આઝુલું જગન્ય પર્યોપમનો ચોથો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ પર્યોપમનો અર્ધો ભાગ અને ૫૦૦ વર્ષ ઉપરે જાણવું

૩ ગ્રહનું આઝુલું જગન્ય પર્યોપમનો ચોથો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ એક પર્યોપમનો જાણવું. અને ગ્રહ-
ની દેવીનું આઝુલું જગન્ય પર્યોપમનો ચોથો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ પર્યોપમનો અર્ધો ભાગ જાણવું

૪ નક્ષત્રનું આયુ જઘન્ય પલ્યોપમનું ચોથો ભાગ
અને ઉત્કૃષ્ટ પલ્યોપમનું અર્ધો ભાગ જાણવું અ-
ને નક્ષત્રની દેવીનું આઝ઼ું જઘન્ય પલ્યોપમનો
આઠમો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ પલ્યોપમનો ચોથો
ભાગ જાણવું

૫ તારાનું આઝ઼ું જઘન્ય પલ્યોપમનો આઠમો ભાગ
અને ઉત્કૃષ્ટ પલ્યોપમનો ચોથો ભાગ જાણવું. અ-
ને તારાની દેવીનું આઝ઼ું જઘન્યથી પલ્યોપમનો
આઠમો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટ પલ્યોપમનો આઠમો
ભાગ જ્ઞાહેરો જાણવું

૫ રીતે પાંચ જ્યોતિષી દેવતાનું આઝ઼ું કહ્યું.
વૈમાનિક દેવતાનું આઝ઼ું જઘન્ય એક પલ્યોપમ અને
ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ સાગરોપમનું જાણવું પણ તેમાં ૩ મેદ
છે તેની વિગત

૧ પ્રથમ વાર દેવલોકનું આઝ઼ું જઘન્ય ઉત્કૃષ્ટ કહે છે
દેવલોકના નામ જઘન્યઆયુ ઉત્કૃષ્ટઆયુ

૧ સુધર્મા ૧ પલ્યોપમ ૨ સાગરોપમ
૨ રૂશાન ૧ પલ્યોપમ જ્ઞાહેરો ૨ સાગરોપમ જ્ઞાહેરો

૩ સનત્કુમાર ૨ સાગરોપમ ૭ સાગરોપમ
૪ મહેદ્ર ૨ સાગરોપમ જ્ઞા. ૭ સાગરોપમ જ્ઞાહેરો

૫ બ્રહ્મા ૭ સાગરોપમ ૧૦ સાગરોપમ
૬ લાંતક ૧૦ સાગરોપમ ૧૪ સાગરોપમ

૭ મહાશુક્ર ૧૪ સાગરોપમ ૧૭ સાગરોપમ

८ सहस्रार १७ सागरोपम १८ सागरोपम
 ९ आनत १८ सागरोपम १९ सागरोपम
 १० प्राणत १९ सागरोपम २० सागरोपम
 ११ आरण २० सागरोपम २१ सागरोपम
 १२ अच्युत २१ सागरोपम २२ सागरोपम
 ए रीते वार देवलोकना देवतानुं आऊखुं कहयुं
 २ हवे बीजा नवग्रैवेयकनुं आऊखुं कहीये छीये
 नवग्रैवेयक नाम जघन्यआयु उत्कृष्टआयु
 १ सुदर्शन २२ सागरोपम २३ सागरोपम
 २ सुमतिवंत २३ सागरोपम २४ सागरोपम
 ३ मनोरम २४ सागरोपम २५ सागरोपम
 ४ सर्वमद्र २५ सागरोपम २६ सागरोपम
 ५ विशाल २६ सागरोपम २७ सागरोपम
 ६ सुमनस २७ सागरोपम २८ सागरोपम
 ७ सुमणूस २८ सागरोपम २९ सागरोपम
 ८ मियंकर २९ सागरोपम ३० सागरोपम
 ९ आदित्य ३० सागरोपम ३१ सागरोपम
 ए रीते नवग्रैवेयकना देवतानुं आऊखुं विवरीने कहयुं.
 ३ त्रीजा पांच अनुत्तर वैमानिक देवतानुं आऊखुं
 कहीये छिए.

अनुत्तरविमानना नाम जघन्यआयु उत्कृष्टआयु
 १ विजय ३१ सागरोपम ३३ सागरोपम
 २ विजयंत ३१ सागरोपम ३३ सागरोपम

૩ જયંત ૩૧ સાગરોપમ ૩૩ સાગરોપમ
 ૪ અપરાજિત ૩૧ સાગરોપમ ૩૩ સાગરોપમ
 ૫ સર્વાર્થસિદ્ધ ૩૩ સાગરોપમ ૩૩ સાગરોપમ

પ રીતે પાંચ અનુત્તર વિમાનના દેવતાનુ આદુ કહ્યું.
 હવે વૈમાનિક દેવતાના ૬૧ પ્રતર છે. તેનાંથી પ્રતરનું
 જુદુજુદું આકારનું ષટ્કૃષ્ટ તેનું યંત્ર વિવરીને લેવાઈ ઈષ્ટ.
 ૧ સુધર્મા અને જ્ઞાન દેવલોકને વિષે ૧૩ નેર પ્રતર
 છે તેનું આકારનાં યંત્ર તેમા જ્ઞાન સાધિક વાચ્ય તે
 સાગરોપમ તથા સાગરોપમનું તેરાલ ભાગ કહે છે.

પ્રતર	સાગરોપમ	ભાગ	છંદોક
૧	૦	૨	૧૩
૨	૦	૪	૧૩
૩	૦	૬	૧૩
૪	૦	૮	૧૩
૫	૦	૧૦	૧૩
૬	૦	૧૨	૧૩
૭	૧	૧	૧૩
૮	૧	૩	૧૩

૯	૧	૬	૧૩
૧૦	૧	૭	૧૩
૧૧	૧	૯	૧૩
૧૨	૧	૧૧	૧૩
૧૩	૨	૦	૧૩

સનત્કુમાર અને માદેદ્ર દેવલોકનો પ્રતર ૧૨ છે તે-
ના આઝ્ઞાનું યંત્ર. તેમાં માદેદ્ર સાધિક વાચ્ય
પ્રતર સાગરોપમ ભાગ છેદાંક

૧	૨	૬	૧૨
૨	૨	૧૦	૧૨
૩	૩	૩	૧૧
૪	૩	૮	૧૨
૫	૪	૧	૧૨
૬	૪	૬	૧૨
૭	૪	૧૧	૧૨

૮	૫	૪	૧૨
૯	૫	૧	૧૨
૧૦	૬	૨	૧૨
૧૧	૬	૭	૧૨
૧૨	૭	૦	૧૨

વ્રહ્મકલ્પે ૬ પ્રતર છે તેના આઠશ્લાનું યંત્ર

પ્રતર	સાગરોપમ	ભાગ	છેદાંક
૧	૭	૩	૬
૨	૮	૦	૬
૩	૯	૩	૬
૪	૯	૭	૬
૫	૯	૩	૬
૬	૧૦	૦	૬

લતકે ૬ પ્રતર છે તેનું ઉત્કૃષ્ટ આઠશ્લાનું યંત્ર

પ્રતર	સાગરોપમ	ભાગ	છેદાંક
૧	૧૦	૪	૬
૨	૧૧	૩	૬
૩	૧૨	૨	૬
૪	૧૩	૧	૬
૬	૧૪	૦	૬

મહાશુક્રે ૪ પ્રતર તેના આઝ્વાનું ચંત્ર.

પ્રતર	સાગરોપમ	ભાગ	છેદાંક
૧	૧૪	૩	૪
૨	૧૬	૨	૪
૩	૧૬	૧	૪
૪	૧૭	૦	૪

સહસાર દેવલોકનાં ૪ પ્રારના આઝ્વાનું ચંત્ર.

પ્રતર	સાગરોપમ	ભાગ	છેદાંક
૧	૧૭	૧	૪

૨	૧૭	૨	૪
૩	૧૭	૩	૪
૪	૧૮	૦	૪

આનત અને પ્રાણત એ બે દેવલોકના પ્રતર ૪ છે તે-
નું ઉત્કૃષ્ટ આયુરુ યંત્ર

પ્રતર	સાગરોપમ	ભાગ	છેદાંક
૧	૧૮ ૧૯	૧	૪
૨	૧૮ ૧૯	૨	૪
૩	૧૮ ૧૯	૩	૪
૪	૧૯ ૨૦	૦	૪

આરણ અને અંચુત એ બે દેવલોકના પ્રતર ૪ છે
તેનું ઉત્કૃષ્ટ આયુરુ યંત્ર

પ્રતર	સાગરોપમ	ભાગ	છેદાંક
૧	૨૦ ૨૧	૧	૪
૨	૨૦ ૨૧	૨	૪

३	२० २१	२	४
४	२१ २२	०	४

अथ नवग्रहैवेयकना प्रतर ९
छे तेनुं उत्कृष्ट आयुनुं यंत्र
प्रतर सागरोपम

१	२१ २३
२	२३ २४
३	२४ २५
४	२५ २६
५	२६ २७
६	२७ २८
७	२८ २९
८	२९ ३०
९	३० ३१

अनुत्तरे प्रतर १ तुं
उत्कृष्ट आयुनुं यंत्र
प्रतर सागरोपम

१	३१ ३३
---	-------

ए रीते वैमानिक देवताना ६२ प्रतरना आऊखानो
मान विवरिने कखो.

હવે વૈમાનિક દેવતાની દેવીનું આઝ઼હું લ઼઼ી઼ છી઼.
તેની વિગત.

૧ પેલા દેવલોકની દેવી પ્રગ્રહીત દેવીનું આઝ઼હું જ઼-
ન્ય ઇક પલ્લોપમ ઉત્કૃષ્ટ ૭ પલ્લોપમનું જાણવું અપ્ર-
ગ્રહીત દેવીનું આઝ઼હું જ઼ન્ય ઇક પલ્લોપમ અને ઉત્કૃ-
ષ્ટ ૬૦ પલ્લોપમનું જાણવું.

૨ વીજા દેવલોકની પ્રગ્રહીત દેવીનું આઝ઼હું જ઼ન્ય
૧ પલ્લોપમ શ્રાઢ્ઢેરુ અને ઉત્કૃષ્ટ ૧ પલ્લોપમનું જાણ-
વું અને અપ્રગ્રહીત દેવીનું આઝ઼હું જ઼ન્ય ૧ પલ્લોપમ
શ્રાઢ્ઢેરુ અને ઉત્કૃષ્ટ ૫૬ પલ્લોપમનું જાણવું

૩ કૃષ્ણરાજીનું લોકાતીત દેવતાનું આઝ઼હું સાગરો-
પમ ૮ નું જાણવું

૪ કલ્મષ દેવતા તે સુધર્મા ઇશાન દેવલોકને નીચે
તેનું આઝ઼હું જ઼ન્ય ઇક પલ્લોપમ અને ઉત્કૃષ્ટ ૩ પ-
લ્લોપમનું જાણવું

૫ સનત્કુમાર અને માહૈંદ્ર દેવલોક નીચે કલ્મષ આ
દેવતાનું આઝ઼હું જ઼ન્ય ઉત્કૃષ્ટ ૩ સાગરોપમનું જા-
ણવું.

૬ લાંતક દેવલોકને નીચે તેહનું આઝ઼હું જ઼ન્ય ઉ-
ત્કૃષ્ટ ૧૩ સાગરોપમનું જાણવું.

૭ રીતેં આયુઢ્ઢાર વિચાર વિસ્તારીને કહ્ઢો છે.

ઇતિ સત્તરમું આયુઢ્ઢાર સંપૂર્ણ

અથ અઢારમું પર્યાસીનું દ્વાર લિખ્યતે

અઢારમું પર્યાસીનું દ્વાર તેના છ ભેદ છે તેની વિગત

૧ આહાર પર્યાસી ૪ શ્વાસોચ્છ્વાસ પર્યાસી

૨ શરીર પર્યાસી ૫ ભાષા પર્યાસી

૩ ઇન્દ્રી પર્યાસી ૬ મનઃપર્યાસી

૧ રીતે પર્યાસી છ કહી તેમાંથી ત્રણ પર્યાસી વાંધ્યા-
વિના કાંઈ જીવ મરે નહીં. ઉપરાંત જે જીવની જેટલી
પર્યાસી હોય તેટલી પૂરી વાંધીને મરેતો પર્યાસો કહીએ.
અને જેની જેટલી પર્યાસી છે તે પર્યાસી પૂરી વાંધ્યા-વિ-
ના જીવ મરે નો તે જીવ અપર્યાસો કહીએ તે ચોવીસ
દંડકનેવિષે એકેક દંડકને પર્યાસી વિવરીને કહીએ છી
એ તેની વિગત.

પ્રથમ સાત નારકીના દંડકનેવિષે પર્યાસી ૬ હોય
પણ ભાષા પર્યાસી અને મનઃપર્યાસી એ બે સાથે હો-
ય તેથી પાંચ પર્યાસી પણ કહિયે

દશ પ્રકારના મવનપતિના દશ દંડકનેવિષે પર્યાસી
૬ હોય પણ ભાષા પર્યાસી અને મનઃપર્યાસી સાથે
હોય તેથી પાંચ પણ કહિયે.

પૃથ્વીકાયના દંડકનેવિષે પર્યાસી ૪ હોય તેની
વિગત.

૧ આહાર પર્યાસી ૩ ઇન્દ્રી પર્યાસી

૨ શરીર પર્યાસી ૪ શ્વાસોચ્છ્વાસ

અપ્પકાયના દંડકનેવિષે પર્યાસી પેઠી ૪ હોય

तेजकायना दंडकनेविषे पर्याप्ती पेली ४ होय
 वाउकायना दंडकनेविषे पर्याप्ती पेली ४ होय
 वनस्पतीकायना दंडकनेविषे पर्याप्ती पेली ४ होय
 वेंद्रीना दंडकने पर्याप्ती पेली पांच होय मनःपर्याप्ती
 वर्जाने

तेंद्रीना दंडकनेविषे पेली पांच पर्याप्ती होय
 चोरेंद्रीना दंडकनेविषे पेली पांच पर्याप्ती होय
 तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकनेविषे पर्याप्तीना २ भेद छे
 १ समुच्छिन्न तिर्यंच पंचेंद्रीनेविषे पेली ५ पर्याप्ती होय
 २ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीनेविषे छ पर्याप्ती होय
 मनुष्यना दंडकनेविषे पर्याप्तीना २ भेद छे.

१ समुच्छिन्न मनुष्यनेविषे पेली ४ पर्याप्ती होय
 २ गर्भज मनुष्यनेविषे ६ पर्याप्ती होय
 बाणबिंतरणा दंडकनेविषे पर्याप्ती ६ होय पण भा-
 षापर्याप्ती अने मनःपर्याप्ती साथे उपजे एटले पांच
 पर्याप्ती पण कहिये

ज्योतीषांना दंडकनेविषे ६ पर्याप्ती होय पण भा-
 षा अने मन साथे उपजे तेथी पांच पर्याप्ती कहिये.
 वैमानिक देवताना दंडकनेविषे पर्याप्ती ६ होय पण
 भाषा अने मनसाथे उपजे तेथी पांच पर्याप्ती कही
 ए रीते चोवीस दंडकनेविषे पर्याप्तीद्वार कह्युं.

इति श्री अढारसुं पर्याप्तीद्वार सपूर्ण.

અથ ઓગળીસમું દિગાહારદ્વાર લિખ્યતે.

હવે સમસ્ત સસારી જીવને છ દિશીનો આહાર હોય
તેની વિગત

૧ અધોદિશી ૨ ઉર્ધ્વદિશી ૩ પૂર્વદિશી ૪ પશ્ચીમદિ-
શી ૫ દક્ષિણદિશી ૬ ઉત્તરદિશી

૭ રીતે છ દિશીનો આહાર કહ્યું તે ચોવીસ દંડકને
ત્રિપે એક એક દંડકવાળા કેટલી દિશીનો આહાર
લે તેની વિગત.

પ્રથમ સાત નારકીના દંડકવાળા છ દિશીનો આહાર
લે

દશ પ્રકારના ભવનપતીના દશ દંડકવાળા ૬ દિ-
શીનો આહાર લે

પૃથ્વીકાયના દંડકવાળા ૩ અથવા ૪ થી ૫ અને
૬ દિશીનો આહાર લે

અપ્પકાયના દંડકવાળા ૩ અથવા ૪ થી ૫ અને ૬
દિશીનો આહાર લે

તેડકાયના દંડકવાળા ૩ અથવા ૪ થી ૫ અને ૬
દિશીનો આહાર લે

વાડકાયના દંડકવાળા ૩ અથવા ૪ થી ૫ અને ૬
દિશીનો આહાર લે

વનસ્પતિકાયના દંડકવાળા ૩ અથવા ૪ થી ૫ અને
૬ દિશીનો આહાર લે

વેંટ્રીના દંઢકવાલા ૬ દિશીનો આહાર લે
 તેંટ્રીના દંઢકવાલા ૬ દિશીનો આહાર લે
 ચરેટ્રીના દંઢકવાલા ૬ દિશીનો આહાર લે
 તિર્યેચપંચેટ્રીના દંઢકવાલા ૬ દિશીનો આહાર લે
 મનુષ્યપંચેટ્રીના દંઢકવાલા ૬ દિશીનો આહાર લે
 વાળવિનરના દંઢકવાલા ૬ દિશીનો આહાર લે
 જ્યાંતીવી દેવતાના દંઢકવાલા ૬ દિશીનો આહાર લે
 વૈમનિક દેવતાના દંઢકવાલા ૬ દિશીનો આહાર લે
 એ રીતે ચોવીસ દંઢકવાલા છ દિશીનો આહાર
 આહાર લે તેને વિગાહાર કહીયે
 એ રીતે ઓગળીસમું આહારદ્વાર કહયુ
 इति श्री आगणीसमु दिगाहारद्वार संपूर्ण

અથ વીસમું સંજ્ઞાદ્વાર લિખ્યતે.

સંજ્ઞા ૩ ત્રણ પ્રકારે કહી છે તેની વિગત
 ૧ દીર્ઘકાલિકી સંજ્ઞા ૨ હૃત્વોપદેશીકી સંજ્ઞા
 ૩ દૃષ્ટીવાદોપદેશીકી સંજ્ઞા
 એ રીતે સંજ્ઞાના ૩ ભેદ કહ્યા
 તેના લક્ષણ વિવરીને કહીએ છીએ.
 ૧ દીર્ઘકાલિકી સંજ્ઞા તેનો અર્થ એ છે જે તીર્થાં અતી-
 ત અનાગતતું ચેતવતું એમ ઉદય કરીને એમ કપ્યું મર-
 ચેતવતુ તેને દીર્ઘકાલિકી સંજ્ઞા કહીએ

२ ब्रोजी हेत्वापदेशिकी संज्ञा एटले समाना लागे जे
इजाये आवे भूव लागे आहार धाय भमे तेने हेत्वोप
देशिकीसंज्ञा कहिये

३ ब्रोजी दृष्टीवादोपदेशिकी संज्ञा एटले पूर्वज्ञाने अ
नुसरी मंत्र एम गणायें एम साधिये एम थशे एवी
उडी विचारणा करिये एवी चेतवणा करिये तेने दृष्टी
वादोपदेशिकी संज्ञा कहिये.

ए रीतें त्रण संज्ञानो अर्थ कही.

चोवीस दंडकनेविषे एक एक दंडकनी संज्ञा कहिये छिये

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे पेली दीर्घ काली-
की संज्ञा होय

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकनेविषे १ दीर्घ
कालीकी संज्ञा हाय

पृथ्वीकायना दंडकवालाने संज्ञा न होय

अप्यकायना दंडकवालो संज्ञा रहित होय

तेजकायना दंडकवालो संज्ञा रहित होय

वायकायना दंडकवालो संज्ञा रहित होय

वनस्पतिकायना दंडकवालो संज्ञा रहित होय

बेदनीना दंडकवालाने एक हेत्वोपदेशिकी संज्ञा होय

तैद्रीना दंडकवालाने एक हेत्वोपदेशिकी संज्ञा होय.

चोरंद्रीना दंडकवालाने एक हेत्वोपदेशिकी संज्ञा होय
 तिर्य्यच पंचेंद्रीना दंडकवालाने त्रण संज्ञा होय
 मनुष्य पंचेंद्रीना दंडकवालाने ३ संज्ञा होय
 वाणवितरना दंडकवालाने एक दीर्घकालिकी संज्ञा
 होय

ज्योतिषी देवताना दंडकवालाने एक. दीर्घकालिकी
 संज्ञा होय

वैमानिक देवताना दंडकवालाने एक दीर्घकालिकी
 संज्ञा होय

ए रीते चोवीस दंडकविचे संज्ञाद्वार कहयूं

इति बीससुं संज्ञाद्वार संपूर्ण.

अथ एकवीससुं गतिद्वार लिख्यते.

चोवीस दंडक माहेथी जीवो मरीने चोवीस दंडक मा-
 हेथी केटला दंडकयां जाय तेनी विगत

सात नारकीवाला चवीने वे दंडकमां जाय तेनी वि-
 गत

१ मनुष्य गर्भजमां जाय २ तिर्य्यच गर्भजमां जाय
 ए रीते वे दंडकमां जाय तेनी विगत

१ सातमी नरकमाथी निकलेलो गर्भज तिर्य्यचगा जाय

२ छठी नरकमाथी नीकलेलो मनुष्य धाय पण
 साधु न धाय

३ पांचमी नरकमाथी नीकलेलो साधु थाय पण
केवली न थाय

४ चौथी नरकमाथी नीकलेलो केवली थाय पण
तीर्थंकर न थाय

५ तीजी नरकमाथी नीकलेलो तीर्थंकर थाय पण
बलदेव वासुदेव न थाय

६ बीजी नरकमाथी नीकलेलो बलदेव वासुदेव
थाय पण चक्रवर्ती न थाय

७ पेली नरकमाथी नीकलेलो तीर्थंकर चक्रवर्ती
बलदेव वासुदेव थाय

ए रीते बे दंडकमा जाय तेन्नी त्रिगत कही
दश प्रकारना भवनपतिना दंडकवाला चवीने पांच दं-
डकनेविषे जाय तेनी विगत

१ मनुष्य २ तीर्थचपंचेंद्री ३ पृथ्वीकाय
४ अप्पकाय ५ वनस्पतीकाय
पृथ्वीकायना दंडकवाला चवीने दश दंडकनेविषे जाय
तेनी विगत

५ थावरना दंडकमा १ मनुष्यना दंडकमा
३ विगलेंद्रीना दंडकमा १ तीर्थचपंचेंद्री

ए रीते दश दंडकनेविषे उपजे
अप्पकायना दंडकवाला चवीने दश गतिना दंडकमा

५ थावरना दंडकमा १ मनुष्यना दंडकमा
३ विगलेंद्रीना दंडकमा १ तीर्थच पंचेंद्रीना

ए रीते दश दंडकमा जई उपजे

तेउकायना दंडकवाला चवीने ९ दंडकमा जाय

५ थावरना दंडकमा ३ विमलेंद्रीना दंडकमा

१ तिर्यचपचेंद्रीना

वाउकायना दंडकवाला चवीने ९ दंडकमा जाय

५ थावरना दंडकमा ३ विगलेंद्रीना दंडकमा

१ तिर्यचपचेंद्रीना दंडकमा

वनस्पतिकायना दंडकवाला चवीने १० दंडकमा जा-
य तेनी विगत

५ थावरना दंडकमा १ मनुष्यपचेंद्रीना

३ विगलेंद्रीना दंडकमा १ तिर्यचपचेंद्री

ए रीते दस दंडकमा जई उपजे

बेंद्रीना दंडकवाला चवीने १० दंडकमा जाय तेनी
विगत

५ थावरना दंडकमा १ मनुष्यना दंडकमा

३ विगलेंद्रीना दंडकमा १ तिर्यचपचेंद्री

ए रीते दश दंडकमाह उपजे

तेंद्रीना दंडकवाला चवीने १० दंडकमा जाय तेनी
विगत

५ थावरना दंडकमा ३ विगलेंद्रीना दंडकमा

१ तिर्यचपचेंद्री १ मनुष्यना दंडकमा

चोरेंद्रीना दंडकवाला चवीने १० दंडकमा जाय तेनी
विगत

૫ યાવરના દંડકમા ૩ વિગલેંદ્રીના દંડકમાં

૧ તિર્યચપચેંદ્રી ૧ મનુષ્યના દંડકમા

તિર્યચપચેંદ્રીના દંડકના ૨ મેદ છે. તેની વિગત

૧ સુહૃદિમ તિર્યચપચેંદ્રીવાળા મરીને એક જ્યોતિ-
પી અને વીજો વૈગાનિક એ વે દંડક વર્જાને
વાકી ૨૨ દંડકમા જઈ ઉપજે

૨ ગર્ભજતિર્યચવાળા મરીને ૧૪ દંડકમાં જઈ ઉ-
પજે એ રીતે તિર્યચપચેંદ્રીના ૨ મેદ કહ્યા
મનુષ્યના ૧ મેદ છે તે મરીને કયા દંડકનેવિરે જા-
ય તેની વિગત

૧ સુહૃદિમ મનુષ્યવાળો મરીને દશ દંડકમાં
જાય તેની વિગત

૬ યાવરના દંડકમાં ૧ તિર્યચપચેંદ્રીના દંડકમાં

૩ વિગલેંદ્રીના દંડકમાં ૧ મનુષ્યના દંડકમાં

એ રીતે દશ દંડક માટે જઈ ઉપજે

૨ ગર્ભજ મનુષ્યવાળો મરીને ૧૪ દંડકમાં જાય

એ રીતે મનુષ્યના વે મેદ વિગતરીને કહ્યા

વાળવિનરના દંડકવાળો મરીને પાંચ દંડક માટે
જાય તેની વિગત

૧ પૃથ્વીકાદના દંડકમાં

૧ અપ્પકાયના દંડકમાં

૧ વનસ્પતીકાયના દંડકમાં

૧ તિર્યચપચેંદ્રીના દંડકમાં

૧ મનુષ્યના દંડકર્મા
 ૧ રીતે પાંચ દંડકર્મા જઈ ઉપજે
 જ્યોતીર્ણના દંડકર્મા મરીને ૫ દંડકર્મા જે જાય તે
 ની વિગત

૧ પૃથ્વીકાયના દંડકર્મા

૨ અગ્નિકાયના દંડકર્મા

૩ વનસ્પતીકાયના દંડકર્મા

૪ તિર્યચપચ્છેદીનાં દંડકર્મા

૫ મનુષ્યના દંડકર્મા

૧ રીતે ૫ દંડકર્મા જે જઈ ઉપજે
 વૈમાનિકના દંડકર્માના ગ્રણ મેદ છે તે દર્શીને ક-
 યા દંડકર્મા જાય તેની વિગત

૧ પેલા દેવલોકવાલા અને વીજા દેવલોકવાલા ચર્વા
 ને ૫ દંડકર્મા જાય

૧ પૃથ્વીકાયના દંડકર્મા

૨ અગ્નિકાયના દંડકર્મા

૩ વનસ્પતીકાયના દંડકર્મા

૪ તિર્યચપચ્છેદીના દંડકર્મા

૫ મનુષ્યકાયના દંડકર્મા

૨ ગ્રીજે, ચોયે, પાંચમે, છઠે, સાતમે, આઠમે,
 ૧ છ દેવલોકવાલા ચર્વાને ૬ દંડકર્મા જે જઈ ઉપજે
 તેની વિગત

૧ ગર્ભજતિર્યચ

૨ ગર્ભજ-મનુષ્ય

१ नवमो, दशमो, इग्यारमो, बोरमो, ए चार दे-
वलोकवाला अने नवग्रहवेयकवाला पांच अनुचरविमा-
नवाला ए देवता चर्चने १ अनुष्य गर्भजमा जाय
ए रीति वैमानिक देवताना ३ भेद कथा.
ए रीति चोवोस दंडकवाला मरीने किया किया दंड-
कमा उपजे तेनो खुलासो वियरीने कथा
इति श्री एकवीसमुं गतिद्वार संपूर्ण.

अथ बावीसमुं आगतीद्वार लिख्यते.

चोवीस दंडकमाहे एकेक दंडकनेविषे केटलां दंडकवा-
ला मरीने आवी उपजे तेनो आगतिद्वार लखीए छी-
ए तेनी विगत

प्रथम सात नारकीनां दंडकमा २ दंडकमाथी आवीने
उपजे तेनी विगत

१ तिर्यचपंचेंद्री १ गर्भजमनुष्ये

ए रीते वे दंडकवाला नारकीमाहे उपजे

ए वे दंडकवालामाथी सात नारकीनेविषे कथा.

दंडक केटली नारकी लगे जाय तेनुं मयाज कहेछे.

१ सप्तुछिंभ तिर्यचपंचेंद्री पेछी नारकीलगे
जाय

२ गर्भज भुजपरिसर्प बीजी नारकलगे जाय

३ गर्भज खेचर बीजी नारकीलगे जाय

४ गर्भजथलचर तिर्यंच मरीने चोथो नरकलगे

जाय

५ गर्भज उरपरी सर्प मरीने पांचमी नरकलगे

जाय,

६ मनुष्यनी स्त्री मरीने छठी नरकलगे-जाय

७ मनुष्य अने माछला ए मरीने सातमी नरकल

गे जाय

ए रीते के दंडकवालाचे साते नरकदुखो जवानो
विचर विचरीने कळो

दश-प्रकारना भवनपातिना दश दंडकमाहे के दंडक-
वाला आवी उपजे,

१ गर्भजमनुष्य २ तिर्यंचपंचेंद्री

पृथ्वीकायना दंडकमाहे १ नारकी वर्जिते बाकी, २३
दंडकवाला आवे,

अप्यकायना दंडकमाहे १ नारकी वर्जिते बाकी, २३
दंडकवाला उपजे

तेउकायना दंडकमाहे १० दंडकवाला-आवी उपजे ते-
नी विगत-

५ थावरना ३ विगलेंद्रिना १ तिर्यंचपंचेंद्रीना

१ मनुष्यना

ए-रीते दश दंडकवाला मरीने आवी-उपजे

व उकायना दंडकमाहे १० दंडकवाला आवी उप

जे तेनी विगत

५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेद्रीना

१ मनुष्यना

वसुपतीकायना दंडकमाहे १ नारकी वज्रिने वाकी

२३ दंडकवाला उपजे

वेंद्रीना दंडकमाहे १० दंडकवाला आवीने उपजे
तेनी विगत

५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेद्रीना

१ मनुष्यना

तेंद्रीना दंडकमाहे १० दंडकवाला आवी उपजे तेनी
विगत

५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेद्रीना

१ मनुष्यना

चोरेंद्रीना दंडकमाहे १० दंडकवाला आवीने उपजे ते-
नी विगत

५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेद्रीना

१ मनुष्यना

तिर्यचपंचेद्री दंडकमाहे वे भेद छे तेनी विगत

१ समुल्लिखित तिर्यच पंचेद्रीनाहे १० दंडकवाला आ-
वीने उपजे

५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेद्रीना

मनुष्यना

२ गर्भज तिर्यचपंचेद्रीमाहे २४ दंडकवाला आवीने
उपजे

૧ રીતે તિર્યચપચ્છેદ્રીના ૨ મેદ કહ્યા
મનુષ્યપચ્છેદ્રીના દંડકના ૨ મેદ કહે છે
૧ સમુદ્ધીન મનુષ્યવાલા માહે ૮ દંડકવાલા આવી
ઉપજે તેની વિગત

૧ પૃથ્વીકાયના ૨ અપ્પકાયના ૩ વનસ્પતીકાયના
૪ વૈદ્રીના ૫ તૈદ્રીના ૬ ચોરેદ્રીના ૭ તિર્યચપચ્છેદ્રીના
૮ મનુષ્યના

૨ ગર્ભજ મનુષ્યમાહે ૧ તેડ અને ૧ વાડ ૧ વર્જીને
વાકી ૨૨ દંડકવાલા આવી ઉપજે અને ૧૬ મનુષ્ય
દંડકવાલા કર્મક્ષય કરી મોક્ષે પળ જાય
૧ રીતે મનુષ્ય દંડકના વે મેદ કહ્યા.

વાપર્ધિનરના દંડકમાહે વે દંડકવાલા આવીને ઉપજે
૧ તિર્યચપચ્છેદ્રી ૧ મનુષ્યગર્ભજ
જ્યાતોપીદેવતાના દંડકમાહે વે દંડકવાલા આવી
ઉપજે

૧ તિર્યચપચ્છેદ્રી ૨ મનુષ્યગર્ભજ
વૈમાનીક દેવતાના દંડકના ૨ મેદ છે તેની વિગત
૧ પેલા દેવલોકથી આઠમા દેવલોકમાહે ૨ દંડકવા-
લા આવી ઉપજે

૧ તિર્યચપચ્છેદ્રી ૧ ગર્ભજમનુષ્યપચ્છેદ્રી
૨ નવમા દેવલોકથી ચારમા દેવલોકસુધી ૧
ચાર દેવલોક અને નવગ્રંથાયક પાંચ અતુત્તર વિમાન
પટલા માહે ૧૬ મનુષ્ય આવીને ઉપજે

ए रीते वैमानिक देवतानी आगती कही
 ए रीते चौबीस दंडकनेविषे आगतीद्वार कह्युं
 इति श्री वावीसमुं आगतीद्वार संपूर्ण.

अथ त्रेविसमुं वेदद्वार लिख्यते

वेदद्वारनेविषे त्रण वेद छे तेनी विगत
 १ पुरुष वेद २ स्त्री वेद ३ नपुसक वेद
 ए रीते त्रण वेद कक्षा पण चौबीस दंडकमाहे एक
 एक दंडकनेविषे केटला केटला वेद होय ते-
 नी विगत
 सात नारकीना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
 दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकनेविषे वे वेद होय
 १ पुरुषवेद २ स्त्रीवेद
 पृष्ठीकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
 अप्पकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
 तेजकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
 वाजकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
 वनस्पतीकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
 वैत्रीना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
 तैत्रीना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
 चोरंत्रीना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
 तिर्यचपंचैत्रीना दंडकना २ भेद छे तेनी विगत

१ समुद्धिम तिर्यचने एक नपुसक वेद होय
 २ गर्भज तिर्यचने त्रण वेद होय-१ पुरुषवेद २ स्त्री
 वेद ३ नपुसकवेद

मनुष्यपंचेंद्रीना बे भेद छे तेनी बिगत

१ समुद्धिम मनुष्यने एक नपुसक वेद होय
 २ गर्भज मनुष्यने त्रण वेद होय

वाणवितरना दंडकनेविषे १ वेद होय

१ पुरुषवेद २ स्त्रीवेद

ज्योतीषीना दंडकनेविषे बे वेद होय

१ पुरुषवेद २ स्त्रीवेद

वैमानिक देवताना दंडकना बे भेद छे तेनी बिगत

अथ चोवीसमुं अठाणुं बोलनुं अल्पाबहु-
 त्वद्वार विचार लिख्यते.

प्रथम सर्व थकी थोडा गर्भज मनुष्य संख्याती कोडा
 कोडी प्रमाण ते माटे

ते थकी मनुष्यनी स्त्री संख्यात गुणी अधिक ते स-
 त्यावी सगुणी अधिक पामीइ ते माटे ए बे बोल म-
 लीने अढी द्विषमां १०१ क्षत्रना मनुष्य तेनी संख्या

७९२२८१६२५, ४२६४३३७५९३५४३९५०३३६

मात त्रोट कोडा कोडी कोडी वाणू लाख कोडी को-

बी अठावीस हजार कोडा कोडी कोडी एकसो कोडा
 कोडी कोडी वासष्ट कोडा कोडी कोडी एकावन्न लाख
 कोडा कोडी वेतालीस हजार कोडा कोडी छत्ता कोडा
 कोडी त्रैतालीस कोडा कांडी सणत्रांस लाख कांडी
 ओगणसाठ हजार कांडी त्रणसो कांडी चोपन कोडी
 ओणचार्लिस लाख पचास हजार त्रनसो छत्रांस
 ए रीते ओगणतीस आंकनी संख्या कही तेटडा मनु
 द्य जाणवा

तेह्यकी बादर तेऊकाय पर्याप्त असंख्य गणा ते
 किमजे एक आवलीकाना समयनुं वर्ग करीका इक
 न्यून आवलीका समय साथे गणता जे तलासम य-
 थाए ते प्रमाणे हाँय ते माटे

तेह्यकी अनुतर विमानना देवता असंख्य गणा छे
 क्षेत्र पल्योपमने असंख्यान भे भ.गे जेटला आकाश
 प्रदेश होय तेटला होय ते माटे

तेह्यकी उपरला त्रिकप्रैवेयकना देवता संख्यात
 गणा छे

तेह्यकी मध्य त्रिनप्रैवेयरुना देवता संख्यात गणा छे
 तेह्यकी हेटरला त्रिकप्रैवेयकना देवता संख्यात ग-
 णा छे

तेह्यकी अच्युत देवलोकना देवता संख्यात गणा छे
 तेह्यकी आरण देवलोकना देवता संख्यात गणा छे
 तेह्यकी प्राणत देवलोकना देवता संख्यात गणा छे

તેહયકી આખત દેવલોકના દેવતા સંખ્યાત ગણા છે
તેહયકી હેટલી સાતમી નરક તમસતમઃપ્રમા પૃથ્વીના
નારકી અસંખ્ય ગણા છે

એક શ્રેણીના અસંખ્યાત ભાગમાં જે આકાશ પ્રદેશરા
શિ તે પ્રમાણે છે તે માટે

તેહયકી છઠી તમઃપ્રમા પૃથ્વીના નારકી અસંખ્ય
ગણા છે નરકવાસા ઘણા છે મટે અને હત્કુટ
પાપકારી થકી હીન પાપકારી ઘણા છે માટે

તેહયકી સહસાર દેવલોકના દેવતા અસંખ્ય
ગણા છે

તેહયકી મહાશુક્રે દેવતા અસંખ્ય ગણા છે વિમાન
ઘણા છે માટે

તેહયકી પાંચમી ધૂમપ્રમા પૃથ્વીમા નારકી અસંખ્ય
ગણા છે

તેહયકી લાંતક દેવલોકે દેવતા અસંખ્ય ગણા છે.

તેહયકી ચોથી પંકપ્રમા પૃથ્વીમા નારકી અસંખ્ય
ગણા છે

તેહયકી બ્રહ્મદેવલોકે દેવતા અસંખ્યાત ગણા છે

તેહયકી ત્રીજી વાલુકપ્રમા પૃથ્વીમાં નારકી અસંખ્ય
ગણા છે

તેહયકી માંહેદ્ર દેવલોકે દેવતા અસંખ્ય ગણા છે

તેહયકી સનત્કુમાર દેવલોકે દેવતા અસંખ્ય ગણા છે

તેહયકી શર્કરપ્રમા પૃથ્વીમાં નારકી અસંખ્ય ગણા છે

વારમા બોલયી ત્રેવીસમાં બોલ લખે એ વાર કોલ પ્ર-
ત્યેકે સર્વ ઘણીકૃત લોકની એક શ્રેણીને અસંખ્ય તમે
યાગે જેટલા આકાશ પ્રદેશ હોય તે પ્રમાણે છે અને
એક એકથી અસંખ્ય ગણા છે અસંખ્યાના અસંખ્ય
ભેદ છે તે માટે વિરુદ્ધ નહીં

તેહયકી સમુર્ધિમ મનુષ્ય અસંખ્ય ગણા છે અંગુલમાત્ર
ક્ષેત્ર તેમા જેટલા આકાશ પ્રદેશ શ્રેણીનેવિષે જેટલા
છે તેટલા છે તે માટે

તેહયકી ઈશાન દેવલોકે દેવતા અસંખ્ય ગણા છે અંગુ-
લમાત્ર ક્ષેત્ર પ્રદેશરાશી રાવધી દ્વિતિય વર્ગમૂલ તૃતીય
વર્ગમૂલસાથે ગુણતા જેટલા પ્રદેશ થાય તેટલી ઘનીકૃ-
ત લોકની એક પ્રદેશની શ્રેણીનેવિષે જેટલા આકાશ
પ્રદેશ હોય તેટલા છે તે માટે

તેહયકી ઈશાન્ય દેવલોકે દેવી સંખ્યાત ગણા છે વ-
ત્રીસ ગુણી અધીક છે માટે

તેહયકી સૌધર્મ દેવલોકે દેવતા સંખ્યાત ગણા છે
વિમાન ઘણા માટે અને દક્ષીણ દિશી કુણ્ણપક્ષી ગ-
ણા છે માટે

તેહયકી સૌધર્મ દેવલોકે દેવી સંખ્યાત ગણા છે તે
વત્રીસ ગુણી છે માટે

તેહયકી ભવનપતિ દેવતા અસંખ્ય ગણા છે અંગુલમા-
ત્ર આકાશક્ષેત્ર પ્રદેશ રાશોત્તંબી પ્રથમ વર્ગમૂલસાથે
ગુણતા જેટલા પ્રદેશ થાય તેટલી ઘનીકૃત લોકની

એક પ્રદેશની શ્રેણીનિષેષે જેટલા આકાશ પ્રદેશ હોય
તેટલા છે તે માટે

તેજ્યકી ધવનયનિર્ના દેરી સંખ્યાત ગુણી છે વત્રાસ
ગુણી છે

તેજ્યકી એક રત્નમ્ભા પૃથ્વીમાં નારકી અમંલ્ય ગણા
છે અગુલમાત્ર જે પ્રદેશરાણી સર્વથી પ્રથમ વર્ગ મૂલ
ગણીત દ્વિતીય વર્ગ મૂલપ્રમાણ શ્રેણીનિષેષે જેટલા
આકાશ પ્રદેશ હુએ તેટલા છે

તેજ્યકી સ્વેચર પંચેત્રીતિર્યંચ યોનીયા પુરુષ અસંખ્ય
ગણા છે એક પ્રદેશ પ્રતર અસંખ્યાત ભાગવર્તી અસં-
ખ્યાન શ્રેણી ગત આકાશ પ્રદેશ પ્રમાણ છે તે માટે
તેજ્યકી સ્વેચર પંચેત્રી તિર્યંચ યોની યાની સ્ત્રી સંખ્યા-
ત ગુણી ત્રિગુણી છે તે માટે

તેજ્યકી થલચર પંચેત્રી તિર્યંચ યોની યા પુરુષ સંખ્યા-
ત ગણા છે એક અતર અસંખ્ય ભાગવર્તિ પ્રભૂત અસં-
શ્રેણીગત આકાશ પ્રદેશ રાશીપ્રમાણે છે તે માટે

તેજ્યકી થલચર પંચેત્રી તિર્યંચ યોનીઆની સ્ત્રીની સં-
ખ્યાત ગુણી ત્રિગુણી છે તે માટે

તેજ્યકી જલચર પંચેત્રી તિર્યંચ યોનીયા પુરુષ સંખ્યા
ત ગણા છે એક પ્રતર અસંખ્યાત ભાગવર્તી અતી
પ્રભૂત અસંખ્યાત શ્રેણીગત આકાશ પ્રદેશ રાશી
પ્રમાણે છે તે માટે

તેજ્યકી જલચર પંચેત્રી તિર્યંચ યોનીઆની સ્ત્રી સં-

સંખ્યાત ગણી છે ત્રિગણી છે તે માટે

તેહથકી વ્યંતર દેવતા સંખ્યાત ગણા છે એક પ્રતરને-
વિષે સંખ્યાત કોડા કોડી યોજન પ્રમાણ સૂચીરૂપ સ્વં-
ડ જેટલા થાય તેટલા છે તે માટે

તેહથકી વાણવિંતરી દેવી સંખ્યાત ગણી છે વત્રીસ ગ-
ણી તે માટે

તેહથકી જ્યોતિષી દેવતા સંખ્યાત ગણા છે એક પ્રતર-
નેવિષે વસદ્ગુણ અંગુલ પ્રમાણ સૂચીરૂપ સ્વંડ જેટલા
થાય તેટલા થાય તેટલા છે તે માટે

તેહથકી જ્યોતિષીની દેવી સંખ્યાત ગણી વત્રીસગણી
છે તે માટે

તેહથકી સ્વેચર પંચેદ્રી તિર્યંચ યોનિયા નપુરુક સં-
ખ્યાત ગણા છે

તેહથકી થલચર પંચેદ્રી તિર્યંચ યોનિયા નપુરુક સં-
ખ્યાત ગણા છે

તેહથકી જલચર પંચેદ્રી તિર્યંચ યોનિયા નપુરુક સં-
ખ્યાત ગણા છે

તેહથકી ચારેદ્રી પર્યાસા સંખ્યાત ગણા છે એક પ્રતરને-
વિષે અગલ સંખ્યાત ભાગ માત્ર સૂચીરૂપ સ્વંડ જેટલા
હોય તેટલા છે

તેહથકી પંચેદ્રી સર્વ પર્યાસા વિશેષાધિક છે

તેહથકી ચેદ્રી પર્યાસા વિશેષાધિક છે

તેહથકી ત્રેદ્રી પર્યાસા વિશેષાધિક છે

તેહયકી અપર્યાપ્તા અસંખ્ય ગણા છે એક પ્રતર ગત અ-
ગુલ અસંખ્ય થા। માત્ર સૂચીસંહ પ્રમાણ છે તે માટે
તેહયકી ચોરેંદ્રી અપર્યાપ્તા વિશેષાધિક છે
તેહયકી તેંત્રી અપર્યાપ્તા વિશેષાધિક છે
તેહયકો વેંદ્રી અપર્યાપ્તા વિશેષાધિક છે
તેહયકી પ્રત્યેક ઝારીરી વાદર વનસ્પતિ કાચીઆ અ-
પર્યાપ્તા અસંખ્ય ગણા છે એક પ્રતર ગત પ્રથૂત અગુલ
અસંખ્ય ભાગ સૂચીસંહ જેટલા હોય તેટલા છે તે
માટે

તેહયકી વાદર નિગેદ પર્યાપ્તા અસંખ્ય ગણા છે સં-
ખ્યાત પ્રતર ગત અસંખ્ય ભાગ માત્ર સૂચીસંહ પ્રમા-
ણ માટે

તેહયકી વાદર પૃથ્વીકાચીઆ પર્યાપ્તા અસંખ્ય ગણા
છે પ્રથૂત સંખ્યાત પ્રતર ગત અગુલ અસંખ્ય ભાગમાત્ર
સૂચી સંહ પ્રમાણ માટે

તેહયકી વાદર અપ્પકાચીઆ પર્યાપ્તા અસંખ્ય ગણા
છે અતિ પ્રથૂત સંખ્યાત પ્રતર ગત અગુલ અસંખ્ય
ભાગમાત્ર સૂચીસંહ પ્રમાણ માટે

તેહયકી વાદર વાઝવાચીઆ પર્યાપ્તા અસંખ્ય ગણા
છે ધનીકૃત લોકના અસંખ્ય પ્રતર ગત આકાશ પ્રદે-
શ રાદીપ્રમાણ છે તે માટે

તેહયકી વાદર તેજકાચીઆ અપર્યાપ્તા અસંખ્ય ગણા
છે અતિ પ્રથૂત સંખ્યાત પ્રતર ગત આકાશ પ્રદેશ
રાદીપ્રમાણ છે તે માટે

तेहथकी प्रत्येक शरीर वादर वनस्पतिकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी वादर निगोद अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी वादर पृथ्वीकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी वादर अप्पकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी वादर वाजकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी सूक्ष्म तेजकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे सर्व लोक व्यापी गाटे

तेहथकी सूक्ष्म पृथ्वीकायिआ अपर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म अप्पकायिआ अपर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म वाजकायिआ अपर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म तेजकायिआ पर्याप्ता संख्यात गणा छे

इहां सूक्ष्ममा श्वावेज अपर्याप्तायी पर्याप्ता घणा छे गाटे

तेहथकी सूक्ष्म पृथ्वीकायिआ पर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म अप्पकायिआ पर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म वाजकायिआ पर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता संख्यात गणा छे

तेहथकी सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यात गणा छे

तेहथकी अभव्य सिद्धिआ अनंत गणा छे जघन्ययु-

જ્ઞાનત પ્રમાણ માટે

તેહયકી પ્રતિ પતિત સમ્યક્દૃષ્ટી અનંત ગણા છે
તેહયકી સિદ્ધ અનંત ગણા છે મધ્યમ યુક્ત અનંત પ્રમા-
ણ માટે

તેહયકી વાદર વનસ્પતિકાચિઆ પર્યાપ્તા અનંત ગણા
છે એક નિગોદને અનંતમે ભાગે સિદ્ધ છે એહવા અસ-
ંખ્ય નિગોદ પર્યાપ્તા વાદર વનસ્પતિમાહે છે તે માટે
તેહયકી વાદર જીવ પર્યાપ્તા વિશેષાધિક છે વાદર
પર્યાપ્તા પૃથ્વ્યાદિક ભેલ તે માટે

તેહયકી વાદર વનસ્પતિકાચિઆ અપર્યાપ્તા અસંખ્ય
ગણા છે વાદરમાહે એકેક પર્યાપ્તાની નિશ્રાઈ અસંખ્ય
અપર્યાપ્તા નિશ્ચયે હોય તે માટે

તેહયકી વાદર અપર્યાપ્તા વિશેષાધિક છે વાદર અપ-
ર્યાપ્તાચિયે પૃથ્વ્યાદિક ભેલા છે તે માટે

તેહયકી સર્વ જીવ વાદર વિશેષાધિક છે પર્યાપ્તા અપ-
ર્યાપ્તા ભેલા છે તે માટે

તેહયકી સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિઆ અપર્યાપ્તા અસંખ્ય
ગણા વાદરથી સૂક્ષ્મ ઘણાં અને સર્વ લોકવ્યાપી માટે
તેહયકી સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તા વિશેષ છે સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત પૃ-
થ્વ્યાદિ ભેલા છે તે માટે

તેહયકી સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાચિઆ પર્યાપ્તા સંખ્યાત ગ-
ણા છે સૂક્ષ્મ માહે અપર્યાપ્તા ઘણા માટે

તેહયકી સૂક્ષ્મ જીવ પર્યાપ્તા વિશેષાધિક છે સૂક્ષ્મ પ-
ર્યાપ્તા પૃથ્વ્યાદિ ભેલતા

તેહથકી સર્વ સૂન્મ જીવ વિશેષાધિક છે સૂન્મ પર્યા-

મા અપર્વાતા મેલતા

તેહથકી મદાસિદ્ધિક મધ્ય જીવ વિશેષાધિક છે જે

જઘન્ય યુક્તાનત પ્રમાણ અમધ્ય ટાલી વીજા સર્વ જી-

વ મધ્ય છે તે માટે

તેહથકી નિગોદના જીવ વિશેષાધિક છે જે મળી નિ-

ગોદના જીવ ટાલી વીજા સર્વ જીવ અસંખ્ય લોકા-

કાશ પ્રદેશ પ્રમાણેજ છે

તેહથકી વનસ્પતિના જીવ વિશેષાધિક છે નિગોદમાં

પ્રત્યેક વનસ્પતિના પળ મેલવાથી

તેહથકી એકંદ્રી વિશેષાધિક છે વનસ્પતિમાહે પૃથ્વ્યા-

દિકના પળ મેલવાથી

તેહથકી નિર્ધેચ યોનીઆ વિશેષાધિક છે વેદ્રીયાદ્રિ-

કના પળ મેલવાથી

તેહથકી મિથ્યાદૃષ્ટી વિશેષાધિક છે ચારભાતિના મિ-

થ્યાદૃષ્ટી મેલતા

તેહથકી અવિરતિ વિશેષાધિક છે અવિરતિ સમ્યક્દ-

ૃષ્ટી પળ મેલવાથી

તેહથકી સકલાથી વિશેષાધિક છે દેશવિરત્યાદિકના

મેલવાથી

તેહથકી હ્રસ્વ વિશેષાધિક છે ઉપજાંત મોહના પળ

મેલવાથી

તેહથકી સયોગી વિશેષાધિક છે તે સયોગી કેવલીના

પળ મેલ ॥થી

તેહયત્તો સર્વ સંસારી જીવ વિશેષાધિક છ અયાગી
 કેવલીના પળ મેલવાથી
 તેહયત્તો સર્વ જીવ વિશેષાધિક છે સિદ્ધના જીવ પળ
 પ્રસંપવાયકી
 રૂતિ ચ.વોસમું અઝાગુ વં.લગું અરુપાધિત્વદ્વાર સંપૂર્ણ.

અથ પચીમ્મું ભવનદ્વાર લિખ્યતે

ભવનદ્વાર કહિયે ઊંચિ તે એક મલુચ્ચના દંડક અને
 વીજા તિર્યચપચ્છેત્રીના નવ દંડક એ દશ દંડકનેવિ-
 પે ભવન ન હોય તે કેમ જે અશાશ્વતા પદાર્થ છે તે
 માટે અને નારકીના એક દંડક તથા દેવતાના
 ૧૩ દંડક એટલે એ ચૌદ દંડકનેવિષે ભવન હોય
 અને એ શાશ્વતા પદાર્થ છે તે માટે તેહવે એ ચૌદ દં-
 ઢકના ભવનદ્વાર કહીયે ઊંચિ તેની વિગત.

પ્રથમ સાત નારકીના દંડકનું ભવનદ્વાર કહે છે

૧ પૃથ્વીનું પિંડ જ હપમે ૨ નરકાવાસ ૩ પાથડા
 ૪ રીત માત નરકીનેવિષ એ ત્રણ ભેદ લખ્યા છે
 તેના એકેક નરકનવિષ છુલાસો કરીને લખીએ હીએ

૧ પ્રથમ રત્નરૂપા નરકનેવિષ

૩૦ લાલ નરકાવાસ ૧ લાલ ૮૦ હજાર પૃથ્વીનો
 પિંડ ૧૩ પાથડા

૨ વીજી સ્ફુગરૂપા નરકનેવિષે

२५००००० नरका वासा १३२००० पृथ्वीनो पिंड

११ पाथडा

३ त्रिजी वालुकप्रभा नरकनेविषे

१५००००० नरका वासा १२८००० पृथ्वीनो पिंड

९ पाथडा

४ चोथी पंकप्रभा नरकनेविषे

१०००००० नरकावासा १२०००० पृथ्वीनो पिंड

७ पाथडा

५ पांचमी धूमप्रभा नरकनेविषे

३०००००० नरकावासा ११८००० पृथ्वीनो पिंड

५ पाथडा

६ छठी तमःप्रभा नरकनेविषे

९९९९९ नरकावासा ११६००० पृथ्वीनो पिंड

३ पाथडा

७ सातथी तमस्तमःप्रभा नरकनेविषे

५ नरकावासा १०८००० पृथ्वीनुं पिंड १ पाथडा

ए रीतें सान नरकनेविषे चौराशी लाख नरका

वासा अने ४९ पाथडा कक्षा

दश प्रका ना दश भवनपतिना दश दंतकनेविषे

दश निक्रायना वे श्रेणीना भवनद्वार कहिये ते-

नी विगत

१ प्रथम भवनपतिना दक्षीण श्रेणीना दश इंद्रना नां-

म तथा भवन लिख्यते

१० नि १० दक्षिणना नाम दक्षीणदगना भवन

१ अक्षु-कुमार	चमण्ड	३४ लाख
२ नाक्षुमार	धरण्ड	४४ लाख
३ सुवर्णकुमार	वेणुदेव	३८ लाख
४ विष्णु-कुमार	हरीकांत	४० लाख
५ अग्नीकुमार	अगनीगी	४० लाख
६ दीपकुमार	पुरण्ड	४० लाख
७ उज्ज्वीकुमार	जलकांत	४० लाख
८ मिनि-कुमार	अग्नीत	४० लाख
९ वायु-कुमार	वल्लंड	५० लाख
१० रत्ननितकुमार	घण्ड	४० लाख

ए रीते भवनपति देवताना दक्षिण श्रेणीना दस इन्द्रा
भवन ४०६००००० ए रीते चार क्रोड ने छ लाख
भवन जाणवा

२ बीजा भवनपतिना उत्तर श्रेणीना दस इन्द्रा नाम
तथा तेना भवन लिख्यते

१० निकाय १० उत्तरद्वना नाम उत्तर दिशीना भवन

१ पेली निकाय	वल्लंड	३० लाख
२ जी निकाय	भूतानेन्द्र	४० लाख
३ जी निकाय	वेणुदल्लेन्द्र	३४ लाख
४ थी निकाय	हरिचन्द्र	३६ लाख
५ मी निकाय	अग्नीमा	३६ लाख
६ ठो निकाय	वशीष्ट	३६ लाख
७ मी निकाय	जलप्रभ	३६ लाख

८ मी निकाय	अमितयाहा	३६ लाख
९ मी निकाय	अमितयाहा	४६ लाख
१० मी निकाय	महाशंभु	३६ लाख

ए रीते भवनपति देवतानी उत्तर श्रेणीना दस इंद्रना भवन ३६६००००० ग्रण जोड कल्लट तार भवन जाणवा ए रीते भवनपतिनी दस निकायनेदिसे २० इंद्रना कुलभवन ७७२००००० नी संख्या कही.

हवे भवनपतिना दस निकायना देवताना चिन्ह तथा शरीरवर्ण तथा वस्त्रना वर्ण तेनी विगत लखीए छीए

१० निकायना अंक चिन्ह	शरीरवर्ण	वस्त्रवर्ण
१ ली निकाय	चू।मशी	कृष्ण रक्त
२ जी निकाय	सर्प	गौर नील
३ जी निकाय	गरुड	कंचन श्वेत
४ थी निकाय	वज्र	रक्त नील
५ मी निकाय	कलश	रक्त नील
६ ठी निकाय	सिंह	रक्त नील
७ मी निकाय	अश्व	गौर नील
८ मी निकाय	गज	कंचन श्वेत
९ मी निकाय	मच्छ	नील संध्याराग
१० मी निकाय	सरावशंपट	कंचन श्वेत

ए रीते दस निकायना उत्तर श्रेणीना इंद्रना चिन्ह तथा शरीरना वर्ण तथा वस्त्रना वर्ण सर्वे उपर लख्या प्रमाणें जाणवा

હવે વિંતર દેવતાના દંડકના ભવન કહે છે જે તિરઝા
લોકમાં વ્યંતરના ભવન અસંખ્ય જાણવા
જ્યોતિષીના દંડકનેવિષે ભવનદ્વારના પાંચ મેદ છે તે
કહે છે

૧ તેમા ચંદ્રમાના પ્રથમ ભવનદ્વાર કહે છે તેની વિગત

૨ જંબૂદ્વીપમાહે વે ચંદ્રમા

૪૨ કાલોદધિ સમુદ્રમા વેતાલીસ ચંદ્રમા

૪ લવણ સમુદ્રમા ચાર ચંદ્રમા

૭૨ પુષ્કરાર્ધે સ્વંદમા વહોત્તર ચંદ્રમા

૧૨ ધાતકી સ્વંદમાં વાર ચંદ્રમા

ए रीते अढी द्वीपमा सर्वे चंद्रमा १३२ थाय ते अढी
द्वीपसुधी चंद्रमा चल छे उपरांत चंद्रमा थीर छे ए
रीते जे असंख्य योजनना द्वीप समुद्र छे ते असंख्य
चंद्रमा जाणवा अने जे असंख्य योजनना द्वीप समुद्र
छे ते असंख्य चंद्रमा जाणवा अने चंद्रमाउ विमान
जायण १ ना भाग ६१ कीजे एवा भाग ५६ लांवा
पोलो छे उंच पण भाग २८ तेनी परिधी त्रगुणी
जाणवी अने चंद्रमाना भवनने १६००० देवता उपा-
डे छे ते ४००० देवता पूर्व दिशिनेपासे सिंहने रूपे
अने ४००० देवता पश्चिम दिशिनेपासे वृषभने रूपे
अने ४००० देवता उत्तर दिशिनेपासे घोडाने रूपे
अने ४००० देवता दक्षिण दिशिनेपासे हाथीने रूपे
ए रीते चारी दिशी मलीने १६००० देवता चंद्रमाना

વિમાનને ઉપાડે છે તે શંકુતલા પૃથ્વીયકી ૮૮૦

યોજન ડંચો ચંદ્રમાનો વિમાન છે

૨ લીંડું સૂરજનું ખવડદાર તેણે પ્રથમ ચંદ્રમાના

વિમાનની પરે સૂરજના વિમાન જાગવા ને સૂરજ-

નું વિમાન યોજન એકમા ભાગ ૬૧ મિજે ઇંચ ૪૮

ભાગ લાંબો પોલો છે અને ડંચ પગ માત્ર ૨૪ તે-

ની પરીધી ત્રિગુણી અધિક જાણવી તે સૂરજના વિ-

માનને ૧૬૦૦૦ દેવતા ઉપાડે છે. તે એક એક દિ-

શિનેવિપે ચાર ચાર હજાર દેવતા પ્રથમ ચંદ્રમાની

પરે ચાર રૂપે ઉપાડે છે તે શંકુતલા પૃથ્વીયકી

૮૦૦ યોજન ડંચું સૂર્યનું વિમાન છે

૩ લીંડા ગ્રહના વિમાન કહે છે ચંદ્રમાના એક વિ-

માનન પછવાડે ૮૮ ગ્રહના વિમાન હોય તે ગ્રહનું

વિમાન ગાઝ ૨ લાંબું પોલું છે અને ગાઝ ૧ નું ડં-

ચ અને તની પરધી ત્રિગુણી જાણવી તે ગ્રહના વિ-

માનને ૮૦૦૦ દેવતા ઉપાડે છે શંકુતલા પૃથ્વીયકી

ઉચ ૮૮૮ યોજનથી ૯૦૦ યોજન સુધી ગ્રહના વિ-

માન જાણવા

૪ હવે ચોથું નક્ષત્રનું વિમાનદ્વાર કહે છે ચંદ્રમાના

એક વિમાન પછવાડે ૨૮ નક્ષત્રના વિમાન હોય તેનું

વિમાન ગાઝ ૧ નું લાંબું પોલું અને ગાઝ અર્ધ ડંચ

પગ અને તની પરધી ત્રિગુણી જાણવી અને તે નક્ષ-

ત્રના વિમાનને ૪૦૦૦ દેવતા ઉપાડે છે તે શંકુતલા

પૃથ્વીયકી ૮૮૪ યોજન ઉચા નક્ષત્રના વિમાન જા-
ળવા

૬ પાંચમા તારાના વિમાન કહે છે ચંદ્રમાના એક વિ-
માન પદ્મવાડે ૬૬૯૭૫ કોડા કોડી તારાના વિમાન
હોય તેહું વિમાન ગાઝ અર્ધુ ળાલુ પોલુ અને ગાઝ
૧ નો ચાંથો ભાગ ઉચ ૫૫ હોય અને તેની પરીધી
ત્રિગુણો જાળવી અને તે તારાના વિમાનને ૨૦૦૦
દેવતા ઉપાડે છે તે સંદ્યુતલા પૃથ્વીયકી ૭૯૦ યોજન
ઉચ તારાના વિમાન જાળવા

૧ રીતે પાંચ વ્યોનિષીના ભવનદ્વાર કહ્યા તે ૫ વ્યો
તિષીનું ચક્ર અઢી દ્વીપમુવી ચલુ છે ઉપરાંત ચિર છે.
વૈમાનિક દેવતાના ભવનના ત્રણ ભેદ છે તેની વિગત
૧ પ્રથમ વાર દેવલોકવાલાના વિમાનની વિગત

દેવલોક	ઇંદ્ર	ચિન્દ્ર	વિમાન પાયા	
સૌવર્મ	સૌવર્મે	દૃગ	૩૨૦૦૦૦૦	૧૩
ઇશાન	ઇશાન	માહેષ	૨૮૦૦૦૦૦	
સનત્કુમાર	સનત્કુમાર	વરાહ	૧૨૦૦૦૦૦	૧૨
માહેન્દ્ર	માહેન્દ્ર	સિંહ	૮૦૦૦૦૦	
બ્રહ્મા	બ્રહ્મેન્દ્ર	લોકનો	૪૦૦૦૦૦	૬
લાંતક	લાંતક	હેલકુ	૫૦૦૦૦	૫
મહાનુક્ર	મહાનુક્ર	અશ્વ	૪૦૦૦૦	૪
સહસાર	સહસાર	ગજ	૬૦૦૦	૪
આનત	આનન	મુજંગ	૨૦૦	૪
પ્રાણન	પ્રાણત	સહુગી	૨૦૦	

આરણ	આરણ	દુપમ ૧૫૦	
અચ્યુત	અચ્યુત	મેઢો ૧૫૦	૪

૧ રીતે વાર દેવલોકના વિમાન ૮૪૯૬૭૦૦ કુલ
થયા તેના ઇંદ્ર ૧૦ કહ્યા કારણ જે નનમા ને દગમા
દેવલોકનું ઇંદ્ર ૧ છે અને ઇગ્યાર અને વા મા દેવલો-
કનો ઇંદ્ર ૧ છે તેથી ૧- ઇંદ્ર થયા તથા તેના પાથડા
૫૨ કહ્યા

૨ નવગ્રંથેયકને વિષે ૩૧૮ વિમાન છે તેમા પેલી ત્રિ-
કનેવિષે વિમાન ૧૧૧ છે વીજી ત્રિકનેવિષે વિમાન
૧૦૭ છે ત્રિજી ત્રિકનેવિષે વિમાન ૧ ૦ છે ૧ રીતે
ત્રણ ત્રિકનેવિષે વિમાન ૩૧૮ જાણવા અને તેના પા-
થડા નવ જાણવા તિહાં ઇંદ્ર નથી પોતેજ સ્વામી છે ૧
રીતે નવગ્રંથેયકનું ભવનદ્વાર કહ્યું

પાંચ અનુત્તર વિમાનનેવિષે વિમાન ૫ છે અને તે પાં-
ચ અનુત્તર વિમાનમાં પાથડું ૧ છે અને તિહા ઇંદ્ર
નથી પોતે સ્વામી છે

૧ રીતે વૈમાનિક દેવતાના ભવનદ્વાર કહ્યા અને ૧
રીતે સરવે વૈમાનિક દેવતાના વિમાન કુલ
૮૪૯૭૦૨૩ થયા અને વૈમાનિક દેવતાના કુલ
પાથડા ૬૨ થયા ૧ રીતે વૈમાનિક દેવતાનું ભવન
દ્વાર કહ્યું

૧ રીતે ચૌદ દંડકનેવિષે ભવનદ્વાર કહ્યું
વિંતરના ભવન તથા જ્યોતિષીના વિમાન વર્જીને વા-

की अथो अने उर्ध्व अने तिरछा लोकनेविषे शाश्व-
ता देरासर छे ८५६९७९३४ एटला देरासर सदा
काले छं तेनी आदि पण नयी ते देरासरमध्यं कुलग
स्वाती जिन प्रतिमा १५४२९९२९९४० एटली छे
तेनी विगत

१ पेला अथोलोकनेविषे दश प्रकारना भवनपतिमाहे
दश निकायना वीम इंड छं तना भवन ७७२०००००
भवन ते एक एक भवननेविषे एक एक देरासर
शाश्वत जाणवु एटलं ७७२००००० देरासर शाश्व-
ता थया ते एक एक देरानरमाहे शाश्वती जिन प्र-
तिमा १८० छे एटले सर्व जिन प्रतिमा
१३८०,६००००००० छे

ए रीते भवनपतीविषे देरासर तथा जिन पाडिमा-
नी संख्या कही

१ बीजा उर्ध्व लोकमाहे वैमानिक देवताना विमाननं
विषे पेला देवलोकथी माडीने यावत पांच अनुत्तर
विमानसुधी कुल विमान ८४९७०२३ छे ते एकेक
विमाननेविषे एकेक देरासर शाश्वतु जाणवु एटलं
८४९७०२३ देरासर थया ते एकेक देरासरमाहे
शाश्वती जिन प्रतिमा १८० छे एटलं सर्व प्रतिमा
१५२९४६४१४० ए रीते वार देवलोक नव ग्रैवेयक
तथा पांच अनुत्तर विमाननाविषे देरासर तथा प्रति-
मानी संख्या जाणवी

३ त्रिजा तिरछा लोकमाहे जवूडीपथी मांडी रुचक
 द्रोप लगे शाश्वता देरासर ५१ छे तेनी विगत
 १ बैताढ्य पर्वत १७० छे ते उपरे देरासर १७
 छे ते एक एक देर सरमां जिन प्रतिमा १२० प्रमा
 णे छे एटले कुल जिन प्रतिमा २०४०० थई
 २ बर्बधर पर्वत ३० छे ते उपरे देरासर ३० छे ते
 एक एक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० एटले कु
 ल जिन प्रतिमा ३६०० थई
 ३ कांधमटूक्ष १० छे ते उपरे देरासर १० छे ते ए
 क्केक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० छे एटले कुल
 जिन प्रतिमा १२०० थई
 ४ गजदंता पर्वत २० छे ते उपरे देरासर २० छे ते
 एक्केक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० प्रमाणे छे एट
 ले कुल जिन प्रतिमा २४० थई
 ५ कांधम पर्वत ८० छे ते उपरे देरासर ८० छे ते
 एक्केक देर सरमाहे जिन प्रतिमा १२० प्रमाणे छे एट
 ले कुल जिन प्रतिमा ९६०० थई
 ६ बषारा पर्वत ८० छे ते उपरे देरासर ८० छे ते
 एक एक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० छे एटले
 कुल जिन प्रतिमा ४६०० थई
 ७ मेरु पर्वत ९ छे ते एरु एक मेरु पर्वत उपरे १३
 देरासर छे एटले मेरु ९ उपरे देरासर ८९ छे ते
 एक एक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० छे एटले

કુલ જિન પ્રતિમા ૧૦૨૦૦ થઈ

૮ હ્યુકાર પર્વત ૪ છે તે ઉપર દેરાસર ૪ છે તે એકે-
ક દેરાસરમાહે જિન પ્રતિમા ૧૨૦ પ્રમાણે છે એટલે
કુલ જિનપ્રતિમા ૪૮૦ થઈ

૯ માનુષોત્તર પર્વા ૧ છે તે ઉપર દેરાસર ૪ છે તે
એક દેરાસરમાહે જિન પ્રતિમા ૧૨૦ પ્રમાણે છે એટ-
લે કુલજિનપ્રતિમા ૪૮૦ થઈ

૧૦ નવીસર શ્રીપ ઉપરે દેરાસર ૨૦ છે તે એક એ-
ક દેરાસરમાહે જિન પ્રતિમા ૧૨૪ પ્રમાણે છે એટલે
કુલ જિન પ્રતિમા ૨૪૮૦ થઈ

૧૧ કુંડલ દેવન ૧ છે તે ઉપર દેરાસર ૪ છે તે
એક દેરાસરમાહે જિન પ્રતિમા ૧૨૦ પ્રમાણે
છે એટલે કુલ જિન પ્રતિમા ૪૮૦ થઈ

૧૨ રુચક પર્વત ૧ છે તે ઉપર દેરાસર ૪ છે તે એ-
ક દેરાસરમાહે જિન પ્રતિમા ૧૨૦ પ્રમાણે છે એ-
ટલે કુલ જિન પ્રતિમા ૪૮૦ થઈ

૧૩ રીત વાર વોલ ત્રિગ લોકમાહે છે તેનેવિષે શાશ્વતા
દેરાસર ૫૧૧ છે તે માંહે કુલ જિન પ્રતિમા
૬૧૪૦૦ છે એટલે ત્રિગ લોકનેવિષે દેરાસર તથા
પ્રતિમાની સંખ્યા થઈ

૧૪ રીત લગ લોકનેવિષે કુલ શાશ્વતા દેરાસર
૮૬૬૧૭૨૩૨ છે તે માંહે કુલ જિન પ્રતિમા
૧૫૨૨૧૫૨૧૫૪૦ છે તથા ૫ ગંગાંત વિંતર દેવતા-

ના અસંખ્ય પવન છે ણ્ટલે તેમા અસંખ્ય ઢેરાસર છે તેમા અસંખ્ય જિન પ્રતિમા જાણવી અને વલી જ્યો-
તિષી દેવતાના અસંખ્ય વિમાન છે ણ્ટલે તેમા અસંખ્ય
દેગસર છે તેમા અસંખ્ય જિન પ્રતિમા છે એ રીતે શાશ્વ
તા દેરાસર તથા શાશ્વતી જિન પ્રતિમા કહી તેને વંદ-
ના કન્યાથી અનંતા ભવના પાપ કીધા હાય તે ચક્ર
ચૂર થઈ જાય તેમા મંદેહ નહીં એ રીતે ભવનદ્વાર કહ્યું
इति पचीसमुं भवनद्वार संपूर्ण.

अथ छवीभमुं विरहकालद्वार लिख्यते.

વિરહકાલદ્વાર સમુચ્ચય ગતિ ચારને મુહૂર્ત ૧૨ ના
હોય તે ચોવીસ દંડકમાહેથી એકેક દંડકને વિરહકા-
લ જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ વિવરીને લેખીએ છીએ તેની
વિગત

પ્રથમ સાત નારકીના દંડકને જઘન્ય એક સમયે અ-
ન ઉત્કૃષ્ટ માસ ૬ નું જાણવું તેની વિગત

૧ પેલી નરકે જઘન્ય એક સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ ૨૪
મુહૂર્ત

૨ વીજી નરકે વિરહકાલ દિન ૭ નો જાણવો

૩ ત્રીજી નરકે વિરહકાલ દિન ૧૧ નો જાણવો

૪ ચોથી નરકે વિરહકાલ માસ ૧ નો જાણવો

૫ પાંચમી નરકે વિરહકાલ માસ ૨ નો જાણવો

૬ છટી નરકે વિરહકાલ માસ ૪ નો જાણવો
 ૭ માતમી નરકે વિરહકાલ માસ ૬ નો જાણવો
 ૯ રીને સાન નારકીનો વિરહકાલ કહ્યો
 દશ પ્રકારના ભવનપતિના દશ દંડકનેવિષે વિરહ
 કાલ

૧ જઘન્ય એક સમયે ૨ ઉત્કૃષ્ટ ૨૪ મુહૂર્ત.
 પૃથ્વીકાયના દંડકનેવિષે વિરહકાલ નથી
 અપ્પકાયના દંડકનેવિષે વિરહકાલ નથી.
 તેજનાયના દંડકનેવિષે વિરહકાલ નથી
 વાહુકાયના દંડકનેવિષે વિરહકાલ નથી.
 વનસ્પતીકાયના દંડકનેવિષે વિરહકાલ નથી
 વેંદ્રીના દંડકનેવિષે જઘન્ય ૧ સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ
 ૧ મુહૂર્ત

તેંદ્રીના દંડકનેવિષે જઘન્ય ૧ સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ
 ૧ મુહૂર્ત
 ચોરંદ્રીના દંડકનેવિષે જઘન્ય ૧ સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ
 ૧ મુહૂર્ત.

તિર્યંચ પંચેંદ્રીના દંડકનેવિષે વિરહકાલના ૨ ભેદ છે
 તેની વિગત

૧ સમુર્ધ્ધામ તિર્યંચને જઘન્ય ૧ સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ
 ૨૪ મુહૂર્ત

૨ ગર્ભજાતિયર્ચને જઘન્ય ૧ સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ
 ૧૨ મુહૂર્ત

મનુષ્યના દંડકનેવિષે વિરહકાલના બે ભેદ છે તેની વિગત.

૧ સમુર્ધ્ધિમ મનુષ્યને જઘન્ય ૧ સમયે અને ઉત્ક્રષ્ટ

૨૪ મુહુર્ત

૨ ગર્ભજ મનુષ્યને જઘન્ય ૧ સમયે અને ઉત્ક્રષ્ટ

૧૨ મુહુર્ત

વાણવિતરના દંડકનેવિષે જઘન્ય ૧ સમયે અને ઉ-

ત્ક્રષ્ટ ૨૪ મુહુર્ત

ખ્યોતિષીના દંડકનેવિષે જઘન્ય ૧ સમયે અને ઉત્ક્રષ્ટ

૨૪ મુહુર્ત

વૈમાનિક દેવતાના દંડકનેવિષે જઘન્ય ૧ સમયે અને

ઉત્ક્રષ્ટ વિરહકાલની વિગત

૧ પેલા અને વિજા દેવલોકે વિરહકાલ ઉત્ક્રષ્ટ ૨૪

મુહુર્ત

૨ ત્રિજા દેવલોકે વિરહકાલ ઉત્ક્રષ્ટ ૧૬ દિન અને

૨૦ મુહુર્ત

૩ ચોથે દેવલોકે વિરહકાલ ઉત્ક્રષ્ટ ૧૨ દિન અને

૧૦ મુહુર્ત

૪ પાંચમા દેવલોકે વિરહકાલ ઉત્ક્રષ્ટ ૨૨ દિન

૫ છઠા દેવલોકે વિરહકાલ ઉત્ક્રષ્ટ ૪૫ દિન

૬ સાતમા દેવલોકે વિરહકાલ ઉત્ક્રષ્ટ ૮૦ દિન

૭ આઠમા દેવલોકે વિરહકાલ ઉત્ક્રષ્ટ ૧૦૦ દિન

૮ નવમે દેવલોકે અને દશમે દેવલોકે વિરહકાલ

संख्याता मासना जाणवो.

- ९ इग्यारमा अने वारमा देवलोकनेविषे विरहकाल उत्कृष्ट संख्याता वरसनो जाणवो
- १० ग्रैवेयकनी पेली त्रिकनेविषे उत्कृष्ट विरहकाल संख्याता शेकडा वरसनो जाणवो
- ११ ग्रैवेयकनी विजी त्रिकने विरहकाल उत्कृष्ट संख्याता हजार वर्ष
- १२ ग्रैवेयकनी त्रीजीत्रिकनेविषे विरहकाल उत्कृष्ट संख्याता लाख वर्ष
- १३ चार अनुत्तर विमानने विरहकाल उत्कृष्ट पत्थो पननो असंख्यातमो भाग
- १४ पांचमा सर्वार्थसिद्धने विरहकाल उत्कृष्ट पत्थोप मनो संख्यातमो भाग जाणवो
- ए रीते वैमानिक देवतानो विरहकाल कळो.
- ए रीते चोवीस दंडकने विरहकाल विवरने कळा इति छवीसष्ट विरहकालद्वार संपूर्ण



अथ सत्तावीसमुं गुणठाणाद्वार लिख्यते.

गुणठाणाद्वार कहिये छीए ते गुणठाणा १४ छे तेना नामनी विगत

१ मिथ्यात गुणठाणुं २ सस्वाद गुणठाणुं

३ मिश्र गुणठाणो ४ अवरती समकित गुणठाणो

५ देशवरती गुणठाणो ६ परमत गुणठाणा

७ अपरमत गुणठाणो ८ अपूर्व गुणठाणो

९ अनीव्रतवादर गुणठाणो

१० सुषसंपराय गुणठाणो

११ उपश्रान्त मोह गुणठाणो

१२ क्षीण मोह गुणठाणो

१३ संयोगी केवली गुणठाणो

१४ अयोगी केवली गुणठाणो

ए रीते चौद गुणठाणाना नाम कहा.

चौबीस दंडकमाहेथी एकेक दंडकनेविषे केटला गुण-
ठाणा लाभे तेनी विगत

सात नारकीना दंडकने पेला ४ गुणठाणा लाभे

दश प्रकारना भव्रतपतिना दश दंडकने पेला ४ गुण-
ठाणा लाभे

पृथ्वीकायना दंडकने एक मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे

अप्यकायना दंडकने एक मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे

तेजकायना दंडकने एक मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे

वाक्कायना दंडकने एक मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे

वनस्पतीकायना दंडकनेविषे एक मिथ्यात्व गुणठा-
णो लाभां

वेंद्रीना दंडकने पेला २ गुणठाणा लाभे

तेंद्रीना दंडकने पेला २ गुणठाणा लाभे

ચારેંદ્રીના દંડકને પેલા ૧ ગુણઠાણા લાભે
તિર્યંચપચેંદ્રીના દંડકનેવિષે ગુણઠાણાના વે ભેદ છે
તેની વિગત

૧ સમુર્ઝિમ તિર્યંચપચેંદ્રીના દંડકને પેલા ૨ ગુણઠા-
ણા લાભે

૨ ગર્ભજ તિર્યંચપચેંદ્રીના દંડકને પેલા ગુણઠાણા લાભે
મનુષ્યના દંડકનેવિષે ગુણઠાણાના વે ભેદ છે તેની
વિગત

૧ સમુર્ઝિમ મનુષ્યના દંડકને એક મિથ્યાત્વ ગુ-
ણઠાણું લાભે

૨ ગર્ભજ મનુષ્યના દંડકને ૧૪ ગુણઠાણા લાભે
વાણવિંતરના દંડકને પેલા ૪ ગુણઠાણા લાભે
લ્યોતીષીના દંડકને પેલા ૪ ગુણઠાણા લાભે
વૈમાર્નક દેવતાના દંડકનેવિષે ગુણઠાણાના ૨ ભેદ
છે તેની વિગત

૧ ચાર દેવલોકના દેવતા અને નવગ્રૈવેયકના દેવતા
ને પેલા ૪ ગુણઠાણા લાભે

૨ પાંચ અનુત્તર વિમાનના દેવતાને એક અવિરતિ
ગુણઠાણું હોય

એ રીતે ચાવીસ દંડકનેવિષે ગુણઠાણા કહ્યા

इति ૨૭ મું ગુણઠાણાનું દ્વાર સંપૂર્ણ

अथ अष्टावसिखं प्राणानु द्वार लिख्यते

प्राणद्वारना दश भेद छे तेना नामनी निगत

- | | | |
|---------------|----------------|---------------|
| १ स्पर्शेद्री | ५ श्रोत्रेद्री | ८ मनोबल |
| २ रसेद्री | ६ कायबल | ९ स्वासोश्वास |
| ३ प्राणेद्री | ७ वचनबल | १० आयु |
| ४ चक्षुदेद्री | | |

ए रीति १० प्राणना नाम कछा

चोवीस दंडकनाहंथां एक एक दंडकनेदिषे दंडला

प्राण होय तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकनेदिषे १० प्राण होय

दश भवनपतिना दश दंडकने १० प्राण होय

पृथ्वीकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

अप्यकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

तेजकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

वायुकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

वनस्पतिकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

वेदेद्रीना दंडकने ६ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेद्री २ रसेद्री ३ वचनबल ४ कायबल

५ श्वासोश्वास ६ आयु

तीतीना दंडकने ७ प्राण होय तेनी विगत

१ स्वर्णंद्री २ रसंद्री ३ घ्राणंद्री ४ वचनवल

५ कायवल ६ श्वासोश्वास ७ आयु

चोरंद्रीना दंडकने ८ प्राण होय तेनी विगत

१ स्वर्णंद्री २ रसंद्री ३ घ्राणंद्री ४ चक्षुर्द्री

५ वचनवल ६ कायवल ७ श्वासोश्वास ८ आयु

निर्यथं चंद्रीना वै तद छे तेनी विगत

१ सज्जिय तिर्यचं चंद्रीना दंडकने ९ प्राण होय तेनी विगत

१ स्वर्णंद्री २ रसंद्री ३ घ्राणंद्री ४ चक्षुर्द्री

५ श्रोत्रंद्री ६ वचनवल ७ कायवल ८ श्वासोश्वास

९ आयु

२ गर्भज तिर्यचं चंद्रीना दंडकने १० प्राण होय तेनी विगत

मनुष्य दंडकने २ भेद छे तेनी विगत

१ सज्जिय मनुष्य दंडकने ७ अथवा ८ प्राण होय

१ स्वर्णंद्री २ रसंद्री ३ घ्राणंद्री ४ चक्षुर्द्री

५ श्रोत्रंद्री ६ कायवल ७ श्वासोश्वास ८ आयु

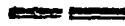
२ गर्भज मनुष्य दंडकने १० प्राण होय

वाणितरन्त दंडकने १० प्राण होय

ह्योतिर्पिना दंडकने १० प्राण होय

वैमनिक देवताना दंडकने विदे १० प्राण होय

ए रीते चौबीस दंडकनेविषे प्राणद्वार कक्षा
इति आद्यावीसमुं प्राणद्वार संपूर्ण



अथ ओगणत्रीसमु संयतीद्वार लिख्यते
संयतीद्वारना बोल ८ ठे तेनी विगत

१ संयती	असंयती	संयतासंयती
२ व्रती	अव्रती	व्रताव्रता
३ पचखाणी	अपचखाणी	पचखाणापचखाणी
४ पड्ढा	वाला	वालापड्ढा
५ संबुडा	असंबुडा	संबुडासंबुडा
६ जगरा	च्युता	च्युताजगरा
७ धर्मीया	अधर्मीया	धर्माधर्मीया

८ धमविवसाइया अधमविवसाइया धमाधमविवसाइया

ए रीते संयतीना ८ बोल कक्षा पण एक एक बोल-
ना प्रण ३ बोल जाणवा

चौबीस दंडकमाहे एक एक दंडकमां संयतीना केटला
बोल होय तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद
होय तेनी विगत

१ असंयती	२ अव्रती	३ अपचखाणी
४ वाला	५ असंबुडा	६ च्युता
७ अधर्मीया	८ अधमविवसाइया	

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकनेविषे संयती-
 ना ८ भेद नारकीनी परे जाणवा
 पृथ्वीकायना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकी-
 नी परे जाणवा
 अप्पकायना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकी-
 नी परे जाणवा
 तेजकायना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकीनी
 परे जाणवा
 वायुकायना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकी-
 नी परे जाणवा
 वगस्पतिकायना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नार-
 कीना परे जाणवा
 वेद्रीना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकीनी परे
 जाणवा
 तेंद्रीना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकीनी परे
 जाणवा
 चोरेद्रीना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकीनी
 परे जाणवा
 तिर्यचपंचेंद्री दंडकना २ भेद छे तेनी विगत
 १ समुच्छिन्न तिर्यचपंचेंद्रीना दंडकने संयतीना ८ भे-
 द नारकीनी परे जाणवा
 २ गर्भजातिर्यचना दंडकनेविषे संयतीना २ भेद छे
 तेनी विगत

१ असंयती २ असंयतासंयती

मनुष्यना दंडकना २ भेद छे तेनी विगत

१ सशस्त्रिम मनुष्यना दंडकने संयतीना ८ भेद
नार कीनी परें जाणवा

२ गर्भज मनुष्यना दंडकने संयतीना ८ बोल स-
घले प्रकारें लाभे

ज्योतिषीना दंडकनेविषे संयतीना ८ बोल ब्रौजा प्र-
कारें लाभे

वैमानिक देवताना दंडकनेविषे संयतीना ८ बोल ब्रि-
जा प्रकारें लाभे

ए रीते संयतीना भेद २४ दंडकनेविषे कक्षा.

इति २९ मुं संयतीद्वार संपूर्ण.

अथ त्रीसमुं आहारद्वार लिख्यते

आहारमुं द्वार लक्ष्मीए छिए ते आहारना ३ भेद छे
तेनी विगत

१ सचेत आहार २ अचेत आहार ३ मिश्र आहार
ए रीतें ३ प्रकारना आहार कक्षा

चोवीस दंडकमां एक एक दंडकवालो केटला प्रकार
नो आहार छिए तेनी विगत

सात नारकीना दंडकवालो १ अचेत आहार लिये
दश प्रकारना भयनपतिना दश दंडकवालो १ अचेत

आहार लिये

पृथ्वीकायना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
 अप्पकायना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
 तेजकायना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
 वायुकायना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
 वनस्पतिकायना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
 वैद्रीना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
 तैद्रीना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
 चोद्रीना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
 तिर्यच पंचेद्रीना दंडकवाला २ भेद छे ते पण ३
 प्रकारे आहार लिये

१ समूर्णिम तिर्यच पंचेद्रीना दंडकवाला

२ विजा गर्भज तिर्यच पंचेद्रीवाला

मनुष्यना दंडकना २ भेद छे ते पण ३ प्रकारना
 आहार लिये

१ समूर्णिम मनुष्य २ गर्भज मनुष्य

वाणधितना दंडकवाला १ अचेत आहार लिये

ज्योतिषीना दंडकवाला १ अचेत आहार लिये

वैमानिकना दंडकवाला १ अचेत आहार लिये

ए रीते २४ दंडकनेविषे आहारद्वार कह्युं.

इति ३० मुं आहारद्वार संपूर्ण.

अथ एकत्रीसुं आहारजातीनुं द्वार लिख्यते

आहार त्रण जातीना छे तेनी विगत

१ ओजाहार २ लोमाहार ३ कवलाहार

ए रीते ३ जातीना आहार कथा

चोवीस दंडकमां एक एक दंडकवालो केटली जाती.

नो.अहार लीयं तेनी विगत

सात नारकीना दंडकवाला २ जातीनो आहार लिये

१ ओजाहार २ लोमाहार

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकवाला वे जाति-

ना आहार लिये

१ ओजाहार

२ लोमाहार

पृथ्वीकायना दंडकवाला एज २ जातीना आहार

लिये

अप्पकायना दंडकवाला एज २ जातिना आहार

लिये

तेजकायना दंडकवाला एज २ जातीना आहार

लिये

वाजकायना दंडकवाला एज २ जातीना आहार

लिय

वनस्पतीकायना दंडकवाला एज २ जातीना आहार

र लिय

वेदीना दंडकवाला ३ जातीना आहार लिये

१ ओजाआहार २ लोमाआहार ३ कवलाआहार

तेद्रीना दंडकवाला एज ३ जातिना आहार लिये

चोरेंद्रीना दंडकवाला एज ३ जातिना आहार लिये
तिर्यच पचेद्रीना दंडकना २ भेद छे ते पण एज ३
जातिना आहार लिये

१ समुष्टिम तिर्यच २ गर्भज तिर्यच
मनुष्यदंडकना २ भेद छे ते पण ३ जातिना आहार
लिये

१ समुष्टिम मनुष्य २ गर्भज मनुष्य
वाणवितरना दंडकवाला वे जातीना आहार लिये

१ ओजाआहार २ लोमआहार
ज्योतिषी दंडकवाला एज २ जातीनो आहार लिये
वैमानिक दंडकवाला एज २ जातीनो आहार लिये
ए रीतें २४ दंडकनेविधे आहार जातीनो द्वार कहा
इनि ३१ सु आहार जातीनुं द्वार संपूर्ण

अथ वत्रीसमुं आहारइच्छाद्वार लिख्यते.

इ २ सु आहारइच्छाद्वार ते चोवोस दंडकमा एकेक
दंडकवालाने जघन्य तथा उत्कृष्ट आहार लेवानी इ-
च्छा केटले काले थाय तेनी विगत
सात नारकीना दंडकवालाने जघन्य एक समय अ-
ने उत्कृष्ट १ अंतर्मुहूर्ते इच्छा उपजे
दश प्रकारना भवनपतीना दश दंडकवालाने आहार-

ની ઇચ્છા ઉપજે તેની વિગત

૧ જેનું આગ્રહું દસ હજાર વર્ષનું છે તેને ચોથ મ-
ગને આહાર ઇચ્છા ઉપજે

૨ જેનું આગ્રહું પચ્ચોપમનું છે તેને ૨ દાદાથી
૧ દાદાસુધી આહાર ઇચ્છા ઉપજે

૩ જેનું આગ્રહું સાગરોપમનું છે તેને એક હજાર વર્ષ
આહાર ઇચ્છા ઉપજે

૪ જેનું આગ્રહું સાગરોપમથી જાણેરૂ છે તેને એક
હજાર વર્ષ જાણેરૂ આહાર ઇચ્છા ઉપજે

પૃથ્વીકાય દંઢકવાલાને સમયે સમયે આહારની ઇ-
ચ્છા ઉપજે

અણ્ણકાયના દંઢકવાલાને સમયે સમયે આહારની ઇ-
ચ્છા ઉપજે

તેજકાયના દંઢકવાલાને સમયે સમયે આહારની ઇચ્છા
ઉપજે

વાયકાયના દંઢકવાલાને સમયે સમયે આહારની ઇ-
ચ્છા ઉપજે

વનસ્પતિકાયના દંઢકવાલાને સમયે સમયે આહારની
ઇચ્છા ઉપજે

વેદીના દંઢકવાલા એક સમય જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ
એક અંતર્મુહૂર્તે આહારની ઇચ્છા ઉપજે

તેંદ્રી દંઢકવાલાને જઘન્ય એક સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ
એક અંતર્મુહૂર્તે આહારની ઇચ્છા ઉપજે

ચારેદ્રીના દંડકવાલાને જઘન્ય એક સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ
 ષ્ટ એક અંતર્મુહૂર્તે આહારની ઇચ્છા ઉપજે
 તિર્યચ પર્ચરીવાલાને આહાર લેવાની ઇચ્છા ઉપજે તે
 ની વિગત

૧ સમુર્જિમ તિર્યચને જઘન્ય એક સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ
 એક અંતર્મુહૂર્તે

૨ ગર્ભજ તિર્યચને જઘન્ય એક અંતર્મુહૂર્તે અને ઉ-
 ત્કૃષ્ટ છઠ્ઠ મગતે

મનુષ્ય દંડકવાલાને આહારની ઇચ્છા ઉપજે તેની
 વિગત

૧ સમુર્જિમ મનુષ્યને જઘન્ય એક સમયે અને ઉત્કૃષ્ટ
 અંતર્મુહૂર્તે

૨ ગર્ભજ મનુષ્યને જઘન્ય એક અંતર્મુહૂર્તે અને ઉ-
 ત્કૃષ્ટ અઠમ મગતે

વાળવિંતરવાલા દંડકને આહારની ઇચ્છા ઉપજે તે-
 ની વિગત

૧ જેનું ૧૦ હજાર વર્ષનું આઝઘું હોય તેને ચોથ
 મગતે ઇચ્છા ઉપજે

૨ જેનું આઝઘું પચાસમનું હોય તેને ૨ દાઢાથી
 ૧ દાઢાસુધી ઇચ્છા ઉપજે

જ્યોતીષીના દંડકવાલાને જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ ૨ દા-
 ઢાથી ૧ દાઢાસુધી આહારની ઇચ્છા ઉપજે

વૈમાનિક દેવતાના દંડકવાલાને આહાર લેવાની ઇ-
 ચ્છા ઉપજે તેની વિગત

- ૧ જેનું આઝરુ એક પલ્યોપમનું હોય તેને ૨ દાઢા-
થી ૧ દાઢાસુધી આહારની ઇચ્છા ઉપજે
- ૨ જેનું આઝરું સાગરોપમનું હોય તેને એક હજાર
વર્ષે આહાર ઇચ્છા ઉપજે
- ૩ જેનું જેટલા સાગરોપમ આઝરું છે, તેને તેટલા
હજાર વર્ષે આહાર ઇચ્છા ઉપજે
- ૪ છેલ્લા સર્વાર્થ સિદ્ધના દેવતાનું ૩૩ સાગરોપમનું
આઝરું છે તેને ૩૩ હજાર વર્ષે આહારની ઇચ્છા
ઉપજે
- ૫ રીતે ૨૪ દંડકનેવિષે આહારની ઇચ્છા ઉપજવાનું
દ્વાર કહ્યું
इति वनसिमु आहार इच्छानु द्वार सपूर्णं

અથ તેત્રીસમું કાયાસ્થિતિનું દ્વાર લિખ્યતે
ચોવીસ દંડકમાં એક એક દંડકને પોતાની કાયાને-
વિષે ઉપજવું કેટલા ભવ લગ તેના કાલનો પરીમાણ
લખીએ ઢિયે તેની વિગત
સાત નારકીના દંડકવાલાની પોતાની કાયાવિષે
જેટલી ભવસ્થિતિ હોય તેટલી કાલસ્થિતિ જાણવી
તે માટે નારકીનો જીવ મરીને નારકીમાં ન
જાય

દશ પ્રકારના ભવનપતીના દશદંડકપાલા દેવતા

મરોને મવનરતી ન થાય

પૃથ્વીકાયની કાયસ્થિતીની વિગત

પૃથ્વીકાય સુક્ષ્મની કાયસ્થિતી જઘન્ય અંતર્મુહૂર્તે અને ઉત્કૃષ્ટ અસંખ્યાની ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી કાલની જ.ળવી

૨ વાદર પૃથ્વીકાયની કાયસ્થિતી જઘન્ય અંતર્મુહૂર્તે અને ઉત્કૃષ્ટ સર્પિતેર કોઢા કોઢી સાંગરોપમ
૫ રીતે પૃથ્વીકાયની કાયસ્થિતી કહી અને જેને જેટલી ભવરિયતી તેનું તેટલું આઝરું જાણવું
અપ્પકાયની કાયસ્થિતી પૃથ્વીકાયની પરે જાણવી
તેઝકાયની કાયસ્થિતી પૃથ્વીકાયની પરે જાણવી
વઝકાયની કાયસ્થિતી પૃથ્વીકાયની પરે જાણવી
વનસ્પતીકાયની કાયસ્થિતીની વિગત

૧ પ્રત્યેક વનસ્પતીકાય જઘન્ય અંતર્મુહૂર્તે ઉત્કૃષ્ટ કાયસ્થિતી સર્પિતેર કોઢા કોઢી સાંગરોપમની જાણવી

૨ સાધારણ વનસ્પતીકાયની કાયસ્થિતીની વિગત.

૧ સુક્ષ્મ નિગોદની કાયસ્થિતી જઘન્ય એક અંત મુહૂર્તેને ઉત્કૃષ્ટ અસંખ્ય અવસર્પિણી કાલ લગે તે ચૌદરાજ લોકપ્રમાણે અસંખ્ય લોક કલ્પવા તેમાં જેટલા આકાશપ્રદેશ છે તેટલી ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી કાલ લગે રહે

૨ વાદર નિગોદની કાયસ્થિતી જઘન્ય અંતર્મુહૂર્તે

અને ઉત્કૃષ્ઠ સિતેર કોઢાકોઢી સાગરોપમ
જાળવી

૧ સૂક્ષ્મ નીગોદ વાદરનીગોદપણે રહે તો કાય-
સ્થિતી જયન્ય અંતરસુહૃતે અને ઉત્કૃષ્ઠ અનંતાં કાલ
તે અનંતી ઉત્સાર્પિણી અવસર્પિણી લગે યદલે ; અહી
પુદ્ગલ પરવર્ત રહે

૪ સૂક્ષ્મની ગોદ વાદરનીગોદ પ્રત્યેક પ્રત્યેક
થઈને કાયસ્થિતી રહે તો અસંખ્ય પુદ્ગલ પરા-
વર્તે હાંચ

અંગુલના અસંખ્ય ભાગના ક્ષેત્રમાં જેટલા આકાશપ્ર-
દેશ છે તેટલા પુદ્ગલ પરાવર્તે જાળવા

૫ રીતે સાધારણ વનસ્પતિકાય વ્યવહાર રાક્ષીની
કાયસ્થિતી કહી

૫ રીતે વનસ્પતિકાયની કાયસ્થિતી કહી

વેંદ્રીની કાયસ્થિતી સંખ્યાતા વર્ષની જાળવી

તેંદ્રીની કાયસ્થિતી સંખ્યાતા દિનની જાળવી

ચોરેંદ્રીની કાયસ્થિતી સંખ્યાતા માસની જાળવી

તિર્યંચ પંચેંદ્રીની કાયસ્થિતી સાત આઠ ભવની જા-
ળવી

મનુષ્યના દંડકબાળાની કાયસ્થિતી સાત આઠ ભવ-
ની જાળવી

વાળાવિંતરની કાયસ્થિતી તે વાળાવિંતર મરીને દેવતા-
ની ગતિમા ન હપજે

જ્યોતીર્ણીના કાયાસ્થિતી તે જ્યોતીર્ણી મરીને જ્યો-
તીર્ણી ન થાય
વૈમાનિકના દેવતાની કાયાસ્થિતી તે વૈમાનિક મરી-
ને વૈમાનિક ન થાય
૫ રીતે ચોવીસ દંડકની કાયાસ્થિતી વિવરીને કહી
હતી તેત્રાસમુ કાયાસ્થિતાનું દ્વાર સંપૂર્ણ

અથ ચોત્રીસમું યોનીદ્વાર લિખ્યતે.

૧૪ રાજલોકમાહે જીવયોની ૮૪ લાખ છે તે ચો-
વીસ દંડકમા વિવરીને લખીએ છીએ
સાત નારકીના દંડકનેવિષે ચાર લાખ જીવ-
યોની છે
દશ પ્રકારના ભવનપતીના દશ દંડક તથાવ્યંતરનું
૧૬ દંડક તથા જ્યોતીર્ણીનું દંડક તથા વૈમાનિક
નું ૧૬ ૫ તેર દંડકનેવિષે ચાર લાખ જીવ
યોની છે
પૃથ્વીકાયના દંડકનેવિષે ૭ લાખ જીવયોની છે
અગ્નિકાયના દંડકનેવિષે સાત લાખ જીવયોની છે
તેજકાયના દંડકનેવિષે ૭ લાખ જીવયોની છે
વાયુકાયના દંડકનેવિષે ૭ લાખ જીવયોની છે
વનસ્પતિકાયના દંડકના દંડકનેવિષે ૨૪ લાખ જી-
વયોની છે તેના ૨ ભેદ છે

૧૪ લાખ સાધારણ વનસ્પતીકાયમાં જીવયોની છે
 ૧૦ લાખ પ્રત્યેક વનસ્પતીકાયમાં જીવયોની છે
 વેંદ્રીના દંડકનેવિષે ૨ લાખ જીવયોની છે
 તેડીના દંડકનેવિષે ૨ લાખ જીવયોની છે
 ચોરેડીના દંડકનેવિષે ૨ લાખ જીવયોની છે
 તિર્યંચપચેડીના દંડકનેવિષે ૪ લાખ જીવયોની છે
 મનુષ્યપચેડીના દંડકનેવિષે ૧૪ લાખ જીવયોની છે
 ૬ રીતે ચોવીસ દંડકનેવિષે ૮૪ લાખ જીવયોની
 ફરી

इति चोत्रीसमुं योनीद्वार संपूर्ण

अथ प्रांत्रीसमुं कुलकोडीनुं द्वार लिख्यते.

૩૧ મા કુલકોડીનું દ્વાર લખીએ છીએ તે કુલકોડી
 ચોવીસ દંડકમા કુલની સંખ્યા ૧૯૭૧૦૦૦૦૦૦
 ૦૦૦૦ એક ક્રોડ સાઢીસતાળું લાખ ક્રોડ એટલી
 કુલકોડી છે તે ચોવીસ દંડકનેવિષે વિવરીને કહે છે
 સાત નારકીના દંડકવાલાના ૬૫ લાખ કોડી એટ-
 લા કુલ જાળવા

દંડકવાલા ૧૩ દંડકમા ૨૬ લાખ કોડીકુલ
 જાળવા

પૃથ્વીકાયના દંડકનેવિષે ૧૨ લાખ કોડીકુલ
 જાળવા

अन्यकायना दंडकवालामां ७ लाख कोडी कुल
जाणवा

तेऊकायना दंडकवालामां ३ लाख कोडी कुल जा
णवा

वाऊकायना दंडकवालामां ७ लाख कोडी कुल
जाणवा

वनस्पतीकायना दंडकवालामां २८ लाख कोडी कुल
जाणवा

वेंद्रीना दंडकवालामा ७ लाख कोडीकुल जाणवा

तेंद्रीना दंडकवालामा ८ लाख कोडीकुल जाणवा

चोरेंद्रीना दंडकवालामा ९ कोडीकुल जाणवा

तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकवालामा ५३॥ साडीत्रेपख ला
ख कोडीकुल जाणवा

तिर्यंच पंचेंद्रीना पांच भेद छे तेनी विगत

१ जलचर तिर्यचना १२॥ सडावार लाख कोडी

२ थलचरतिर्यचना १० लाख कोडी

३ खेचरतिर्यचना १२ लाख कोडी

४ उरपरीतिर्यचना १० लाख कोडी

५ भुजदरीतिर्यचना ९ लाख कोडी

ए रीते तिर्यंचपंचेंद्रीना दंडकवालामां ५३॥ लाख
कोडी कहीं

मनुष्यना दंडकवालामां १२ लाख कोडी कुल
जाणवा

ए रीते चौबीस दंडकनी कुलकोटी कही

इति ३५ मुं कुलकोटीद्वार संपूर्ण.

इति ३५ द्वार समाप्त. ए रीते चौबीस दंडकनेविषे
समुच्चयें करीने ३५ द्वारनो विचार संक्षेपे लख्यो छं
षधी निशेष जीवचार तथा संघयण तथा दंडक अ-
ने महादंडकथी अने वलीसूत्रसिद्धांतधी जाणवूं अने
एमा झुलचुक ललाणी होय तेने। मित्रामी दुइदंड छं
अने वाचनारा पुरुषों गुदना मुखयकी निर्ये करीने
बाचवूं.

श्री १४ गुणस्थानक उपर ४९ द्वार.

श्री समवायाम् सूत्रमा १४ गुणस्थानक कक्षा के वे
पर ४९ द्वार कहे के तेना नाम लखिए छीए.

१ नामद्वार, २ लक्षणद्वार, ३ स्थितिद्वार
४ क्रियाद्वार, ५ सत्ताद्वार, ६ बंधद्वार, ७ उदयद्वार
८ उदीरणद्वार, ९ निर्जराद्वार, १० भावद्वार,
११ करणद्वार, १२ परिपहद्वार, १३ आत्मद्वार,
१४ संज्ञीअसंज्ञीद्वार, १५ संज्ञाद्वार, १६ आहारिक
अनाहारिकद्वार, १७ वेदद्वार, १८ प्राणद्वार,
१९ पर्यायद्वार, २० शरीरद्वार, २१ कषायद्वार,
२२ संघयणद्वार, २३ संस्थानद्वार, २४ समोसरण
द्वार, २५ समुद्रघातद्वार, २६ अवगाहनाद्वार,
२७ कायद्वार, २८ जातिद्वार, २९ गतीद्वार,
३० दृष्टीद्वार, ३१ सम्यक्तद्वार, ३२ ज्ञानाज्ञानद्वार
३३ दर्शनद्वार, ३४ भवद्वार, ३५ संयमद्वार,
३६ चात्रिद्वार, ३७ नीयताद्वार, ३८ भेदद्वार,
३९ गुणगुणाद्वार, ४० जागद्वार, ४१ उपयोगद्वार
४२ लेश्याद्वार, ४३ हेतुद्वार, ४४ मार्गनाद्वार,
४५ ध्यानद्वार, ४६ दंडकद्वार, ४७ जीवधोर्नद्वार,
४८ सांतरनिरतरद्वार, ४९ अल्पबहुत्वद्वार

પ્રથમ નામદ્વાર લખીએ છીએ

૧. મિથ્યાત્વ ગુણસ્થાનક, ૨ સાસ્વાદન ગુણસ્થાનક
૩. મિર્ષા ગુણસ્થાનક ૪ અવિરતિ સમ્યક્દષ્ટી ગુણ-
સ્થાનક, ૫ દેશવિરતિ ગુણસ્થાનક, ૬ પ્રમત્ત ગુણ-
સ્થાનક, ૭ અપ્રમત્ત ગુણસ્થાનક, ૮ અપૂર્વકરણ
ગુણસ્થાનક, ૯ અનિવૃત્તિ ગુણસ્થાનક, ૧૦ મૂલ્મ
સંપરામ ગુણસ્થાનક, ૧૧ ઉપશાંતિ ગુણસ્થાનક,
૧૨ ક્ષીણમોહ ગુણસ્થાનક, ૧૩ સયોગી ગુણસ્થાનક,
૧૪ અયોગી ગુણસ્થાનક

નામદ્વાર સંપૂર્ણ.

હવે લક્ષણદ્વાર લખીએ છીએ.

પ્રથમ ગુણઠાણાનું લક્ષણ કહિએ છીએ શ્રી વીતરામ-
ની વાણી આધિકી ઓછી પ્રરૂપે વિપરીત સર્દહે જિન
ધર્મ ઉપર મેલા પરિણામ રાલે તેને મિથ્યાત્વ ગુણઠા-
ણું કહે છે ત્યારે ગૌતમસ્વામી હાથ જોડી વંદના ન-
મસ્કાર કરી શ્રી ભગવંતને પૂછે છે સ્વામીજી! આ
જીવાદિક પદાર્થને ક્રિયા ગુણ પ્રાપ્ત થાય છે ત્યારે
કહે છે હે ગૌતમ જીવરૂપ દઢી કર્મરૂપ લકવી ચાર
ગતિ ચોથી દંડકને પરીભ્રમણ કરે પણ સિદ્ધિગ-
તિ નહીં પામે કહી પણ સુલસાતા નહીં મિથ્યાદષ્ટી

संक्लिष्ट परिणामी नरक गतीनां बंध पाडे तो नाम कर्मनी २८ प्रकृतीनां बंध पाडे ते. कहे छे.

१ नरक गति, २ पंचेद्री जाति, ३ वैक्रीय शरीर ४ तैजस शरीर, ५ कार्मण शरीर, ६ वैक्रीय शरीरना अंगोपांग, ७ हुडक संस्थान, ८ वर्ण, ९ गंध, १० रस, फरस खराब, ११ नरक अनुपूर्वी, १३ अगुरु लघुनाम १४ पराघात नाम, १५ उपाघात नाम, १६ उसास नाम, १७ अप्रशस्त नाम १८ त्रस, १९ वादर, २० प्रत्येक नाम, २१ अपर्याप्ति, २२ अस्थिर, २३ अशुभ, २४ दौर्भाग्य २५ दुःस्वर, २६ अनादेय, २७ अजस, २८ निर्माण नाम मिथ्या दृष्टी विकलेद्री अपर्याप्ति रजन संक्लिष्ट परिणामी नाम कर्मनी २८ प्रकृतीनां बंध पाडे ते कहे छे. १ तिर्येच गति, २ विकलेद्री जाती, ३ उदारिक शरीर, ४ उदारिकना अंगोपांग, ५ तेजस शरीर, ६ कार्मण शरीर, ७ छेवठा संघयण, ८ हुडक संस्थान, ९ वर्ण, १० गंध ११ रस, १२ फरस, १३ तिर्येचनी आनुपूर्वी, १४ अगुरु लघुनाम, १५ पराघात नाम, १६ उपाघात, १७ उसास नाम, १८ अप्रशस्त नाम, १९ त्रस, २० वादर, २१ प्रत्येक, २२ अपर्याप्ति २३ अस्थिर, २४ अशुभ, २५ दौर्भाग्य, २६ दुःस्वर, २७ अनादेय, २८ अयज्ञ कीर्ती निर्माण मिथ्यात्व

ગુણઠાણે સત્ત્વી મનુષ્યતિર્યંચમાં ૭૮ પ્રકૃતીનો બંધ
 પાઢે તથા મનુષ્યગતીનો બધ પાઢે તો નામ ક-
 ર્મની ૭૮ પ્રકૃતીનો બધ પાઢે તે કહે છે. ૧ મનુ-
 ષ્યની ગતિ, ૨ વૈક્રી જાતી, ૩ ઉદારિક શરીર,
 ૪ વૈક્રીય શરીર, ૫ તેજરા શરીર, ૬ કાર્મણ શ-
 રીર, ૭ ઉદારિક વૈક્રીય અંગોપાંગ, ૮ થી ૧૨
 ઉદારિક, વૈક્રીય, તેજસકાર્મણ યથન એવં ૧૨ ઉ-
 દારિક, વૈક્રીય, તેજસકાર્મણ, સંઘાતન એવ ૧૬
 સંઘયણ ૬ સંસ્થાન ૬ એવ ૨૮ વર્ણ ૫ ગંધ ૨
 રસ ૧ ફરસ ૮ એવં ૪૮ ત્રસ ૪૯ ઘાદર ૬૦ પ્રત્યે
 ક ૧૧ પર્યાપ્તિ ૬૨ સ્થિર નામ ૬૩ શુભ ૧૪ સૌ-
 ભાગ્ય ૫૫, સુસ્વર ૬૬, આદ્ય ૧૭, યજ્ઞકીર્તી
 ૫૮ યાદર, ૧૯ મૂક્ષ, ૬૦ સાચારણ, ૬૧ પર્યાપ્તિ,
 ૬૨ આસ્થિર, ૬૩ અશુભ, ૬૪ દૌર્ભાગ્ય, ૬૫ દુઃસ્વ-
 ર, ૬૬ અનાદેય, ૬૭ અયજ્ઞ કીર્તિનામ, ૬૮ અ-
 ગુરુલયુ ૬૯ પરાયાત નામ ૭૦ ઉપવાત ૭૧ ઉદ્યોત
 નામ ૭૨ આતપ નામ ૭૩ ઉશ્વાસ નામ ૭૪ પ્રશસ્ત
 નામ, ૭૫ અપ્રશસ્ત નામ, ૭૬ નિર્માણ નામ ૭૭
 મનુષ્યકો આનુપૂર્વી, ૭૮ મિથ્યાત્વ ગુણઠાણે દેવગ-
 તિનો બંધ પાઢે તો નામ કર્મની ૨૮ પ્રકૃતીનો બંધ પા-
 ઢે તે નારકીની પરે જાણવું દેવતામાં શુભ અને ના-
 રકીમાં અશુભ તથા અભવ્ય જીવ મોહની કર્મની સ-
 ત્તા આસરી પ્રકૃતીનો બંધ પાઢે તો સમ્યક્ત્વ મોહની

મિશ્ર મોહની છોડાને પાઠે તથા ઋષ્ય જીવ મોહની
કર્મનો સત્તા આસરી ૨૮ પ્રકૃતીનો વંધ પાઠે પરી-
તે પ્રથમ ગુણઠાણાનું લક્ષણ કહ્યું

સાસ્વાદન ગુણરથાન્ના લક્ષણ કહે છે તેના ૩ દૃષ્ટાં
ત છે પ્રથમ દૃષ્ટાંત તો આ છે કે, કેટલાક પુરુષ ઘ-
ણા કાલથી કુષાત્તર થા તેને સ્ત્રીસ્વાંઠ જિમાઠે તો
તથા તેને ઝલટી હોવાથી કિંચિત્ સ્વાદ વાઢી રહે
છે તે પ્રમાણે સમ્યક્ત્વ પાછો જાય તો વમન કરી દિ
ધા તે પ્રમાણે સાસ્વાદન સામ્યક્ત્વ કહે તથા બી-
જો દૃષ્ટાંત ઘડીનો અવાજ પ્રથમ તો ગહીર, ગંઘીર
શબ્દ થાય તે પ્રમાણે સાસ્વાદન સમ્યક્ત્વ કહવું તથા
ત્રીજો દૃષ્ટાંત આ છે કે, જીવરૂપ આંબો પરિણામરૂપ
ઢાલ સમ્યક્ત્વરૂપી ફલ મિથ્યાત્વરૂપી ધરતી પરિ-
માણરૂપી ઢાલથી સમ્યક્ત્વરૂપી ફલ ટુટ્યું મિથ્યાત્વરૂ-
પી ખૂરીઝર પડ્યું નહીં તેને સાસ્વાદન સમ્યક્ત્વ કહેવું
ત્યારે ગૌતમસ્વામી હાથ જોડાને વંદના નમસ્કાર ક-
રીને શ્રી ભગવંતને પુછ્યું હે સ્વામી આ જીવાદિક
પદાર્થને શુ ગુણ ઉત્પન્ન થયા ત્યારે ભગવંત કહે છે
કે, હે ગૌતમ અર્થ પુદ્ગલ પરાવર્ત સંસાર પરિભ્રમણ
કરીને શ્રુતિ જાસે તે આ દૃષ્ટાંતથી જાણવું એમ કે,
કેટલાક પુરુષના શિરઊપર દેશું ઘણા કાલનું હતું
કેટલાક કમાવતો અને દેતો ગયો હવે વાકી અર્થ
રૂપીયો રહ્યો ત્યારે આ કહે હવંતો મારાથી પેદા હો-
તા નથી સ્વપ્ન થતા તો સર્વ દેશું ડતરી જતું એમ

के ३४३ राजलोकना अनन्ता पुद्गल परावर्तन करे तो ते ६ आविलना उग्रमसमकित फरसवे करी अनन्ता पुद्गल छेदे एक पुद्गलमाथी अर्ध पुद्गल बाकी रह्यो तेने फरता अतंतो काल लागे एवा गुण पेदा थया ए रीते सास्वादन गुणठाणानु लक्षण जाणवू. मिश्र गुणस्थानकज्ञा लक्षण कहे छे. तनो दृष्टांत ए-म के, कोई एक नगरनाविषे साधुजी पध्या घणा गुणवंत क्षमावंत त्यारे कोई एक जीव मनमा चि-त्रावणा क्री के आज साधुजीने वंदना करवी एवा मनमा विचार करीने वंदननामाटे पग उचल्यो पछे परिणाम फरी गयो पग आगळ मुक्री शक्या नहीं बळी पण दृष्टांत कहे छे के, श्रीखंडनो स्वाद मिठ, समानं समक्त्व खाटासम न मिथ्यात्व अनन्ता काल-ता उलटा इता तेने सुलटो कयो सम्यक्त्व सनख वेठो पण पग आगळ मुकवाजे समर्थ नहीं थयो त्यारे गौतमस्वामी हाथ जोडीने प्रश्न कयो के हे स्वामी आ जीवादिक पदार्थने शु गुण पेदा थया त्यारे भगवंत कहे छे के हे गौतम जीव अनन्त कालनो कृष्णपक्षी हंतो पछे शुक्लपक्षी थई. अर्ध पुद्गलमां संसारने राख्यो. प्रथम मलीन परिणाम हतो पछे तेनु उज्जल परिणाम थयुं सम्यक्त्व वंदवा फरसवा-मोहनी कर्मनी ३७ प्रकृती वंदनो थयो सम्यक्त्व मोहनी टळी. इति श्रीमिश्र गुणठाणाना लक्षण.

અવિરતી સમ્યક્ દૃષ્ટી ગુણઠાણાના લક્ષણ કહે
 છે તેની પ્રકૃતિ ૭ અનંતાનુબંધી ક્રોધ, માન, માયા,
 લોભ, મિથ્યાત્વ મોહની, સમ્યક્ત્વ મોહની, મિત્ર
 મોહની, એ સાન ઉપર નવ ભાગ કહે છે પહેલા
 ભાગમાં ૪ પ્રકૃતી સ્વપાત્રે પ્રથમ ૩ પ્રકૃતી ઉપશમાત્રે
 તેને ક્ષયોપશમ સમ્યક્ત્વ કહે છે તથા વીજા ભાગમાં
 ૫ પ્રકૃતી પેદેશી સ્વપાત્રે વે ઉપશમાત્રે તેને ક્ષયોપશમ
 સમ્યક્ત્વ કહે છે નિસરા ભાગમાં ૬ પ્રકૃતી પહેલી સ્વ-
 પાત્રી એક ઉપશમાત્રે તેને ક્ષયોપશમ સમ્યક્ત્વ કહે
 છે ચોથા ભાગમાં ચાર પ્રકૃતી પહેલી સ્વપાત્રે વે ઉપ-
 શમાત્રે એક વેદે તેને ક્ષયોપશમ વેદક સમ્યક્ત્વ કહે
 છે પાંચમા ભાગમાં પાંચ પ્રકૃતી સ્વપાત્રે એક ઉપશમાત્રે
 એક વેદે તેને ક્ષયોપશમ વેદક સમ્યક્ત્વ કહે છે. છ-
 ઠા ભાગમાં ૬ પ્રકૃતી ઉપશમાત્રે એક વેદે તેને ઉપશ-
 મ વેદક સમ્યક્ત્વ કહે છે સાતમા ભાગમાં ૬ પ્રકૃતી
 સ્વપાત્રે એક વેદે તેને ક્ષાયક વેદક સમ્યક્ત્વ કહે
 છે આઠમા ભાગમાં સાત પ્રકૃતી ઉપશમાત્રે તેને ઉપશમ
 સમ્યક્ત્વ કહે છે નવમા ભાગમાં સાત પ્રકૃતી સ્વ-
 પાત્રે તેને ક્ષાયક સમ્યક્ત્વ કહે છે એ વહત જીવને
 ચોથા ગુણસ્થાનક આવે જીવાદિક પદાર્થના
 જાણ થાય દ્રવ્ય, સેત્ર, કાન્ત, ભાવ, ગુણ
 યક્ષી નવકારસી આદિથી વરસી તપની સદ્ગુણા
 યથોક્ત શુદ્ધ સમ્યક્ત્વ પાલ્લવું ત્યારે શિષ્ય પુછે કે

हे भगवंत ए जीवादिक पदार्थने शुं गुण प्राप्त थयो
 भगवंत कहे छे क हे गौतम ए सम्यक्त्व दृष्टिना भला
 अध्यवसाय वर्तता थका एकांत सम्यक्त्वमां यथपा-
 ढं सात स्थानक वरजीने एक वैमानिक देवनी ग-
 ति बांधं सात स्थानक कहे छे नारकी १ भवनपती
 २ वागव्यंतर ३ ज्योतीषा ४ तिर्यव ५ स्त्रीवेद ६
 नपुंसक ग्रेद् ७ ए सात स्थानक समांकित दृष्टी न
 बांधं एक वैमानिकमां जाय ते २९ प्रकृती कहे, छे.
 आठ्ठावीस जा मिथ्यातगुणस्थानक देवगतांनो बं-
 ध पाडे ते जाणवा वळी एक तीर्थंकर नामकर्म ए
 २९ प्रकृतिनो बंध पाडे ४ गुणस्थानकना लक्षण सं-
 पूर्ण

देशविरती गुणस्थानकना लक्षण कहे छे तेनी प्र-
 कृति ११ छे ७ पूर्वोक्त कक्षा ते वे चार अप्रत्यास्वा-
 नी क्रोध म न माया लोभ ए ११ प्रकृतीनां उपशम
 करे त्यागे पांचगुं गुणस्थानक अवे जीवादिक पदा-
 र्थ ओळखे द्रव्यने द्रव्यथी ओळखे क्षेत्रना १४
 राजलोक आकाशनी जाण थाय; कालथी समय स-
 मय आवलिकानो जाण थाय; भावथी वर्ण, गंध,
 रस, स्पर्शना पर्यायना भावनी जाण थाय, गुणथी
 जिवितत्व अजीवितत्व ज्ञान दर्शन चारित्र तपना पर्या-
 यना भावना जाण होय. द्रव्य, क्षेत्र काल भाव गुण-
 थो नवकारसीआदि वरसी तपनी सहृणा करवी,

शक्तिभुजव तप करवुं. शिष्य पूछे छे हे भगवंत
ए जीवादिक पदार्थने शुं गुण थयो त्यारे भगवत
कहे हे गौतम, जघन्य हे भव उत्कृष्ट १५ भवे मुक्ति
मा जाय. इनि पांचमां गुणठाणाना लक्षण संपूर्ण.

छटा प्रमाद गुणस्थानकना लक्षण कह छे एनी
प्रकृती १५ छे ११ प्रकृती पूर्वोक्त कही ते वज्रो ४
प्रकृती प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, शोभ ए
१५ प्रकृतीनो उपशम करे त्यारे छठुं गुणस्थानक
आवे जीवादिक पदार्थना जाण होय द्रव्ययी, क्षेत्रयी,
कालयी, भावयी, गुणयी नवकारसीआदि लइने वा
रसी तपनी सहजणा तेना शक्ति अनुसार तप करवुं
त्यारे शिष्य पूछे छे के हे भगवत ए जीवादिक प-
द र्थने शुं गुण थयो त्यारे भगवंत कहे छे के हे गौ-
तम जघन्य एज भवे मध्यम प्रण भवे उत्कृष्ट पंधर
भवे मुक्तिमां जाय इति छटा गुणस्थानकना लक्षण
संपूर्ण

सातमा गुणस्थानकनुं लक्षण कह छे एनी राव
मदविसय कषाय निंदाय विकहा पंच
भणिया पमाया जीवा पाडंती संसारे १
ए पंच प्रमाद त्यागे त्यारे जीव सातमा गुणस्थाने
आवे तेनी प्रकृती १५ पूर्वोक्त प्रकृती वोछ क्षयोपशम

करे त्यारे सातमा गुणस्थानके आवे जीव पदार्थनु जाणपणु थाय. द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, गुणथी न-
वकारसी आदिथी वरसी तपनी सदहणा करवी
शक्ति अनुसार तप करे त्यारे शिष्य पुछे छे ए
जीवादिक पदार्थने शुं गुण थयो त्यारे भगवंत कहे
छे हे गौतम, जघन्य १, २, ३ भवे अने उत्कृष्ट ७,
८ भवे मुक्ति थाय इति सातमा गुणस्थानकना लक्षण
संपूर्ण

आठमा गुणस्थानकना लक्षण कहे छे अपूर्व कर
ण शुद्ध ध्यान आवं त्यारे आठगु गुणस्थानक आवे
तेनी प्रकृती पंदर पूर्वोक्त जाणवी इहां व श्रेणी आरं-
भे १ उपसम श्रेणी १ क्षपक उपराम श्रेणी ते उपस-
मानुं लक्षण कहे छे ते पंदर प्रकृती उपसमावे त्यारे
आठमुं गुणस्थानक थं.य

हवे नवमा गुणस्थानकनुं लक्षण कहे छे तेनी
प्रकृती २१ छे पंदर पूर्वोक्त अने हास्य, रति, अरति,
मय, शोक, दुःख, ए २१ प्रकृती उपसमावे त्यारे
नवमुं गुणस्थानक आवे

हवे १० मा गुणठाणाना लक्षण कहे छे तेनी प्रकृती
२७ कहे छे २१ पूर्वोक्त तथा ६ वली संज्वलन, क्रो-
ध, मान, माया, २४ स्रुवेद २५ पुरुषवेद २६ न-
पुंसकवेद २७ एवं ए प्रकृती अने उपसमावे त्यारे
१० शुं गुणठाणुं आवे

હવે ૧૧ મો ગુણઠાણના લક્ષણ કહે તેની: પ્રકૃતી ૨૮ જેમાં ૨૭ પૂર્વોક્ત અને એક સંજ્વલનો લોભ મે-
ઝવતા એવું ૨૮ ઉપસમાવે ત્યારે ૧૧ મું ગુણઠાણું
આવે ત્યાં કાલ કરે તો સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાં જાય
અગર નિષ્ઠા પડે તો ૧૦૧૧૮૧૭૬ માં આવે પછી
પેહેલા ગુણઠાણામાં આત્મી પડે ત્યારે શિષ્ય પૂછે કે,
મગવંત આ જીવ ઉપર ચઢી કેમ પડે છે ત્યારે મગ-
વંત કહે કે, હે ગૌતમ, જીવે મોહની કર્મ ઉપસમાવ્યું
હતું પણ ક્ષય કર્યું હતું તેથી પાછો પડે.

હવે ક્ષપક શ્રેણીનું લક્ષણ કહે છે. પૂર્વોક્ત ૧૫
પ્રકૃતિ સ્વપાવે ત્યારે આઠમે ગુણઠાણે આવે પૂર્વોક્ત
૨૧ પ્રકૃતિ સ્વપાવે ત્યારે ૯ મે ગુણઠાણે આવે પૂર્વો-
ક્ત ૨૭ પ્રકૃતિ સ્વપાવે ત્યારે ૧૦ મે ગુણઠાણે આવે
ત્યાં સંજ્વલન સૂક્ષ્મ લોભ જે રહ્યો હતો તે સ્વપાવી
૧૧ મું ગુણઠાણું ઓલંધી ૧૨ મે ગુણઠાણે આવે
ત્યાં ૧ જાતના લાડવા કોઈ સાધુએ ચુરેલા હતા
પણ પરઠવ્યા નહીં. જેમ ૩ ઘનઘાતિયા કર્મ જ્ઞાના-
વરણી દર્શનાવરણી અંતરાય એ સ્વપાવી વત્તરમા ગુ-
ણઠાણાથી ૧૩ મે ગુણઠાણે આવે ત્યાં ૧૦ બોલ
પ્રગટ થાય છે. વા લાલ્યા આવે છે તે કહે છે, શ-
રીર ૧ સયોગી ૨ સુલેસી ૩ શુભલેસી ૪ શુભધ્યાન
૫ પંડિત વીર્ય ૬ ક્ષાયકસમકિત ૭ યથાહ્યાત ચા-
રિત્ર ૮ કેવલજ્ઞાન ૯ કેવલદર્શન ૧૦ એ દશ બોલ

તેરમા ગુણઠાણાસુધી હોય છે તેરમાં ગુણઠાણાર્થી
ચઙ્ગમા ગુણઠાણામાં જાય ત્યાં સાત વોલ સાથે
લેઈ જાય. સયોગી ૧ તલેસી ૨ દુગ્ધલેસી ૩ એ
ત્રણ વોલ દશમાથી છુટી ગયા

હવે ચૌદમાં ગુણઠાણાના લક્ષણ કહે છે ૪ અઘા-
તી કર્મ સ્વપાવી મોક્ષમાં જાય. ત્યાં ૩ વોલ સાથે
લેઈ જાય ક્ષાયકસમકિત ૧ કેવલજ્ઞાન ૨ કેવલ-
દર્શન ૩

इति लक्षणद्वार संपूर्ण.

હવે સ્થિતીદ્વાર કહે છે

પેહેલા ગુણઠાણાની ત્રણ પ્રકારની સ્થિતી છે અ-
ણાદિયા અપજ્જવસિયા જે મિથ્યાત્વની આદિ અને
અંત નથી ને અમન્ય જીવ આશ્રયી જાણવા અણાદિયા
સપજ્જવસિયા જે ને મિથ્યાત્વની આદિ નથી પણ અં-
ત છે તે મન્ય જીવનો મિથ્યાત્વ આશ્રય જાણવો તથા
સાદિયા સપજ્જવસિયા તે જે મિથ્યાત્વને આદિ, અંત
વત્તો છે તે પદ્ધતિસમ દિઠીનો મિથ્યાત્વ આશ્રય તે-
ની સ્થિતી જઘન્ય અંતર્મુહુર્ત ઉત્કૃષ્ટો અર્ધપુદ્ગલ પરા-
વર્તન દેસે ઊની જાણવી પછી અવશ્ય સમકિત પા-
માં મોક્ષ જાય. વીજા ગુણઠાણાની સ્થિતી જઘન્ય
સમય ઉત્કૃષ્ટ ૬ આલેલિકા સાત રામયની ત્રિજા

ગુણઠાણાની સ્થિતી જઘન્ય ઉત્કૃષ્ટ અંતર્મુહૂર્તની ચો
થા ગુણઠાણાની સ્થિતી જઘન્ય અંતર્મુહૂર્તની ઉત્કૃષ્ટ
૬૬ સાગરોપન બ્રાહ્મરા ૨૨ સાગરોપમની સ્થિતી ૩
વસ્ત ૧૨ દેવલોકનાં ઉપજે ત્રણ પૂર્વ કોઢી મનુષ્ય
ના મધ આશ્રયી જાણવો અગર વે વસ્ત અનુચ્ચર
વિમાનનાં ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતી ઉપજે ૩૩ વ
મણી ૬૬ સાગરોપન અને પૂર્વ કોઢી ૩ અધિક મનુ
ષ્યમધ જાણની પાંચમા, છઠા અને તેરમાં ગુણઠાણા
ની સ્થિતી જઘન્ય અંતર્મુહૂર્ત ઉત્કૃષ્ટ દેશે ણી પૂર્વ
કોઢ સાત, આઠ, નવ, દશ, અગ્યારની જઘન્ય ૧
સમય ઉત્કૃષ્ટ અંતર્મુહૂર્તની વારમા ગુણઠાણાની જઘન્ય
ઉત્કૃષ્ટી અંતર્મુહૂર્તની તેરમા ગુણઠાણાની જઘન્ય અંત-
ર્મુહૂર્ત ઉત્કૃષ્ટ દેશ ણ કોઢ પૂર્વ ચૌદમાં ગુણઠાણાની
સ્થિતી પાંચ લઘુ અક્ષરની અ, ઇ, ઉ, ઋ, ૠ પટલું
ઉચ્ચારણ કાલ જાગવો.

इति स्थितीद्वार संपूर्ण.

हवे चे थुं क्रियाद्वार कहे छे.

મૂલ પાંચ ક્રિયા આગંભિયા ૧ પરિગ્રહીયા ૨ માયા
વત્તીયા ૩ અપચ્ચરકાણિયા ૪ મિથ્યાદર્શનવત્તીયા ૫
હવે પહેલાતીજા ગુણઠ ણામાં પાંચે ક્રિયા લામે વીજા
ચોથા ગુણઠાણામાં ૧ લામે મિથ્યાત્વ ટલ્યું પાંચમે ગુણ

ठाणे ३ क्रिया लाभे अपचरकाणिया टली छठे गुणठाणे
 २ क्रिया लाभे परिग्राहिया टली ७।८।९।१० मे गुणठा
 णे एक क्रिया लाभे आरंभिया टली ११।१२।१३।१४
 मे गुणठाणे पांच क्रियामांथी कोई क्रिया नथी २५
 प्रकारनी उत्तरक्रिया कहे छे. १।३ गुणठामां २४ क्रि
 या लाभे इर्यावहि क्रिया छोडी बीजे चोथे गुणठाणे
 २३ क्रिया लाभे इर्यावही अने मिथ्यात्वनी ए वे
 छोडी पांचमे गुणठाणे २१ क्रिया लाभे मिथ्यात्व
 अविस्ती इर्यावही ए त्रण छोडी छठा गुणठाणामां
 २ क्रिया लाभे आरंभिय मायावत्तिया सातमां गु-
 णठाणाथी दशमासुधी मायावत्तिया क्रिया लाभे अ-
 ग्यार बार तेर ए त्रण गुणठाणामां इर्यावहि क्रिया-
 लाभे चौदहमां कोई क्रिया नथी.

इति क्रियाद्वार संपूर्ण

हवे सत्ताद्वार कहे छे.

पेहेला गुणठाणाथी ११मा सुधी ८ कर्मनी सत्ता
 १२ में गुणठाणे ७ कर्मनी सत्ता मोहनी कर्म बज्यो
 तेरमे चौदमे गुणठाणे चार अघाती कर्मनी सत्ता.

इति सत्ताद्वार संपूर्ण.

હવે વંધદ્વાર કહે છે.

પેહેલા ગુણઠાણેથી ત્રીજૂ ગૂગઠાણું છોડી
સાતમાસુધી ૮ કર્મ અગર ૭ કર્મ વાંધે.
સાત વાંધે ત્યારે આઝસું છોડી ત્રીજે આઠમે
નવમે ગુણઠાણે કર્મ વાંધે આઝસું છોડી દશ-
મે ગુણઠાણે ૬ કર્મ વાંધે આઝસું મોહની છોડી ૧૧
૧૨ ૧૩ ૫ ત્રણ ગુણઠાણે સાતા વેદની કર્મ વાંધે
૧૪ મે ગૂણઠાણે વંધ નથી.

इति वंधद्वार संपूर्ण

હવે ઉદયદ્વાર કહે છે.

પેહેલા ગુણઠાણાથી દસમાસુધી ૮ કર્મોના ઉદય
૧૧ ૧૨ મામાં મોહની કર્મ છોડી સાત કર્મોનો ઉ-
દય ૧૩ ૧૪ મા ગૂગઠમાં ૪ અઘાતી કર્મનો ઉદય.
इति उदयद्वार संपूर्ण

હવે ઉદીરણા દ્વાર કહે છે.

હવે ગુગઠાણાથી ત્રીજૂ ગુગઠાણું છોડી છઠા ગુણઠા-
સુધી ૭ ૮ કર્મ ઉદિરે ૭ ઉદિરે ત્યારે આયુર્કર્મ વ-
ર્જવૂ ૩ ગુણઠાણે આઠ કર્મ ઉદિરે ૭ ૮ ૧ મા ૬ ક-
ર્મ ઉદિરે આયુ વંદની છોડી ૧૦ મે ગુણઠાણે ૬ ત-

या ५ उदिरे ६ प्रथम कक्षा तेज पांच उदिरे तो मोहनी छुटे ११ मे गुणठाणे ५ कर्म उदिरे दशमा प्रमाणे १२ मे गुणठाणे ५ कर्म उदिरे तेज तथा नाम, गोत्र, कर्म उदिरे १३ मे गुणठाणे नाम, गोत्र, कर्म उदिरे १४ मे गुणठाणे उदिरणा नयी।
इति उदिरणाद्वार संपूर्ण.

हवे निर्जराद्वार कहे छे

पेहला गुणठाणाथी १० मा गुणठाणासुधी ८ कर्म निर्जरे ११।१२ गुणठाणे ७ कर्म निर्जरे मोहनी कर्म छोडी १३।१४ मे गुणठाणे ४ अघाती कर्म निर्जरे
इति निर्जराद्वार संपूर्ण.

हवे भावद्वार कहे छे.

५ भावोना नाम उदयभाव १ उपशम भाव २ क्षायक भाव, ३ क्षयोपशम भाव ४ परिणामिक भाव ५ १।२।३ गुणठाणामा ३ भाव लाभे उपशम क्षायक छुटे चौथा गुणठाणाथी ११ मा सुधी ५ भाव लाभे १२ मामा ४ लाभे उपशम छुट्युं १३।१४ मा गुणठाणे ३ भाव लाभे उदय क्षायक परिणामिक
इति भावद्वार संपूर्ण

હવે કારણદ્વાર કહે છે.

૫ કારણ છે ૧ મિથ્યાત્વકારણ, ૨ અવિરતિ,
૩ પ્રમાદ, ૪ કપાય, ૫ યોગ ૧।૩ ગુણઠાણમાં ૫
કારણ લાભે ૨।૪ ગુણઠાણમાં ૪ કારણ લાભે મિ-
થ્યાત્વ છુટ્યું ૫।૬ ગુણઠાણમાં ૩ કારણ લાભે મિ-
થ્યાત્વ, અવિરતિ છાંછી ૭।૮।૧।૧૦ માં ૨ કારણ
લાભે કપાય ને યોગ એ વે લાભે ૧।૧।૨।૧૩ માના
૧ કારણ લાભે યોગ એક ૧૪ મામાં કારણ નથી
इति कारणद्वार संपूर्ण.

હવે પરિસહ દ્વાર કહે છે

૨૨ પરિસહ છે આયુર્કર્મના ઉદયથી પરિસહ
ઉપજે તે છે જાનાવરણી કર્મના ઉદયથી ૨ પરિસહ
ઉપજે ૨૦।૨૧ ડર્ગનાવરણી કર્મના ઉદયમાં પરિસહ
નથી વેદની કર્મના ઉદયથી ૧૧ પરિસહ ઉપજે
૧।૨।૩।૪।૫।૬।૭।૮।૯।૧૦।૧૧।૧૨।૧૩।૧૪।૧૫।૧૬।૧૭।૧૮ મોહની કર્મના
ઉદયથી પરિસહ ઉપજે તેના ૨ ખેટ છે સમાંકિત
મોહનીના ઉદયથી ૧ પરિસહ ઉપજે ૨૨ માં ચારિત્ર
મોહની કર્મના ઉદયથી ૭ પરિસહ ઉપજે ૧।૭।૮
૧૦।૧૨।૧૪।૧૬ આઝ્જુ નામ કર્મ અને ગોત્ર કર્મ-
ના ઉદયમાં પરિસહ નથી અંતરાય કર્મના ઉદયે એ-
ક અલામ પરિસહ ઉપજે ૧૫ માં ૧ ગુણઠાગથી ૯
મા ગુણઠાણાસુથી ૨૨ પરિસહ ઉપજે તે મધ્યે ૨૦ વ-

दे २ ना वेदे शीत होय त्यां उष्ण नहीं उष्ण होय
 त्यां शीत नहीं चरिया होय त्यां निसिया नहीं नि-
 मिया छे त्यां चरिया नहीं १०।११।१२। मे गुणठाणे
 चौद परिसह उपजे मोदनी कर्मना ८ परिसह व-
 ज्यर्षा तेमांथी १२ वेदे २ न वेदे १३।१४ मां गुणठा-
 णामां ११ परिसह उपजे तेमां ९ वेदे २ न वेदे २
 वेदवेदनी कर्मना ११ परिसह ज्ञाणवा
 इति परिसहद्वार संपूर्ण

इवे आत्माद्वार कहे छे.

आत्माना आठ भेद छे १ द्रव्यआत्मा, २ कषाय-
 आत्मा, ३ योगआत्मा, ४ उपयोगआत्मा, ५ ज्ञा-
 नआत्मा, ६ दर्शनआत्मा, ७ चारित्रआत्मा ८ वि-
 र्थात्मा. ए आठ आत्मायागी १३ गुणठाणामा ६
 आत्मा लाभे हानात्मा, चारित्रात्मा छुटी गया २४
 ५ मां गुणठाणामा ७ आत्मा लाभे चारित्रात्मा छोटी
 ६ थी १० मात्तुथी ८ आत्मा लाभे ११।१२।१३ मामा
 ७ आत्मा लाभे कषायआत्मा छुट्या १४ मामा ६
 आत्मा लाभे कषाय योगात्मा छुटी गयो.

इति आत्माद्वार संपूर्ण.

હવે સત્રીઅસત્રીનું દ્વાર કહે છે.

૧૧૮ ગુણઠાણામાં સત્રીઅસત્રી વે લામે ૩ આ
ગુણઠાણાથી ૧૪ સુધી એકલું સત્રી લામે.
इति सत्रीअसत्री द्वार संपूर्ण.

હવે સંજ્ઞાદ્વાર કહે છે.

સંજ્ઞા ૪ છે. આહારસંજ્ઞા ૧ મયસંજ્ઞા ૨ મૈથુનસં-
જ્ઞા ૩ પરિગ્રહસંજ્ઞા ૪. ૧ ગુણઠાણાથી ૬ સુધી સંજ્ઞા
છે ૧૪ સુધી સંજ્ઞા નથી.
इति संज्ञाद्वार-संपूर्ण.

હવે આહારિક અનાહારિકદ્વાર કહે છે.

૧૧૮/૪/૧૩ એ ચાર ગુણઠાણામાં આહારિક અ-
નાહારિક વને લામે ૩/૫/૬/૭/૮/૯/૧૦/૧૧/૧૨ એ
ગુણઠાણામાં એક આહારિક લામે અને ૧૪ સુધી ગુણ-
ઠાણુ અનાહારિક છે.

इति आहारिक अनाहारिकद्वार संपूर्ण.

હવે વેદદ્વાર કહે છે.

વેદ ૩ સ્ત્રીવેદ ૧ પુરુષવેદ ૨ નુસત્તવેદ ૩ પ્રથમ
ગુણઠાણાથી ૯ માં ગુણઠાણા સુધી વેદ ૩ લામે દશ

માથી ૧૪ સુધીં વેદ નથી.

इति वेदद्वार संपूर्ण.

हवे प्राणद्वार कहे છે

પ્રાણ ૧૦ છે પ્રથમ ગુણઠાળાથી ૧૨ સુધી ૧૦
પ્રાણ લાભે ૧૩ માં ગુણઠાળે ૫ પ્રાણ લાભે પાંચ ઇં-
દ્રિ ટલ્લી ૧૪ માંમા ૧ આયુષ્યવલ પ્રાણ લાભે.

इति प्राणद्वार संपूर्ण

हवे पर्यायद्वार कहे છે

પર્યાય ૬ છે પ્રથમ ગુણઠાળાથી ૧૨ ગુણઠાળા-
સુધી ૬ પર્યાય લાભે ૧૩ મામા ૫ પર્યાય લાભે ઇંદ્રી
પર્યાય છૂટી ગયો ચૌદમામા ૧ શરીર પર્યાય લાભે.

इति पर्यायद्वार संपूर्ण

हवे शरीरद्वार कहे છે.

શરીર ૫ છે ૧ હદારિક શરીર ૨ વૈક્રિય શરીર
૩ આહારક શરીર ૪ તેજસ્ શરીર ૫ કારમણ શરીર
૫ પાંચમાથી ૧૨ માંમા ૫ પાંચ ગુણઠાળામા ૪
શરીર લાભે ૧ આહારક છોડી ૬ મામા ૫ શરી-
ર લાભે ૮ માથી ૧૪ માસુધી ૩ શરીર લાભે હદા-

રિક, તેજસ્, કારમણ

इति शरीरद्वार संपूर्ण.

हवे कषायद्वार कहे छे.

कषाय २५ छे तेना नाम अनुतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ ५ ४ प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ ५ ४ संजलन क्रोध, मान, माया, लोभ एवं १६ हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुर्गच्छा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद २५ ए २५ मांथी ११२ गुणठाणे २५ कषाय लाभे ३४ गुणठाणे २१ कषाय लाभे अनुतानीनी चोकडी छुटी गई ५ मामा १७ कषाय लाभे अप्रत्याख्यानी ४ छुटी ६।७।८ गुणठाणामा १३ कषाय लाभे चार प्रत्याख्यानी टली गया ९ मामा ७ कषाय लाभे संजलननी चोकडी अने ३ वेद ए ७ लाभे दशमामा १ संजलनना लोभ लाभे ११।१२।१३।१४ मे गुणठाणे कषाय नहीं. इति कषायद्वार संपूर्ण.

हवे संघयण द्वार कहे छे

संघयण ६ छे प्रथम गुणठाणाथी ७ मा सुधी ६ संघयण लाभे ८।९।१०।११। ए चारमा प्रथमना ती-

ન સંઘયણ લાભે ૧૨, ૧૩, ૧૪। એ ત્રણમાં એ ક્રમના
નારાવ સંઘયણ લાભે.

इति संघयणद्वार-संपूर्ण

हवे संठाण द्वार कहे छे

प्रथम गुणठाणाथी ૧૪ गुणठाणा, सु १ ६ रंठाग
लाभे

इति संठाणद्वार-संपूर्ण

हवे समोसरण द्वार कहे छे

समोसरण ४ छे १ क्रियावादी २ अक्रियावादी
३ अज्ञानवादी ४ विनयवादी प्रथम गुणठाणे समो-
सरण ३ लाभे क्रियावादी टळी गयुं २ जे गुणठाणे
१ क्रियावादी लाभे ३ गुणठाणे समोसरण २ लाभे
अज्ञानवादी विनयवादी २ चोथा गुणठाणाथी ૧૪
मा गुणठाणासुधी एक क्रियावादी लाभे

इति समोसरणद्वार-संपूर्ण.

हवे समुद्घातद्वार कहे छे.

समुद्घात ७ छे तेयांथी ૧૨, ૧૪, ૧૬ गुणठाणामा
समुद्घात ૧ पहली लाभे ३ जा गुणठाणामा समुद्-

ધાર ૨ પહેલી લામે ૬ ઠા ગુણઠાણામા સમુદ્ધાન
 ૬ લામે કેવલ સમુદ્ધાત વર્જિ ૭ મા ગુણઠાણાથી
 વારમા ગુણઠાણાસુધો સમુદ્ધાત નથી તેરમામા ૧ કે-
 વલી સમુદ્ધાત લામે ચૌદમા ગુણઠાણામા સમુદ્ધાત-
 નયો.

इति समुद्धातद्वार-संपूर्ण.

હવે અવગાહનાદ્વાર કહે છે

પેહેલા વીજા તીજા ચોથા ગુણઠાણાની અવગાહ-
 ના જઘન્ય અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ વત્કુષ્ઠ
 ૧૦૦૦ જોજન પાંચમા ગુણઠાણાની જઘન્ય અંગુલ-
 નો અસંખ્યાતમો ભાગ વત્કુષ્ઠ ૧૦૦૦ જોજન છઠા
 ગુણઠાણાથી ૧૪ મા ગુણઠાણાની જઘન્ય પૃથક્ક હાથની જ-
 કુષ્ઠ ૬૦૦ ધનુષ્યનો

इति अत्र श्रवणा-संपूर्ण.

હવે કાયદ્વાર કહે છે

કાય ૬ છે તે કહે છે પ્રથમ ગુણઠાણામા કાય
 ૬ લામે ૨ જા ગુણઠાણાથી ૧૪ ગુણઠાણા સુધી પ-
 કત્રસ કાય લામે

इति कायद्वार संपूर्ण

हवे जातिद्वार कहे छे.

जाति ५ छे प्रथम गुणठाणे जाति ५ लाभे २ गुणठाणे जाति ४ लाभे एकेंद्री छुटी गई ३ जा गुणठाणाथी १४ मा सुधी एक पंचेंद्री जाति लाभे.

इति जातिद्वार संपूर्ण.

हवे गतिद्वार कहेछे.

प्रथमना ४ गुणठाणा ९ रे गतिमा लाभे पांचगुं गुणठाणुं मनुष्य तिर्यंच ए वे गतिमा लाभे छठा गुणठाणाथी १४ गुणठाणा सुधी एक मनुष्य गतिमा लाभे पेहेला बीजा गुणठाणामा काल करेतो ४ गति मा जाय ३ जा गुणठाणामा काल नही करे चोथा गुणठाणामा काल करेतो मनुष्य देव ए वे गतिमा जाय पांचमा गुणठाणाथी ११ मा सुधी काल करे तो १ देवगतिमा जाय

इति गतिद्वार संपूर्ण

हवे दृष्टीद्वार कहे छे.

दृष्टि ३ छे प्रथम गुणठाणे एक मिथ्यादृष्टि लाभे २ जे गुणठाणे एक समकितदृष्टि लाभे ३ जे गुणठाणे एक समाभिध्यादृष्टि लाभे चोथाथी चौदमासुधी सम-

કિતદષ્ટિ લાભે

इति दष्टिद्वार संपूर्ण.

हवे समकित द्वार करे छे

સમકિત ૧ છે પેહલા અને ત્રીજા ગુણઠાણામા
સમકિત નથી વીજામા સાસ્વાદાન મમકિત લાભે
ચોથા ગુણઠાણાથી ૭ મા સુધી સમકિત ૪ લાભે
સાસ્વાન છોઢી આઠમા નવમા ગુણઠાણામા ૩ સમ-
કિત લાભે ઉપશમ ૧ ક્ષયાપગમ ૨ ક્ષાયક ૩ દ-
શમા અધારમમા ૨ સમકિત-લાભે ઉપશમ ૧ સા-
યક ૨ બારમા તેરમા ચૌદમા ગુણઠાણાથી અને વિદ્-
મા ક્ષાયક સમકિત લાભે

इति समकितद्वार संपूर्ण

हवे ज्ञानअज्ञानद्वार करे छे.

તેમાં જ્ઞાન ૧ અજ્ઞાન ૩ તે કરે છે પેહલા અને
ત્રીજા ગુણઠાણામા ૩ અજ્ઞાન લાભે વોજા, ચોથા અ-
ને પાંચમામા ૩ જ્ઞાન લાભે છઠા ગુણઠાણાથી ૧૨ મા
ગુણઠાણાસુધી ૪ જ્ઞાન લાભે. ૧૩, ૧૪ મા ગુણઠાણામા
એક કેવલજ્ઞાન લાભે.

इति ज्ञानअज्ञानद्वार संपूर्ण.

હવે દર્શનદ્વાર કહે છે

દર્શન ૪ છે પ્રથમ ગુણઠાણાથી ૧૨ ગુણઠાણા સુ-
ધી દર્શન ૩ લાભે ૧૩।૧૪ માંમા એક કેવલ દર્શન
લાભે

इति दर्शनद्वार संपूर्ण

હવે મન્યદ્વાર કહે છે

પેહેલા ગુણઠાણે મન્યઅમન્ય લાભે વીજાથી ૧૪ મા
સુધી એક મન્ય લાભે

इति मन्यद्वार संपूर्ण

હવે સંયમદ્વાર કહે છે

પ્રથમ ગુણઠાણાથી ૧ અસયમ લાભે ૫ મા ગુણ-
ઠાણામા સંજમાસંજમ લાભે ૬ ગુણઠાણાથી ૧૪ ગુણ
ઠાણાસુધી ૧ સંયમ લાભે

इति संयमद्वार संपूर्ण

હવે ચારિત્રદ્વાર કહે છે.

ચારિત્ર પાંચ પ્રકારનું છે પ્રથમ ગુણઠાણાથી ૫ મા
સુધી ચારિત્ર નથી ૬।૭ મા ગુણઠાણામા ૩ ચારિત્ર

लाभे सामायक १ छंदोपस्थापनीय २ परिहार विगु-
र्द्धा ३ आठमा नवमामा २ चारित्र लाभे सामायक
१ छंदोपस्थापनीय २ दसमा गुणठाणामामा १ सूक्ष्म
संपराग्य चारित्र लाभे ११।१२।१३।१४ ए चार गु-
णठाणामा १ यथाख्यात चारित्र लाभे
इति चारित्रद्वार संपूर्ण

हवे नियंठा द्वार कहै छै

नियठा ६ छै पुलाक १ वकुस २ परिसलेवणा ३
कषायकुशील ४ स्नातक १।१।१।१।६ ए पांचमा नि-
यंठा नथी ६।७ मा नियठा ४ प्रथमना लाभे ८।९ मा-
मा नियंठा ३ पेहेला छेडी लाभे १० मा गुणठाणा-
मा १ कुशील लाभे ११।१२ मा गुणठाणे नियंठा १
लाभे १३।१४ मामा एक स्नातक लाभे
इति नियठा द्वार संपूर्ण

हवे जीवमेदद्वार कहै छै

पेहेले गुणठाणे जीवना भेद १४ लाभे २ गुणठा-
ण जीवना भेद ६ लाभे ३ जे गुणठाणे जीवनो भेद
२ सत्री पंचोद्विपर्याप्ति चौथा गुणठाणामा जीवना भे-
द २ सत्री पंचोद्विना पर्याप्ति अपर्याप्तो पांचमा गुण-

ठाणाथी १४ मा गुणठाणासुधी जीवनो १ भेद संज्ञा
पं नैद्रि पर्यासी लाभे

इति भेदद्वार संपूर्ण

हवे गुणठाणा द्वार कहें छे

गुणठाणा १४ पोताना ठेकाणे जाणवा वाटवहेते
जीवमा गुणठाणा ३ जाणवा पेहेला बीजा चौथा ती-
र्थकर ४।५ गुणठाणा फरसे नही १।२।३।५।१।१ ती-
र्थकर गोत्र ४ गुणठाणे बांधे ४।१।६।७ ए चारमा
इति गुणठाणा द्वार संपूर्ण

हवे योगद्वार कहें छे

योग १५ छे १।२ गुणठाणे योग १३ लाभे आहा-
रक १ आहारक मिश्र २ टली गया त्रिजे गुणठाणे
योग १० लाभे चार मनना चार वचना १ उदात्ति-
क १ वैक्रीय एव १० चौथे गुणठाणे योग १३ ला-
भे आहारक १ आहारक मिश्र ए व छूटी गया पां-
चमे गुणठाणे योग १२ लाभे वे आहाराकना एक
कर्मणकाययोग एवं ३ छूटी गया छठे गुणठाणे यो-
ग १४ लाभे कर्मण टल्या सातमे गुणठाणे योग ११
लाभे ४ मनना ४ वचना १ उदात्तिक १ वैक्रीय

૧ આહારક એવં ૧૧ આઠમા ગુણઠાણાથી ૧૨ માં સુધી યોગ ૯ લાભે ૪ મનના ૪ વચનના ૧ ઉદારિક એવં ૯ તેરમે ગુણઠાણે યોગ ૭ લાભ ૨ મનના ૨ વચનના ૧ ઉદારિકમિશ્ર ૧ ઉદારિક ૧ કાર્મણ એવં ૭ ચૌદમે ગુણઠાણે યોગ નથી.

इति योगद्वार संपूर्ण

हवे उपयोग द्वार कहे छे

उपयोग ૧૨ છે ૫ જ્ઞાનના ૩ અજ્ઞાનના ૪ દર્શનના એવં ૧૨ છે તેમાંથી ૧૧ ગુણઠાણે ૬ ઉપયોગ લાભે ૩ અજ્ઞાન ૩ દર્શન ૫ ૬ લાભે ૪૧ માં ઉપયોગ ૬ લાભે ૩ જ્ઞાનના ૩ દર્શનના ૬ ગુણઠાણાથી ૧૨ સુધી ઉપયોગ ૭ લાભે ૪ જ્ઞાન ૩ દર્શન ૧૩ ૧૪ માંમા ઉપયોગ ૨ લાભે કેવલજ્ઞાન કેવલદર્શન

इति उपयोगद्वार संपूर्ण

हवे लेख्याद्वार कहे छे.

લેખ્યા ૬ છે પહેલા ગુણઠાણાથી ૬ સુધી લેખ્યા ૬ લાભે ૭ મે ગુણઠાણે લેખ્યા ઉપરની ૩ લાભે ૮ ગુણઠાણાથી ૧૩ માં સુધી લેખ્યા એક શુદ્ધ લાભે ૧૪

मामा लेख्या नयी.

इति लेख्याद्वार संपूर्ण.

हवे हेतुद्वार कहे छे

हेतु ५७ छे १ मिथ्यात्व १ आभिग्रहीत २ अनाभिग्रहीत ३ अभिनिवेशक ४ अनाभिनिवेशक ५ अनाभाग योग १५ अविरति १२ ते कहे छे ६ कायनी १ इंद्रिनी १ मननी एवं १२ सर्व ३२ कषाय १६ नोकषाय ९ एवं ५७ एमाथी १ गुणठाणे हेतु ०९ लाभे आहारक १ आहारक मिश्र २ छुट. २ जा गुणठाणे हेतु ५० लाभ ५ मिथ्यात्व टली गयुं ३ जामा हेतु ४४ लाभे ४ कषाय टले अनुतानवंधा १ उदारिकमिश्र १ वैक्रीयमिश्र १ कर्मण एवं ७ टली गया शे ४३ अने १ अणाभोग मिथ्यात्व लाभे ए ४४ लाभे चौथा गुणठाणामा ४६ हेतु लाभे १ उदारिकमिश्र १ वैक्रीयमिश्र १ कर्मण एमाथी १ मिथ्यात्व गयु शे ४६ लाभे पांवमा गुणठाणामा हेतु ४० लाभे अपत्याखानीनी चांकडी ४ त्रसनी अविरती १ कर्मणयोग ए ६ छुटी गया शे ४० रखा छटे गुणठाणे हेतु २७ लाभे ११ अविरती टली प्रत्याखानीनी चांकडी टली शे २५ आहारक १ आहारकमिश्र ए २ वध्या एव २७ लाभे ७ मे

गुणठाण हेतु २४ लाभे उदारिक वैकीय आहारकामि
 श्र टल्या ८ मे गुणठाणे हेतु २२ लाभे आहारक १
 वैकीय २ योग टल्या ९ मा गुणठाणामा हेतु १६
 लाभे हास्य १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५
 दुर्गच्छा ए ६ टल्या १० मामां हेतु १० लाभे ३ वेद
 टल्या संजलना क्रोध मान माया टल्या ११।१२ मा हे
 तु ९ लाभे १ संजलना लाभ टली गयो १३ मामां
 हेतु ७ लाभे २ मनना २ वचननो १ उदारिक १ उ-
 दारिकमिश्र १ कर्मण ए लाभे १४ मामां हेतु नयी-
 इति हेतुद्वा संपूर्ण

हवे मार्गणाद्वार कहे छे.

१ ला गुणठाणानी मार्गणा ४ त्रीजा, चौथा, पां-
 चमा, सातया गुणठाणामा जाय २ जा गुणठाणानी
 १ मार्गणा पेंहेले गुणठाणे जाय ३ जा गुणठाणानी ४
 मार्गणा ३ गुणठाणानो निकल्यो १।४।५।७ गुणठाणे
 जाय चौथा गुणठाणानी ५ मार्गणा, १।२।३।५।७ गु-
 णठाणे जाय ५ मा गुणठाणानी ५ मार्गणा १।२।३।४
 ७. छठा गुणठाणानी ६ मार्गणा १।२।३।४।५।७ गुण-
 ठाणे जाय ७ मा गुणठाणानी ३ मार्गणा ६।८ मामा
 जाय काल करेतो ४ मा जाय ८ मा गुणठाणानी
 ३ मार्गणा ७।९ मामा जाय काल करेतो ४ गुणठाणे

जाय ९ मा गुणठाणाना ३ मार्गणा ८।१० मामा
जाय काल करेतो ४ गुणठाणामा जाय १० मे गुण-
ठाणे ४ मार्गणा ९।११।१२ मा जाय काल करेतो ४
थे गुणठाणे जय ११ मे गुणठाणे २ मार्गणा १०
मा गुणठाणामा जाय काल करेतो ४ मा जाय १२
मा गुणठाणानी १ मार्गणा १३ मे गुणठाणे जाय १३
मा गुणठाणानी १ मार्गणा १४ मे गुणठाणे जाय १४
मा गुणठाणानी मार्गणा नथी.

इति मार्गणाद्वार सपूर्ण.

हवे ध्यानद्वार कहे छे

ध्यान चार छे १।२।३ गुणठाणामा ध्यान २ ला-
भे आर्ति १ रौद्र २ चोथा गुणठामा ध्यान ३ लाभे
आर्ति १ रौद्र २ धर्म ३ पांचमे गुणठाणे ध्यान ३
पूर्वोक्त जाणवा ६ गुणठाणे ध्यान २ लाभे आर्ति १
धर्म २ सातमे गुणठाणे १ धर्मध्यान लाभे ८ माथी
१४ सुधी एक शुद्धध्यान लाभे

इति ध्यानद्वार सपूर्ण

हवे दंडकद्वार कहे छे.

दंडक २४ छे पेहेले गुणठाणे दंडक २४ लाभे
वीजे गुणठाणे दंडक १९ लाभे ८ धावर दल्या ३।४

गुणठाणामा दडक १६ लाभे ५ थावर ३ विगलेंद्री
 टली गया पांचमे गुणठाणे दडक २ लाभे मनुष्य १
 तिर्यच २ छठा गुणठाणी १४ मा सुधी १ मनुष्यउं
 दडक लाभे

इति दंडकद्वार संपूर्ण.

जीवयोनी द्वार कहे छे

चोरासी लाख जीवयोनी छे १ गुणठागे ८४ ला
 ख जावायोनी लाभे २ गुणठाणे ३२ लाख जावा-
 योनी लाभे ५ थावरनी ५२ लाख जीवायोनी टली
 ३ गुणठाण १६ लाख जीवायोनी लाभे ५ थावर-
 नी ५२ लाख जीवायोनी टली ३ गुणठाणे २६ ला-
 ख जीवायोनी लाभे ५ थावरनी ५२ लाख ३ वि-
 गलेंद्रीनी ६ लाख एवं ५८ लाख टली ४ गुणठाणे
 २६ लाख जीवायोनी लाभे ३ जा गुणठागा प्रमाणे
 जागबु ५ मा गुणठाग १८ लाख जीवायोनी लाभे
 १४ लाख मनुष्य ४ लाख तिर्यच एम १८ लाख
 जागवा ६ गुणठाणायी १४ मा गुणठाणा सुधी चौद
 लाख जीवायोनी मनुष्यनी जाणवी

इति जीवायोनी द्वार संपूर्ण

हवे सांतरनिरंतर द्वार कहे छे

१४ गुणठाणानुं आंतर पड़े ते कहे छे पेहेले गुणठा
णे आंतरो जघन्य अंतरमुहूर्त १ उत्कृष्ट ६६ सागरो
पम झाड़ेरो पड़े २ जे गुणठाणाथी ११ मा गुणठाणा-
सुधी आंतरो पड़ेतो जघन्य अंतरमुहूर्त उत्कृष्ट देश
उणो अर्ध पुद्गल १२।१३।१४ मे गुणठाणे आंतरा न
थी निरंतर केहेता आंतर नथी जेटली पोतपोताना
गुणठाणानी स्थिती होय तेंदला कालसुधी रहे.

इति सांतर निरंतर द्वार संपूर्ण

हवे अल्पावहुत्वद्वार कहे छे.

सर्व थोडा ११ मा गुणठागावाला ते उपशम
श्रेणिवाला जघन्य ५४ जीव लाभे उत्कृष्ट २०० थी
९९ मा जीव लाभे तेहथकी १२ मा १४ मा गुणठा-
णानो धणी माहोमाहेतुला विशेषसाहियातुला ते क्षपक
श्रेणिनो धणी जघन्य १०८ जीव लाभे उत्कृष्ट ५००
थी ९८ मा जीव लाभे तेहथकी ८।९।१० मा गुणठा
णानो धणी माहेतुला ने विशेषसाहिया ते वकुसने पडि-
सेवणा धणी पृथक्पणें साधु लाभे तेमनाथी १३ मा
गुणठावाला विशेषसाहिया ते स्नातकना धणी पृथक्
कोड कवली लाभे तेमनाथी ७ मा गुणठाणावाला
संख्यात गुणे ते पृथक्पणें कोड साधु लाभे तेमनाथी

छठा गुणठाणावाला संख्यात गुणे ते सामायिक छेदो-
पस्थापनीय चारित्रवाला पृथक् १००० कोड साधु
लाभे तेह्यकी ५ मा गुणठाणावाला असंख्यात गुणा
तिर्यच आश्रयी जाणवा तेह्यकी बीजा गुणठाणाना
असंख्यात गुणाने विगलेंद्री आश्रयी जाणवा तेमना
थी त्रीजा गुणठाणानो घर्ण असंख्यात गुणाने चार
गंनि आश्रयी जाणवा तेमनाथी चौथा गुणठाणावाला
असंख्यात गुणा ते समहृष्टी आश्रयी जाणवा तेमना
थी प्रथम गुणठाणावाला अनंत गुणा ते निगोद आ-
श्रयी जाणवा.

इति अल्पाबहुत्व द्वार संपूर्ण

समाप्तः गुणठाणाद्वार बालाबोधः

श्री समेत शिखर दर्शन.

[तुम चिद्जनचंद्र आनंदलाल-ए देशो.]

नमूं समेत शिखर गिरिराजलाळ ।

तुम दर्शन आनंदकारी ॥ नमूं० ॥ १ ॥

वालपणाथी अद्भुत ज.नी ॥

इच्छा दर्शन केरी ॥ नमूं० ॥ १ ॥

आज सफलता नयनयुगलनी ॥

पाप असंख्य निवारी ॥ नमूं० ॥ २ ॥

लोहे हेमता पारस-संगे ॥

तिम हुं धन्य वन्योरी ॥ नमूं० ॥ ३ ॥

अनुपम भाव दशा मुज प्रगटी ॥

बंध तुझ्या दु.खकारी ॥ नमूं० ॥ ४ ॥

ज्ञान दिवाकर प्रगट्यो अनुपम ॥

मिथ्याबंधःकार हंयारी ॥ नमूं० ॥ ५ ॥

सामळिया श्री पास जिनेश्वर ॥

अद्भुत रूप निहारी ॥ नमूं० ॥ ६ ॥

सादि अनंत स्थिती इहां पान्या ॥

भव सततिने निवारी ॥ नमूं० ॥ ७ ॥

विंशति तीर्थकरपद पूनित ॥

रजकण मुज शिरधारी ॥ नमूं० ॥ ८ ॥

सोहं-भाव प्रगट थयो सुखकर ॥

बाल नमो चित्तधारी ॥ नमु० ॥ ९ ॥

[सिद्ध भवल आनंदा रे जोतीने—]

गिरि समेतगिखरजीरे ॥ जोवा चित्त धरो ॥ घृ० ॥
 तारो तारो जिनंदजीरे ॥ भवभय दूर करो ॥ १ ॥
 मुज पडरि नमावे रे ॥ प्रभुजी वाह धरो ॥ २ ॥
 हरी सकल उपाधी रे ॥ तन्मय चित्त करो ॥ ३ ॥
 ज्योति मिद्ध प्रकाशी रे ॥ ते जुज आत्म धरो ॥ ४ ॥
 भावे भेटि गिखरजीरे ॥ मुक्ति सहज धरो ॥ ५ ॥
 वीस तीर्थपती इहारे ॥ सिव्या धन्य नरो ॥ ६ ॥
 केई कोडि पण मुनी रे ॥ तस पदभक्ति धरो ॥ ७ ॥
 गिरी भंटी आनंद रे ॥ सह संसार धरो ॥ ८ ॥
 रिद्धि आत्म करीर ॥ प्रगटे चित्तधरो ॥ ९ ॥
 बाल कहे गुण गाई रे ॥ शिववधु गांध्र धरो ॥ १० ॥



